



# सोलहवीं सदी में राजस्थान

अथवा

मुंशी देवीप्रसाद कृत 'ऐतिहासिक चरित्र-माला'

मनोहरसिंह राणावत

© मनोहरसिंह राणावत

मूल्य— पच्चास रुपये

प्रथम संस्करण - १९७७ ई०

प्रकाशक —

मनोहर प्रकाशन

C/o हाथ करघा वस्त्र से टरे

मन्दार गेट व अदर

जजमेर (राजस्थान)

मुद्रण

शर्मा प्रिन्टर्स पुराना मण्ठा अजमेर

उसके अन्तर्गत समारोह के  
सुअवसर पर  
हरदीघाटी के युद्ध की स्मृति को  
समर्पित

# विषय-सूची

वक्तव्य—

महाराज कुमार डा० रघुवीरसिंह

अपनी बात—

मनोहरसिंह राणावत

## मु शो देवीप्रसाद कृत 'ऐतिहासिक चरित्र माला'

मेवाड—

१—९१

१ महाराणा सागा—

१—१६

२ महाराणा रतनसिंह—

१७—२४

३ महाराणा बिजमाजीत—

२५—३०

४ खजाम बनवीर—

३१—३३

५ महाराणा उदयसिंह—

३४—५७

६ महाराणा प्रताप—

५८—९१

घाम्बेर—

९२—१३०

१ राजा पृथ्वाराज घाम्बेर—

९२—९७

२ राजा पूरणमल बछवाहा—

९८—९९

३ राजा भारमल बछवाहा—

१००—१०७

४ राजा भगवतदास बछवाहा—

१०८—१२३

५ राजा मानसिंह—

१२४—१३०

बीकानेर—

१३१—१५०

१ राव लूणकरण—

१३१—१३८

२ राव जतसी—

१३९—१५०

मारवाड—

१५१—१५४

राव मालदेव—

१५१—१५४

परिशिष्ट—हल्दीघाटी के युद्ध की सही तिथि-तारीख—

१५५—१५९

ने० मनोहरसिंह राणावत

विशिष्ट आधार-ग्रंथ सूची और मकेत परिचय—

१६०—१६२

शुद्धि-पत्र—

१६३—१६४

## चक्रवर्त्य

राजस्थान के विभिन्न राज्यों के कई एक सुनान धीरवीर राजाओं का जो जावनियाँ मुग़ल देवीप्रसाद ने लिख कर प्रकाशित की थी, उनके मध्य में उसने स्वयं विन्यासित किया कि ये जीवन चरित्र बड़ी मेहनत और तहकीकत से हिन्दु पारसी और अंग्रेजी इतिहास ग्रंथों की मदद लेकर लिखे गये थे। स्पष्टतया उसने राजस्थानी मन्त्र उसे मुलभ विभिन्न वंशावलिओं अथवा खानों का भा दखभाल कर उनका भरसक उपयोग किया था। परन्तु मुग़ल देवीप्रसाद मूलतः पारसी का अधिकारी विद्वान् था अतः राजस्थान के अधिराज इतिहासकारों ने पारसी ग्रंथों में प्राप्य नामों के मन्त्रना के रूप में ही उनकी रचनाओं का प्रायः उपयोग किया है। उनकी निष्ठा में जावनियाँ में मुलभ इतर जानकारी की भार तब समुचित ध्यान नही दिया गया। यही नहीं बल्कि निष्ठा में छोटी-छोटी जावनियाँ अधिकतर उपलब्ध हो गयी हैं। यह बताना कोई अत्युक्ति नहीं होगा कि आज के घनरा वरिष्ठ इतिहासकार उनके बारे में मन्त्रना अतन्त्र ही हैं।

य जीवनिया मन् १८८९ ई० स ही प्रकाशित होन लगा थी । चित्रमाला के अतगत प्रत्येक शासक के सबसभ म अलग अलग एक छोटी पुस्तिका प्रकाशित की जान लगी जिसम उस शासक के रखाचित्र के साथ उसकी यथासंभव संक्षिप्त प्रामाणिक जीवनी होनी थी । मन् १८९० ई० म इन जीवनिया का प्रकाशन प्रसिद्ध चित्रावली नामक भागिक के अन्तर्गत होन लगा । प्रत्येक एक म ३२ स ४० पृष्ठ हात थे । जीवन चरित्र क्रमशः छपन जात थे जो उत्त भासिन प्रकाशन के ग्राहक का पहुँच जात थे । उह बाद म अलग-अलग जीवन चरित्र अथवा जीवन चरित्र संग्रह के रूप म सिलवा लिया जाना था । विभिन्न जीवन-चरित्र स्फुट प्रकाशन के रूप म भा बाद म मुलभ हात थे । यह कम लगभग सन् १८९४ ई० तक चचना रहा । इन जीवन चरित्रो का पहिला संस्करण प्रायः ५०० प्रतिमा का छयता था । इनम म किती का भी दूसरा संस्करण तय छापा गया हा एसा काँ जानकारी नही मिलती है । इन प्रकाशनों के कई ता कापि या स्थायी ग्राहक होत थे । तब एक आन स चार आन तक के मूल्य के ये जीवन-चरित्र कुछ ही वर्षों म विक्रि जान के कारण तदनन्तर अप्राप्य हा गय हाग ।

या मारवाड के राजाभा की दरात म मुजा दवाप्रमाण न राव टाला तक के मारवाड के प्रारम्भिक शासक के विवरण संकलित कर दिन थे । इसके अनिरिक्त मारवाड के गव मालदेव और जाधपुर के बडे महाराजा जसवन्तसिंह के जीवन चरित्र उमन प्रकाशित करवाय । धामर (जधपुर) के राजा पृथ्वीराज स भगवतदास तक का इतिहास और धामर के महाराज मानसिंह का जीवन-चरित्र भा तब छपवाए थे । मवाड के महाराणा सागा स लेकर महाराणा प्रताप तक के सब ही शासक की जीवनियाँ भा इसी दम म प्रकाशित की गई । बीकानेर राजधरान के भा राव बीका से लेकर राव कल्याणमल तक के सब ही शासक के जीवन चरित्र छपवाए गय । राजस्थान के अरु किसी राज्य के शासको के और भी कई जीवन चरित्र मुजी दवाप्रमाण न प्रकाशित किय हा तो उनके बार म काँ जानकारी मुनभ नहा हुआ है ।

इन पिछले ८५ या अधिक वर्षों म राजस्थान म ऐतिहासिक शासक का बहुत काम हुआ है तथा अत्यधिक नई महत्वपूर्ण प्रामाणिक साधन सामग्री

प्रकाश में आई है। तथापि मुंशी देवीप्रसाद द्वारा लिखे गये उन ऐतिहासिक जी-न-चरित्रों का अपना महत्त्व है। तब उसे व्यक्तिगत रूपसे ज्ञात या सहज मुलभ जानकारी के सदृश में व भी अब अध्ययनीय आध्यात्म-सामग्री बन गये हैं। अतः यथा माध्य उन सबको संग्रहीत कर उनका सुसंपादित संस्करण प्रकाशित करने की योजना को कार्यान्वित करने में मैं पूरा सहयोग भी दिया।

आज मुंशी देवीप्रसाद रचित उन जीवनियाँ व उस प्रथम और संभवतः एक मात्र संस्करण की प्रतियाँ इतनी दुर्लभ हो गई हैं कि निरंतर खोज और भरोसा प्रयत्न करने पर भी कुछ जीवनियाँ अब तक प्राप्त नहीं हो पाई हैं। उनको प्राप्त करने तक उनमें से अधिकांश जीवन चरित्रों के इस संग्रह का प्रकाशन स्थगित कर देना किसी प्रकार उचित नहीं जान पड़ा। अतः जो भी जीवनियाँ मिल सकी हैं उन्हें ही इस संग्रह में प्रकाशित किया जा रहा है।

इस संग्रह के प्रकाशन से कई एक महत्त्वपूर्ण परंतु अब तक अज्ञात पहलुओं पर अवश्य ही कुछ उपयोगी प्रकाश पड़ सकेगा ऐसा विश्वास है। डा० गौरीशंकर हीराचंद ओभा के लेख कछवाहा के इतिहास में एक उल्लेख का पढ़ने से यह अनुमान होता है कि मुंशी देवीप्रसाद कृत 'राजा भारमल' में दी गई जानकारी की ओर उनका ध्यान नहीं गया था। आईन-इ अकबरी में राजा भगवतदाम (अ० अ० १ पृ० ३५३) के साथ ही बाका कछवाहा' (अ० अ० १ पृ० ५५५) का भी उल्लेख है। अकबर नामा (अ० अ०, ३, पृ० ५१९) में बाबुल में उसकी कायवाही का विवरण लिखते हुए उसका भी नाम भगवानदाम ही दिया है। जब निर्विवाद रूप से यह स्पष्ट हो गया है कि 'आम्बेर का राजा भगवतदाम' और लवाण का राजा भगवान' दाम एक ही बाप के दो सगे बेटे संवत् ६० विभिन्न व्यक्तित्व तब यह अत्यावश्यक हो गया है कि वतनी की विभिन्नता के आधार पर अकबर नामा के मूल फारसी पाठ का सहायता से उन दोनों व्यक्तियों की विभिन्न जीवनियाँ के अलग-अलग व्यौर तैयार किए जाएँ तथा अन्य आधार सामग्री का महायत्ना से नवनवीला के द्वारा फारसी वतनी की भूलों को भी सुधारण का प्रयत्न किया जाव। इसमें के आधार पर नगसी की स्थात (प्रतिष्ठान० १ पृ० २९७) में दी गई दूसरी कथावली के विवरण में एक मात्र मूल राजा भगवानदाम



भाबर टीकाई' को भी सुधारा जा सकता है और पश्चात्कालीन जोधपुर की ख्यात में हुई ऐसी भूलों को सुधार दिया जाकर उसे पूर्णतया प्रामाणिक बनाया जाना चाहिये ।

मेरा विश्वास है कि मुन्शी देवीप्रसाद वृत्त ऐतिहासिक जीवन चरित्र संग्रह का यह सशोधित सुसम्पादित संस्करण राजस्थान के इतिहास पर शोध करने वालों को उपयोगी और सहायक प्रमाणित होगा । भरसक प्रयत्न किया जा रहा है कि मुन्शी देवीप्रसाद वृत्त बाका रहे ऐसे ही ऐतिहासिक जीवन-चरित्रों को प्राप्त कर उनका भी सशोधित सुसम्पादित संग्रह इसा के दूसरे भाग के रूप में प्रकाशित किया जावे । देख ! कब तक बह सुयाग आता है । पुरानी पुस्तकों के जिन संग्रहों का पाम उनकी प्रतिपा है, क्या वे इस सदन में हमें सहयोग देने की कृपा करेंगे ?

रघुबीर निवास"

सातामऊ (मालवा)

जून १८, १९७७ ई०

रघुबीरसिंह

## अपनी बात

मुंशी देवीप्रसाद की विस्तृत जीवनी उनके लिखे 'शाहजहानामा' के नय संस्करण में दी जा चुकी है।<sup>१</sup> अतः यहाँ उसका संक्षिप्त उल्लेख करना ही पर्याप्त होगा। मुंशी देवीप्रसाद का जन्म सन् १८४८ ई० में हुआ था। सन् १८७९ ई० में जोधपुर राज्य की सेवा में नियुक्त हुआ और तत्पश्चात् जीवन पणत जोधपुर में ही रहा था। वह अरबी फारसी और उर्दू का ज्ञाता था। राजस्थानी और हिन्दी भी जानता था। उसने अपने जीवन के अन्तिम वर्ष साहित्य-साधना में ही बिताए थे। भारत और राजस्थान के इतिहास संबंधी लगभग पचास ग्रंथ और कई सौ लख उसने लिखे थे। उसने कई फारसी ग्रंथों का तब प्रचलित हिन्दी में अनुवाद कर हुमायूँनामा, शाहजहानामा, औरंगजेबनामा आदि ग्रंथों की रचना कर मुगल बादशाहों

---

१ 'शाहजहानामा डा० रघुवीरसिंह और मनोहरसिंह राणावत द्वारा सम्पादित पृ० ७१२ प्रकाशक मकमिलन कंपनी आफ इण्डिया लिमिटेड १९७५ ई०।

के जीवन चरित्रों पर पूरा प्रकाश डालने का प्रयत्न किया। परन्तु राजस्थान के इतिहास के प्रति उसकी विशेष रुचि थी एवं मुगल सम्राटों के इन जीवन-चरित्रों में भी उसने राजस्थान संबंधी जानकारी को धार विशेष ध्यान दिया। साथ ही उसने राजस्थान संबंधी कई पुस्तकें और राजपूत राजाओं के जीवन चरित्र संबंधी लेख लिख कर प्रकाशित करवाये उसके द्वारा रचित थे। एवं विभिन्न राजपूत शासकों के जीवन चरित्र संबंधी इन विवरणों को गौरीशंकर हीराचंद ओझा से लेकर अब तक राजस्थान इतिहास पर शोध करने वाले प्रायः सब ही सहायक आधार-सामग्री के रूप में उनका उपयोग करते रहे हैं।

स्नातकोत्तर परीक्षा देने के बाद जून १९७१ ई० में ही सीतामऊ आकर महाराज कुमार झा० रघुबीरसिंह के विशाल और बहुमूल्य ग्रंथालय और रघुबीर लायब्रेरी सीतामऊ में पर्याप्त समय तक रह कर मुंशी देवीप्रसाद के थे। एवं लेखों का अध्ययन करने का मौकाम प्राप्त हुआ। उस समय ही मुंशी देवीप्रसाद द्वारा रचित विभिन्न उपलब्ध थे एवं लेखों का अध्ययन कर उनका उपादयता को जाना था। तभी यह निश्चय किया था कि उन विद्वानों की अप्राप्त और महत्वपूर्ण कृतियों का पुनः विद्वानों और इतिहास प्रेमियों के सम्मुख प्रस्तुत करना चाहिये।

परन्तु कई एक कारणों से तत्काल मुंशी देवीप्रसाद के थे लेखों के संग्रह संपदन का काम हाथ में नहीं ले सका। १९७३-७४ ई० में उसका कष्ट करने का अवसर प्राप्त हुआ और सबप्रथम मध्यकालीन भारत का इतिहास की एक बहुत बड़ी कमी की पूर्ति करने के लिए मुंशी देवीप्रसाद कृत शाहजहानाबाद के संपादन का काम हाथ में लिया। तदनंतर परिस्थितिबश वह काम आगे नहीं बढ़ सका था। मार्च १९७५ में यहाँ श्री नरनागर शर्मा मस्थान सीतामऊ में भरी नियुक्ति हो गयी। इतिहास के प्रति जीवन समर्पित करने और अपने गुरु का आज्ञा का पालन कर जब सस्थान में आ गया तब उस अपूर्ण कार्य का पूरा करने का निश्चय किया। मुंशी देवीप्रसाद कृत राजस्थान के विभिन्न राजाओं के संक्षिप्त जीवन चरित्रों को संग्रहीत कर उनका संपादन संस्करण तैयार करने में जुट गया।

मुंशी देवीप्रसाद द्वारा लिखित राजस्थान के अधिकांश राजाओं के

जीवन-चरित्र तो मुझे श्री रघुवीर लायब्रेरी (श्री नटनागर शोध संस्थान) में ही उपलब्ध हो गया था। परन्तु मैं यथासंभव ऐसी सभी जीवनियाँ का संग्रहान करना चाहता था। राजस्थानी शोध-संस्थान, चौपामनी, के सहायक निदेशक श्री सोभाग्यसिंह शेखावत के पास संग्रहीत बख्खाहा राजाओं के जीवन चरित्र भी प्राप्त हो गया। महाराजा जसवतसिंह का जीवन-चरित्र के कुछ पृष्ठ सुरक्षित नहीं होने के कारण उसे इस संग्रह में सम्मिलित नहीं किया जा सका। इसी प्रकार कुछ अन्य राजाओं के जीवन-चरित्र भी प्राप्त नहीं हो सका क्योंकि उनको भी आवश्यक ही इसमें सम्मिलित किया जाता। परन्तु अब भी प्रयत्नशील हूँ कि उन रहे-मड़े जीवन-चरित्रों को भी प्राप्त कर लिया जावे जिससे वे भी पाठकों को सुलभ हो सकें।

मुझे देवाप्रसाद ने राजस्थान के अनेक वीरों की जीवनियाँ सक्षिप्त किंतु यथासंभव प्रामाणिक हिन्दी उर्दू में लिख कर ईसा की १९ वीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में प्रकाशित की थी। तब तक राजस्थान में अवश्य ही हिन्दी की स्वतंत्र सुनिश्चित शैली का पूरा विकास नहीं हुआ था। अतः उसकी लेखन शैली में फारसी-उर्दू का ही सर्वाधिक प्रभाव था। उसकी देवनागरी में लिखा हिन्दी में भी तब प्रचलित फारसी उर्दू शब्दों का ही बाहुल्य है। आज के पाठकों को यह मिश्रण अटपटा ही जान पड़ता है। अतः इस संशोधित संस्करण का तयार करते समय इस बात को ध्यान में रख कर भाषा का मूल और सुबोध बनाने के लिये अनेक शब्दों का फेर-बदल कर दिया गया है। मुझे देवाप्रसाद ने अनेक स्थानों पर फारसी शब्दों में दी गई हिजरी तारीखों का विक्रमा मन्वत् और तिथियों में परिवर्तित कर उन्हें भी लिख दिया है जो चङ्क पचास के आधार पर बनाई गई जमी के आधार पर ही थी। अतः उन तिथियों में कही कही पर एक दो दिन का अन्तर पड़ जाता है। इण्डियन एफीमरिज के आधार पर उक्त अन्तर का भी प्रस्तुत संस्करण में दूर कर दिया गया है। साथ ही विक्रमा मन्वत् और तिथियों के सही इसका सन्, तारीख और वार भी दे दिए गए हैं। तब तक ऐतिहासिक शोध में समुचित प्रगति नहीं हुई थी जिससे मुझे देवाप्रसाद ने यथा कदा अमंग्य और अप्रामाणिक घटनाओं को भी लिख दिया है अतः उनके संबंध में पाद टिप्पणियाँ लेकर उक्त पुस्तक को यथासंभव प्रामाणिक बना देने का प्रयत्न किया गया है। इनके अतिरिक्त हल्कासादी के युद्ध की सही तारीख के संबंध में अब तक चर्चा या यह विवाद का समाप्त करने के लिये

अपने शोध लघु 'हल्दीघाटा के युद्ध की मही तिथि तारीख को परिशिष्ट में दे दिया गया है।

यह सम्पूर्ण काय महाराज कुमार डा० रघुबीरसिंह की देख रेख में ही पूरा हुआ है। अतः इसका पूरा श्रेय उन्हें ही है। माय ही डा० शिवदत्तगान वारहठ के प्रति भी मैं विशेष कृतज्ञ हूँ। संशोधित सस्वरण को तयार करने में सहयोगी के रूप में उन्होंने मुझे पूरा पूरा सहयोग दिया है। विक्रम मन्वत् और नियमों को ईसवी सन् और तारीखा में परिवर्तित करने तथा भाषा को सरल और सुबोध बनाने का भी अधिकृत परिश्रमपूर्ण काय उन्होंने दिया है। अतः इस पुस्तक की प्रम कापी जल्दी तयार कर पाया। श्री नन्दागढ़ शोध-संस्थान के वरिष्ठ शोध महायन्त्र था सुरेशचन्द्र पत्रिया ने भी प्रेस कापी तयार करने में सहयोग दिया है। अतः उनका भी आभारी हूँ। इस पुस्तक को इस सुचारु रूप में छाप देने के लिये मैं श्री शर्मा प्रिंटर्स मजमूर, का भी कृतज्ञ हूँ।

यदि इस संग्रह में यह क प्रकाशन से राजस्थान के इतिहास संबंधी अध्ययन और शोध में यत्किंचित् का महयोग दे पाया तो मैं अपना परिश्रम मफल समझूंगा।

रघुबीर मिश्रा

सीतामऊ (मालवा)

सू. १८, १९७७ ई०

मनोहरसिंह राणावत

## सेवाड

### (१) महाराणा सागा<sup>१</sup>

महाराणा जयमल न तीन उटे पृथ्वीगज जयमल और सप्रामसिंह (सागा) थे। इनके एक चचेरा भाई सूरजमल था। उसको महाराणा न निकाल दिया था। और वह पहाड़ा में रह कर सूत्रमार करता था। गुजरात में एक औरत, जो बड़ी वरामान बानी थी, मराजा की माया के दिय जा रही थी। उसने पास अच्छी अच्छी घाड़िया थी। उन घाड़िया का कुरान के दिय सूरजमल न भाना का भेज परन्तु व अघ न गय और जब उहने क्षमा माचना की ता उनकी आँखें पुन खुल गयी। यह बात अविनय्य मयत्र फन गया। तब एक धार स सूरजमल और दूसरा धार मे व ताना भाई (पृथ्वीराज जयमल और सप्रामसिंह) उमके पन्ननाय गय। उमन कहा प्रामा बठा। सप्रामसिंह तो हाथ जाई कर गलीच पर उसकी गद्दा व पास गय। सूरजमल जजिम व कितार पर बठा। पृथ्वीगज और जयमल घाटा

---

१. सेवाड व सुप्रसिद्ध प्रगल्भता महाराणा श्री सागा जी का जीवन चरित्र ।  
मदन १०५० वि० ।

और रथा का देखन उठ कर चल गय । उम औरत न उन सर क निय गाना तैयार करवाया । जब खान का धान आया तो चारा चाचा भतीज गान का बटे । सन न शामिल थाया । वहा स खाना हान समय उसन मूरजमन म कहा कि— तुम चाचा भतीज आपस म भगडाथ । सागा भवाड का मानिक हागा, क्याकि यह विद्यान पर गद्दी के सामन बठा रहा । गृध्वीगज और जयमल कु वरपद म हो मर जावसे क्याकि व उठ गय थ और मूरजमल जाजम के बिनार पर बठा अत व्ह मेवाड के एव बोन पर रहगा ।

यह कह कर वह ता चली गई । उसन जान क बान बहा पर भाइया म राज्य के लिये भगडा प्रारम्भ हा गया । इस कारण सागा का बतन छाडना पडा । वह गुजरात और प्राम्बर उगरह म बहुत त्तिन तर धमता फिरता रहा और इस हालत म जमान का हान खूब गौर म दखा और अनुभव भी प्राप्त किया । मेवाड म उनके लाना भाई भगडा म मार गय । सूरजमल ने मेवाड के पूर्वी बिनार पर दवलिया नामक गाव बसा कर अपना राज्य अलग स्थापित किया जो अब दवलिया-प्रतापग<sup>१</sup> क नाम म प्रसिद्ध है ।

सागा यह खबर सुन कर चित्तौड म वापस लौट आया । महाराणा रायमल न उस अपना उत्तराधिनारी थापित कर दिया ।

सन्वत् १५६५<sup>२</sup> म महाराणा रायमल की मृत्यु हो गया । उनकी मृत्यु क बान सागा चित्तौड की गद्दी पर बठा । उसके समय म मेवाड का राज्य खूब चमका और दरबार की शोभा बनी । कविया न कहा है कि उम समय म चित्तौड अतुल प्रताप और उग्र तज का एव ऊचा शिखर था जिसका शोभायमान कलश हिंदूपति महाराणा सागा था ।

उमके समय म हिंदुस्थान म अनक छाने-छोटे राज्य स्थापित हा गय थ । अत अलग अलग हाकिम लाग बानशाह बन बटे थ । एस बानशाह गुजरात

१ सूरजमल - उसके प्रपौत्र बीका न ही आग बन कर दवलिया (प्रतापग) राज्य की स्थापना की थी । (म०)।

२ नएसा क अनुमार ज्येष्ठ सुनि ५ १५६६ वि० तनुमार म २४ १६०९ इ । (स०)।

आर मालवा के, भवाड के पडास म भी थे । वे मेवाड को जीतने के लिये एक भी हो गये थे तो भी मेवाड का कुछ नहीं कर सकत थे, क्याकि महाराणा पूर्ण व्यवस्था के साथ हर समय तैयार रहता था । कहते हैं कि महाराणा ने १८ नडाइया म निनी मालवा और गुजरात की सेना पर फन्ह पायी थी ।

उस वक्त मदनीराय मानवा के बादशाह महमूद खिलजी का तजीर था । उमने बडे परिश्रम स अपन स्वामी का अधिकार सम्पूर्ण राज्य म जमाया था । परंतु महमूद खिलजी धार्मिक कारण स ईर्ष्या रखता था और उसक बढत हुए प्रभाव का समाप्त करना चाहता था । अतः सम्बत् १५७४ म वह माह म अकेला भाग कर गुजरात के शासक मुर्तान मुजफ्फर के पास गया और उसकी फौज मेदनीराय पर नडा लाया । मदनीराय ने महाराणा के पास आकर सहायता मागा । महाराणा मदनीराय की महायताय सारंगपुर तक पहुँचा । वहा माह का किलेदार हमकरण<sup>१</sup> मुजफ्फर से लडाई हार कर आया । महाराणा उस समय ता दोना का साथ लेकर पुन चित्तौड लौट आया । बाद म मना भेज कर मेदनीराय का चदरी और हमकरण को गागरान क किता पर अधिकार निना लिया । इस पर महमूद खिलजी न अपनी और गुजरात की सेना साथ लेकर उसा कप गागरान और चदरी पर चला कर दी । हमकरण पराजित होकर बदी बना लिया गया और बाद म उसकी हत्या कर दी गयी । मदनीराय न भेंट-उपहार भज कर महाराणा का अपना महायताय धामनित किया । महमूद खिलजी न महाराणा का मुकाबला किया और कुछ हा समय म उमने (महमूद खिलजी) ३२ मरतार और बहुत म आदमी और ५०० गुजगता अपने अधिकारिया क साथ मार गय । महमूद खिलजी घायन हो गया आर बदी बना लिया गया । महाराणा न दया कर उसका सम्मान के साथ रखा और जहमा का इनाज करवाया । जब यह समा हो गया ता एक हजार ध्यति के साथ उसका पुन माद भज लिया । परंतु उमने दाता हाजमशाह की जडाऊ पटी और टोपी जो बहूमूल्य थी वापस नहीं लौटायी । एक साथ हो रणभार गागरान काउपी आर भेलमा के किने भी ले लिय । इसी तरह अजमेर

१ 'मारात इ सिक्करा म भीमवरण' लिखा है । (म०)।

२ १५७९ ई० की घटना ह । (म०)।



और बाबू में भी अपने धान बटा कर आम्बेर मागवाड बूंदी और ग्वानियर के राजाओं को अपने प्रभाव में किया।

संवत् १५७५ (१५१९ ई०) में महाराणा ने इंडर क राव गयमल की सहायताय, जिसको गुजरात के सुनतान मुजफ्फर ने निवाल दिया था गुजरात पर चढ़ाई की और गुजराती अधिकारियों को इंडर से भगा कर बहुत सा क्षेत्र गुजरात का अहमदाबाद के पास तक छूट लिया। सुल्तान मुजफ्फर अहमदाबाद में बठा रहा। सामना करने के नियम नहीं आया। दूसरे वर्ष<sup>१</sup> उसने १,२५,००० की सना चित्तौड़ पर अधिार करने के लिये भेजी। महाराणा भी सामना करने के नियम आग गया और मदसौर पहुँचा। उस वक्त महमूद खिलजी भी गुजरातिया की मदद का गया था। लेकिन गुजराती फिर टाला देकर चले गये।

संवत् १५८१ (१५२५ ई०) में सुल्तान मुजफ्फर का बेटा बहादुर अपने पिता से और संवत् १५८२ (१५२६ ई०) में बहादुर का भाई महमूद बहादुर से जब कि बहादुर गुजरात का बादशाह हो गया था अप्रसन्न होकर मेवाड़ में आया। महाराणा ने उन लोगो को अपने यहां शरण दी और बड़े लाड-प्यार से अपने पास रक्खा।

उस वक्त महाराणा का प्रताप खूब बढ़ा हुआ था। सब राजपूत उसका प्रशंसा करते थे और उसका हुक्म तन मन से मानते थे। जब कोई लड़की या पड़ती थी तो ८०००० सवार, ७ बड़े राजा ९ लाख छोटे रूम और ५०० जमी हाथी उसके साथ गए में जाते थे। यो वह हिंदुआ का जोर बहुत बढ़ा चुका था। यदि उस वक्त (१५२७ ई०) में बाबर बान्शाह हिंदुस्तान पर हमला करने मुगलमानों की घटी हुई हिम्मत को न बना देता तो हिंदूपति महाराणा संग्रामसिंह चक्रवर्ती हमर मिली के तदन का चित्तौड़ में ले आता।

संवत् १५८३ (१५२७ ई०) में महाराणा ने बाबर बान्शाह के ऊपर चढ़ाई की। जिसका स्वप्न में भी अनुमान बान्शाह का नहीं था क्योंकि वह जब काबुल में था तब महाराणा ने दिल्ली के सुनतान में अनुता

होन के कारण, उमक पाम बनील भेज कर यह कौन किया था कि 'जा आप दिल्ली के ऊपर छावा बरोग तो मैं आगरे पर हमला करूँगा।' मगर जय बाबर ने दिल्ली के बादशाह इब्राहीम नोदी को भार कर सलनत छीन ला ता महाराणा को जो अनावन लिली वाला मे थी वही मुगला मे भी हो गई। और ज्या ही दिल्ली के शाहजादे अभीर और दूसर भाग हुए लोग उसके शरण आय, तब ता राणा साया न एक बड़ी फौज राजपूता और पठाना की लेकर बादशाह के ऊपर चढ़ाई कर दी और वयाना को फतह करके उसकी सना क अगले हिस्स का भगा लिया। इस लड़ाई मे उसका साथ जा राजा रईम और शाहजादे ये उनका वयान इस प्रकार है—

१ रायसन का राजा सनहनी ३० ००० सवार म।

२ ह्मरपुर का रावल उदहसिह १२ ००० से।

३ मेन्तीराय चनेगी का मालिक ३ ००० से।

४ हमन खा भवाती १२ ००० स।

५ शाहजाना महमूद खा गोरी १०,००० म।

६ बूदा का राव नरव ७ ००० स।

७ काछी सतरवा (?) ६ ००० म।

८ हडर का राव भारमन ४ ००० से।

९ मेडता का राव वीरमदव ४ ००० स।

१० बरमिह देव चौहान ८ ००० स।

मुगला के दल पर राजपूता का ऐसा खीफ बढ गया था कि बाबर बादशाह ने खुद अपनी जीवनी बाबर नामा मे लिखा है कि किमा म आ इतना साहस नहीं रहा था जो बहादुरी की कोई बात मुह से निकालता। यह कहना ता बहुत दूर था कि आगे बढ कर तबवार मांग।

बादशाह दा मताह तब भारना म बठा रहा और सलहनी तवर का वाच म डाल कर यह बात बाहो कि महाराणा वयान तब अपना सीमा रखें और दिल्ली आगरा उमक पाम छोड दें। महाराणा न स्वीकार नहा किया। तब बाबर बादशाह न अपनी मना म उत्साह बना कर तापखाना

ग्राग बनाया । राजपूत तापा तब लडन चले गये और वहा से बच कर जदर घुस पडे । सनहदी तबेर उस समय धाधा दवर बाबर म जा मिता । उमक जात ही राजपूता की हिम्मत टूट गई । महाराणा जा कुछ देर पहिल जात म ब्रव लडाई हार कर पीछे हट और उसक बडे-बडे सरदार वही बट मर ।

महाराणा यह बह कर कि फतह किय जिना चित्तौड नहा जाऊगा मवाड क पहाडा म चना गया ।

सम्बत् १५८४ (१५२० ई०) म बाबर बादशाह न मन्नीराय चौहान क ऊपर जो महाराणा की मदद म चदेरी म राज्य कता था बगाई की । मन्नीराय खूब लडा और बहादुरी क साथ मारा गया । महाराणा ने यह खबर सुनकर पुन अपनी सना तयार की और मालवा का तरफ बस उई स्थ स रवाना हुमा कि अपन दुश्मन को चदेरी म पाछा जाता हुमा रास्त म ही घर क मार ल । परंतु उमकी आयु न साथ नही दिया और वह मुकाम एरिच स बीमार हा कर पीछे नीटा और माय म हा जान देकर अपना बह बचन निभा दिया कि मैं फतह किय जिना चित्तौड को नही जाऊगा ।

इम महाराणा का बदन मजबूत क मभाला और बहग खूबमूरत था । आँखें बड़ी बड़ी थी । मरन बत्त उमक बत्न क जटमा स मिड हुमा कि वह एक वीर योद्धा था क्या कि उमकी एक आँख ता भाइया स भगडे म जाती रही थी । एक हाथ दिल्ली क सादा बागशाह का लडाई म बट गया था । एस ही एक पर एक और लडाई म गानी स टूट गया था और पूर शरीर पर ८० घाव तार तलवार भाल और बरछा के लग थ ।

बाबर बादशाह का आत्म क्या बाबर नामा म महाराणा की नियाकत और बहादुरी का बहुत भी प्रशंसा देखन म आती है । बाबर न लिखा है कि महाराणा अपन पौष्प और तनवार क बर पर बहुत शक्तिशाली हा गया था और तब महाराणा क आघात राज्य की आय दम कराड था । राजस्थाना आधार ग्र था म ६ कराण की आय लिखा है । बाबर न दूसरी धार आजमग नही किया और न ही पाछा किया । इसम पाया जाता है कि क महाराणा का छेन्ना नही चाहता था और फिर उमका यह बन्ना कि गंगा का पीछा करन म हमम गफनत दुः । महाराणा की इज्जत और

ज्ञान को बढ़ाता है। उसके तान पुत्र रतनमिह, विक्रमाजीत और उग्रमिह चारी चारी स उसके पीछे गद्दी पर बैठे।

महाराणा सप्राममिह का जीवन जिस तरह स व्यतीत हुआ और जा परिस्थितियाँ उसके समक्ष उपस्थित हुईं उनमें से कुछ का तो वर्णन पहिले किया जा चुका है। अब कुछ ऐसी बातें भी लिखी जाती हैं कि जिनमें उसके शील स्वभाव की भत्तव भी नजर आ जाव।

सबसे पहिले हम उनके गुण मानने और उसका बल्ला भर देने का एक उदाहरण लिखन है जा निहायत अनाया है। हममें उनकी सद् इच्छा और क्यालुता पाई जाती है। वह यह है कि जिस जमाने में हिन्दूपति को पिता की अप्रभता और भाई की बमनस्पता के कारण मवाद छाबना पडा। उस समय उसके बतन में एक वक्ष स छाया स नीचे कुछ देर स लिय ठहरना भी मजूर नहीं था। अपनी विपत्ति के दिन व्यतीत करन के लिय मवाद के बाहर इधर उधर छिपे फिरता था। एक दिन गाव अबासर इलाक बदनार में भी जा निकला। उस गाव के बाहर एक बावडी कुए स ऊपर घाडे स उत्तर कर पीपल के नीचे सो गया। सेवक घोडा बाध कर गाव में कुछ सामान खरीदन गया। इधर एक साप आया और महाराणा के ऊपर पन करके खडा हो गया और उस पर एक चिड़िया बठ कर बालन संगी। उस गाव के स्वामी पवार करमचंद ने अपने बाग में स इस आश्चर्यजनक घटना को देखा तो उसको बडा आश्चर्य हुआ। वह अपने दिल में कहन लगा यह तो कोई बडे भाग्य वाला मा रहा है। उसके मिर पर चंदर उडना और छतर घूमना चाहिये। इतन में सवक आ गया। उससे करमचंद ने पूछा कि सोन वाला कौन मरदार है? उसने कहा कि महाराणा रायमन जी के कुवर सागाजी है। महाराणा ता बठ हो गय और राज्य का स्वामी इनका बडा भाई पृथ्वीराज है। वह ननम राजी नहीं है। यहां तक कि इनका अपन अधिकार भेत्र में पानी भी नहीं पीन दना।

यह मंत्र सुन कर करमचंद सागा के पास आया और जब हिन्दूपति की ओर मुली ता उसके चरणा में मिर पडा और अपना नाम बताकर उनका पर ल गया। बहुत अधिक आग्रह करके चार पांच दिन तक रक्खा और उस मृगन का बात कह कर निवृत्त किया कि आपका जन्दी हा चित्ती का राज्य

मिलगा। हिंदूपति ने कहा कि 'चित्तौड़ तो गयी रहा जो पृथ्वीराज एमी बान मुन लगा तो हम-तुम दाना का जीवित नहीं छोड़ेगा।

परमचंद न मातृवना देकर कहा कि आपना पृथ्वीराज क्या मांग्या ? वह स्वयं पिता व जीवन जान म ही मर जावगा। चित्तौड़ का मिहामन तो आपका हा मिग्या। मागा को इस बान का विश्वास नहीं हुआ। फिर भा उसने पूछा कि तुम्हारा बतन कहाँ है ? परमचंद न क्या कि भ्रजमर है। मागा न कहा कि मैं विश्वास निनाता हूँ कि यहाँ मैं चित्तौड़ का शासन धन गया तो भ्रजमर मुमको हूँ गा। वह मुनपर परमचंद न सागा का बाग म गोठ दा घोर (१ घाडा २००) १० का जा उमवे पर पदा हुआ था नजर किया। मागा उसका कम मबा स बहुत प्रगन्न हुआ। परमचंद न भवमर देख कर निवर्त्तन किया कि जिस दिन आप चित्तौड़ गहो पर मिहामनाम्न हा जावेगे तन मुक्त गरीब का कौन याद रमगा और कौन आपका पास पहुँचन देगा ? इस त्रिय जा आपन परमाया है उस यात्र न बान्त कागज पर लिख देवे ता मर त्रिय अच्छा रहेगा मागा न परमाया अच्छा कागज न आपा। परंतु वहाँ उस वक्त कागज तो नहा मिना और करन व वक्ष का एक पत्ता तोड कर परमचंद न अपना बुद्धिमत्ता और धातुण न जो उचित समझा वह मागा म त्रिया त्रिया। उमवे यात्र चार दिन तक और मागा का अपन महा ठहराया और मागा की सम्मान व साथ अच्छा सबा की। खाना होने व समय दो ऊट और २०० १० व्यय व लिय त्रिय और बिदा किया।

इसमें एक वय बाट पृथ्वीराज मर गया। महाराणा रायमन न उसकी जगह अपन दूसर पुत्र जयमल का उत्तराधिकारी धापित किया। उसकी उन्नी दिना म बदतार के जागीरदार सुरताग माणकी व एक राजपूत न हत्या कर ली। तब राणा न छाने लडक जसा का राज्य का उत्तराधिकारी बना लिया। वह अधिकतर शिकार म व्यस्त रहता था। महाराणा उस वक्त बीमार था। जमा महाराणा का कोई ध्यान नहा रखता था और न राय का काम सभालता था। उसका व्यवहार भी अच्छा नहा था। इस कारण कोई भी आत्मी उसमें राजी न रह सका। राजपूत सरदार और वामदार सब यहाँ बिता किया कर्न ये कि मवाह का प्तना बडा राय इस अयोग्य म कम रखा जावेगा ?

यह हाल देख कर सागा की मा भग्वती राणी ने कहा कि 'अब आप लोग क्या मेरे बेटे से राज्य गवान ह। पृथ्वीराज तो मर गया और सागा मृत है। उन्होंने कहा कि सदैव उसको बुना कर वही आस-पाम रख छाड़िये क्योंकि यह वक्त नाजुक है राणाजी बीमार पड़े हैं और जेमा मृत है। राणी ने सागा को बुना लिया। जब राणा का जमीन पर उतारा ता बड़े २ सरदार सागा को लेकर किले पर आये। इतने में राणा की आख खुल गई तब ता उन्होंने मागा का पिता का चरण स्पर्श करवाये परंतु पिता का दिल बेटे की तरफ से अब तक साफ न हुआ था। दंगल ही काय आ गया। मारने को पर चलाया जिसमे जोका लगाते वक्त गावर लग गया था। वह उस वक्त अगूठे से सागा के माथ पर लगा और वही उसका राजतिलक हो गया।

फिर राणा मर गया। कुछ सरदार तो उसका जलाने के वास्ते गये और शेष ने किले में सागा के नाम की दुहाई फेरी। जेमा की मा, उसकी मामिया को किले से उतार दिया। दूसरे दिन सबने मिल कर सागा को गद्दी पर बठाया और आदमी भेज कर जेमा को कहलाया कि यहा से भाग जाओ, अन्यथा तुम्हारे मरने के दिन निजट आ गये हैं। उसको साधार हो भागना पडा। पूरे राज्य पर सागा का अधिकार हो गया।

पवार करमचंद यह सुन कर के बहुत खुश हुआ। उसने मनमा कि अब उसकी आशा पूरी होगी और मागा उसकी सेवा को स्मरण करके उसे बुला लगा। परंतु एक वष इसी आशा में बीत गया। मागा ने अनेक कठिनाइयो के बाद राज्य प्राप्त किया जिसकी उस आशा ही नहीं थी। अंत करमचंद को भूत गया। अंत में करमचंद अपनी सामर्थ्यानुसार तयारी करके चित्तौड़ गया। वहा महाराणा सागा से भेंट करने के लिये बहुत दिना तक प्रयत्न किया परंतु मफल नहीं हो पाया। अंत में वह एक ड्योदीगर से मिला और उससे ६० १०) देकर कहा कि मेरा एक छोटा मा-काम है। वह तुमको करना होगा। उसने वहा बहुत अच्छा काम फरमाइये।' करमचंद ने वह वरन का पत्ता उसको देकर कहा कि दीवाणजी से मेरा मुजरा अज करो और मह वरने का पत्ता दिखा कर वहां कि इसको राख पवार का बेटा करमचंद जवासर वाला गया है और कहता है कि इसके ऊपर आपका कुछ लिखा हुआ है।'।

दोढ़ीदार करमचंद को छ्थानी पर बठा कर वह पत्ता अन्तर ले गया । उसका देखत ही महाराणा को करमचंद की याद आ गई । अपनी भूल के ऊपर बहुत पश्चात्ताप करके और शर्मिन्ना हाकर प्रधान को हुक्म दिया कि 'तुम बाहर जानकर करमचन्द का लाया ।' वह गया और ले आया ।

महाराणा सागा पवार को देखत ही खड़ा हो गया और बगलगीर होकर मिला । उमका बहुत सम्मान किया और कुशलता पूछी । फिर उसका बठा कर स्वयं उभी वक्त अदर चले गये और अपने पहनने के कपड़े और शायन के हथियार उसके लिये भेजे और एक बड़ा हराका घोड़ा दिया । दीवान को आदेश दिया कि 'हम शाम को करमचन्द के डेरे पर जावेंगे । तुम अभी वहा जाकर सारी तयारी खान की करो । देखो ! किसी बात की कमी नहीं रहे और वहा बड़े बड़े अपने दीवान खान के शामियाने पाल पायगा जाजम दुलाचा चादर कनात मरायचा पाच हाथी २०० घाडे गय सुखपाल बहल २०० राजपूत पीशाके बगरह सामान चायनार दरवान और १०००००) रुपये नकद भेज दो । दीवान ने तत्काल आदेश का पालन किया । जैसे कि पिछले जमाने में था कृष्ण भगवान ने मुत्तामा ब्राह्मण के ऊपर कृपा करके उसकी गरीबी दूर का था उसी तरह मागा ने गराब पवार करमचंद को पत्र भर में लिखल कर लिया । जब प्रधान ने उपस्थित हाकर निबदन किया कि रावत करमचंद के डेरे पर सारी तयारी आदेशानुसार हो गई है । तब सागा ने पवार का बिनाई दी और कहा कि 'शाम को हम तुम्हारे डेरे पर आते हैं । तब तक तुम वही न जाना । पवार मुजरा करके बाहर निकला ता देखा सुखपाल तैयार है और सभी सबक उसकी सेवा के लिये तैयार खड़े हैं । जब वह सुख पाल में बैठ कर राजाघा की तरह धूमधाम से अपने डेरे पर पहुँचा और देखा कि वहा डेरे खटे हो गये हैं और सब आता का आनन्द है ।

मूर्यास्त के चार घंटे पूर्व मय डेरे सजाय गय और दो घंटे पूर्व मागा स्वयं आया । लगभग एक घंटे तक बठा और जात वक्त करमचन्द का निन पर ले गया । और फिर अच्छा मुहूर्त देख कर उमका उमका वतन अजमेर और नीचे लिखे हुये परगन इनायत किये—

प्र अजमेर	प्र भाडल
प्र बवाल	प्र बनेडा
प्र परवतगर	प्र फूलिया

इनके अतिरिक्त और बहुत सी इनायतें की। राबत का पद दिया जिससे वह करमचंद जो एक छाटा सा आत्मी या दस-पंद्रह लाख रुपये के क्षेत्र का मालिक हो गया। उसने हमेशा के वास्त अपना नाम कायम रखने की इच्छा से इन परगनों में बहुत से गांव चारणों और ब्राह्मणों को मामल दिये। उसमें से चारणवास रोजाना वगैरह जा-जो गांव कि प्र बवाल और परवतमर के साथ मारवाड में भा गये हैं वे अब तक उन लोगों के वंशजा के अधिकार में हैं जिन्होंने पंवार करमचंद का नाम बना हुआ है।

दूसरा उदाहरण भागा की मज्जमता और दान गता का यह है कि जब भाग के शासन महमूद को बनी बना कर लाया गया तो उसके साथ ऐसा प्रच्छा व्यवहार किया कि जिनकी स्वधन में भी उसको आशा नहीं थी। वह उससे प्राय बड़े प्यार से मिला करता था और एक ही गद्दी के ऊपर बैठ कर जलसा और दरबार किया करता था। एक दिन फूलों की डाली आने लगी तो महाराणा उसमें से एक तुरी फूलों का उठा कर बादशाह का देन लगा। बादशाह ने कहा कि आपके मजहब में देन के दो तरीके लिखे हैं—एक तो यह कि ऊँचा हाथ करके दें और दूसरा यह कि नीचा हाथ करके। मैं आप यह तुरी—किस तरीके से देने हैं। अगर हम को बादशाह समझ कर देत है तो नीचा हाथ करने दीजिये और इसके साथ कुछ नजर-भट भी हाना चाहिये और आप स्वयं को बादशाह और हमको लेने वाला समझने दें तो अपना हाथ ऊँचा रखें। अगर यह भी अपने दिल में इन्माफ करलें कि लेने वाला सिर्फ इस एक फूल के वास्त ही अपना हाथ आपके हाथ के नीचे न करेगा।

महाराणा इस बात का सुन कर बहुत खुश हुआ और हमकर बोला कि यात्री पूरा हुआ नहीं है बल्कि इसके साथ आधा राज्य मालवा का भी है। महमूद ने जिनको अपने मुक्त होना का भी विश्वास नहीं था आपने राज्य का ही गनामत समझ कर इस कहावत पर झगल किया कि जो धन जाता जानिये आधा लिज वाट ' हाथ बना कर वह तुरी ले लिया। महाराणा ने दूसरे तीसरे दिन ही बादशाह का बड़े मान-सम्मान के साथ विदा किया और अपने बड़े-बड़े मरदांगों का साथ भेजा जिन्होंने मालिकों में जाकर उनको गद्दी पर बठाया।



तीसरा उदाहरण महाराणा का जाति पर विषय वृथा का यह है कि उसने अपने युग में राजपूतों की मन्द बड़ी तनदेही से की। उसके वास्तु गुजरात और मालवा के सुलतानों को लड़ कर पराजित किया। भन्ताराय चौहान और सलहदी तवर के पर मालवा में उमकी मदद में जन्म था। ईडर में राठोड रायमल भी उसी के बल पर गुजरात के सुलतान मुजफ्फर के हिमायती भारमल का निकाल कर राव बनाया। राजपूतों को ही नहीं बल्कि उसने दिल्ली के लोदी शाहजादा मेवात के खानजादा और दूसरे मुसलमान अमीरों को भी उसी तरह पनाह दी और उसकी सहायता से बाबर बादशाह से युद्ध करने का निश्चय किया। उसमें तक्लीफ की मन्तव्य नहीं होने से फतह नहीं हुई तो भी उसमें उनकी प्रमिद्धि सम्पूर्ण हिंदुस्थान में फैल गई।

इसी तरह उसने पहिले जब दिल्ली के शासक इब्राहीम लोदी ने चन्देरी के स्वामी अहमद शाह का जो भाई के सुलतान महमूद खिलजी का भतीजा था उसे बालक देख कर चन्देरी से निकाल दिया था तब महाराणा ने उसका बदला लेने के लिये मालवा की तरफ से सुलतान इब्राहीम के ऊपर चढ़ाई की। अहमद शाह के पिता मुहम्मद शाह ने अपने भाई सुलतान महमूद के विरुद्ध हो चन्देरी पर कब्जा करने के बाद दिल्ली के बादशाह सिकंदर लोदी की आधीनता स्वीकार करली थी। परंतु देश का न देखते हुए वह महाराणा से भी मेल रखता था। यह चढ़ाई करने में महाराणा का उद्देश्य था कि अतत वह पठानों को आगरा और दिल्ली से निकाल दें। परंतु जब धोलपुर में पहुँचा तो उसने सगदारा ने जो पहिले कभी इतनी बड़ा और दूरी की मुहिम पर नहीं गये थे आय बन्धन से इनकार किया जिससे लाचार होकर महाराणा चन्देरी गया और सुलतान इब्राहीम लोदी की सलाह को निकाल कर अपनी तरफ से देखभाल के लिये मेदनीगय चौहान को वहाँ अहमदशाह के पास छोड़ आया कि पठानों को उस क्षेत्र में देखल न करने दें।

चौथा उदाहरण यह है कि स० १५७६ में सुलतान मुजफ्फर ईडर के राव रायमल को निकाल कर अपने एक अमीर निजाम खा को वहाँ छाड़ गया था। वह एक दिन दरबार में बहुत नी वार्ते शखी की करने लगा तो एक भाट ने कहा कि तुम यह न समझो कि मैं हमेशा इसी तरह ईडर का अधिकार

रहूंगा। वन गला साया जो जिनने बराबर आज कोइ हिंदुस्तान में शक्ति  
 शान्ति नती है 'रायमन को लेकर आयेगे और तुम्हारा निकाल बाहर करेंगे।'।  
 निजाम खा जिसको एक शेखी का खिताब भी मिला हुआ था, यह सुनते ही  
 क्रोधित हो गया और बोला "वह क्यों नहीं आता है? मैं तो यहाँ ही बठा  
 हूँ। यदि वह नहीं आता है तो मेरे नजदीक (१ कुर्त की तरफ इशारा करते)  
 हमने बराबर है।"

भाट ने महाराणा के पास जाकर यह हाल कहा। महाराणा ने उमा  
 समय चलाई की तयारी की और सिरोंही और वागड़ में हाकर ईडर पर  
 आक्रमण कर दिया। निजाम खा न बचकर मुल्तान मुजफ्फर से भाग  
 भागी। गुजरात में अमीरा ने कहा कि उमा क्या आवश्यकता थी जो उमा  
 बड़ा बोल मुह में निकाल कर महाराणा का कोप भाजन बना। यह सुन  
 कर मुल्तान भी घुप रहा। उसको सहायता नहीं की। तब निजाम खा  
 ईडर से भाग कर अहमदनगर में जा बठा। महाराणा ने वहाँ भी उसको जा  
 बोला और उमा भाट ने अदर जाकर उसको बहुत सा उभारा तो वह बाहर  
 निकल कर लडा और घायल होकर अहमदाबाद की तरफ भागा। महाराणा  
 ने अहमद नगर को छूटा और अपने अमीरा को कहा कि अहमदाबाद यहां से  
 २० कोस है चने-चना तो मुजफ्फर से भी समझ लें। अमीरो ने यह कह कर  
 अपनी अमहमति प्रकट कर दी कि इससे पूर्व भी इससे आगे कोई नहीं बढ़ा  
 था। तो भी महाराणा ने कई मजिल आगे बढ़ कर बदनगर और बीमननगर  
 का फतह कर लिया। जब अहमदाबाद की तरफ से किसी को आत हुआ नहीं  
 देखा तो वापस ईडर हाकर चित्तौड़ की तरफ कूच किया। उसकी इस चढ़ाई  
 में कई सरदार गुजरात के मार गए और उनका गव सब समाप्त हो गया।

पाववा उगाहरण उसके धर्मात्मा के रूप में यह है कि जब उसके  
 अमीरा ने अहमदाबाद जान में आनाकानी की तो गुजरात के गिरासिया ने जा  
 महाराणा के साथ ये निबंदन किया कि यदि आप अहमदाबाद नहीं चलते हैं  
 तो बदनगर का चलिग ताकि वहां की बहुत सी नौसत हाथ लगगी। क्योंकि  
 वहां के रहने वाले सब घन भण्ड हैं। इस पर महाराणा अहमदनगर से  
 खाना हाकर बदनगर पहुँचा। उम शहर में अधिकतर ब्राह्मण रहते थे।  
 उन्होंने एकत्रित होकर महाराणा से निवेदन किया कि आप हिंदुओं के  
 स्वामी हो। हमारा अण्ड जुन्म मन करा। हम बार्म्य पीता में यहाँ रहते हैं।

किसी न हम पर आज तब जुल्म नहा किया है।" महाराणा ने यह सुनकर मूट मार बंद करवा दी और उमी बक्त बीमलनगर का तरफ बूच कर लिया।

छठा उदाहरण उनके मुनसिफ मिजाजा का यह है कि स० १५८२ (१५२६ ई०) में मुलतान मुजफ्फर का पुत्र बहादुर जो एक चालाक और बहादुर शाहजादा था पिता की अप्रमत्तता से चित्तौड़ में आया। महाराणा ने उसका बड़ा आदर सत्कार किया और बहुत हस्त और धार से अपने पाम रखवा। महाराणा की माँ जो भालाबाद क्षत्र-गुजरात के राजा राजधर की बटी थी उसको बेटा बह कर पुकारती थी।

एक दिन महाराणा के एक भतीज ने बहादुर का दावत दी। रात्रि का महफिज हुई और नृत्य गान करने वाली एक से एक सुन्दरियाँ थी जिनको खूब कर बहादुर की आँख खुल गई। उनमें था एक बच्चा बहुत सुन्दर और नाचने गाने बजान और रिझान में बड़ी चतुर और सुघड़ थी। बहादुर बार २ उनकी सराहना करता था। इस पर महाराणा के भतीज ने शेखा में आ कर कहा कि बहादुर खा तुम जानते हो। यह पातर कौन है? उसने कहा कि मैं तो नहीं जानता। मगर तुम बताओ। वह बोला कि यह गहमदनगर के प्रमुख सरदार की बटी है। इनको पहिले राणा जी पकड़ लाय था और उसका नाम भी बता दिया। वह व्यक्ति शायद बादशाही खानदान से था। अतः उसका नाम मुनत हा बहादुर ने अपने का दावत दन घाने का कमर पर ऐसी तनवार मारी कि उसका दा टुकड़े हो गये और फिर वह उसी तरह खून भरी हुई तलवार लेकर खड़ा हो गया। राजपूतों ने चारा तरफ से घेर कर चाहा कि उसका मार डाले। परन्तु महाराणा की माँ ने अविलम्ब बहा उपस्थित हो कर कहा कि जो कोई मर बैठे बहादुर का माँगेगा तो मैं तलवार अपने पेट में मार कर मर जाऊँगा। महाराणा ने भी वास्तविकता का पता लगा कर कहा कि उस कमबख्त ने शाहजादा गुजरात के समक्ष ऐसी बात क्या कही? जिसका नेताजा यह हुआ। अब कोई बहादुर खा में कुछ नहीं कहें। फिर किमकी हिम्मत थी कि उस आज्ञा का उल्लंघन करता। या भगवा समाप्त हो गया और बहादुर जब तब वहाँ रहा किसीने उसका कुछ नहीं कहा।

- 
- १ विधि की विद्वम्बना है कि उस बहादुर का भी कुछ वय बाद जबकि वह गुजरात का बदाशाह हो गया था चित्तौड़ विजय करने में सफलता मिली : (देवी०)।

अब कुछ हज़ीबत महाराणा और उसके भाइयों के आपस में विगाड़ और लड़ाई भगडा होने की भी निग़ी जाती है जिसका जगह-जगह जिक्र आया है जो निहायत ही अनोखी बात हम खानदान की तबारीय में है और उसका कारण भी बड़ा आश्चर्यजनक है। महाराणा मांगा पृथ्वीराज और जयमल तीनों महोन्न भाई थे और उनकी माँ आना राजधर बापावत की बेटा थी। उस करामाती औरत चारणी देवी से जिसका वर्णन पहले किया जा चुका है भेंट के पूर्व तक उन तीनों में किसी तरह का बर भाव नहीं था। ज़्यादा ही औरत के मुह से मांगा के भाग्योन्मय की बात निकली। उनका भाइयों के दिल में एक-दूसरे ईर्ष्या की आग भड़क उठी और पर भ्रम में एक दूसरे के दुश्मन हो गये। पृथ्वीराज ने मांगा से पहिले पदा हान में जस पर निकाले थे उस ही भाई चार की जड़ बाँटने में भी अब पहिले उसी ने हाथ उठाया और यह सब करने में उसने ज़तना भी ध्यान नहीं रखा कि उस चारणी देवी को तो चली जाने दें बल्कि उसके सामने उसकी बात की झूठी गारिज करने के लिये मांगा को मारने के लिये तनवार चलाई। भूजमल ने बीच में आकर उस तलवार का प्रहार अपने ऊपर लिया। यह मांगे कुटाई देख कर वह देवी तो जिसकी जवान में यह सोचा हुआ भगडा जाग उठा था भाग गई। पछर वहाँ कुछ देर तक वह भाई और लड़े। अब में पृथ्वीराज और सूरजमल तो ज़माना में घूर होकर गिर। मांगा के शरीर पर तनवार से पांच ज़ख्म और एक तीर आख में लगा और वह भाग निकला। जयमल ने देखा कि पृथ्वीराज का तो काम तमाम हुआ और मांगा का यन्त्रि में मांगे छू ता राज्य के बाँटि फिर तोड़ गवेगर नहीं रहूँगा। यह सोच कर मांगा को पकड़ने के लिये वह लौटा। मांगा की ज़ाना नाम के एक सरदार के गाँव में जाकर उसका घाटे पर आग जान की सवार होने वाला था कि जयमल जा पहुँचा। बादा अपने महमान की जान उचाल के लिये लक्ष्मी और मांगे गया। इतने में मांगा बहुत दूर निकल गया और भ्रम करने पर एक गवार के घर में बसिया चरण के लिये लौट रहा। उसकी औरत प्रतिनिधि लड़ नउ कर उसको मनाया करती थी और कहती थी कि तू खाना न जानता है। बसिया चराना नहीं जानता। मांगा देश-जान नख कर उसके तारा का चुपचाप मुनता रहता था और कुछ नहीं बोलता था। एक दिन कई राजपूता ने उसको उस स्थिति में पाकर एक घोड़ा और कुछ हथियार वही से ला लिये। तब मांगा वहाँ में खाना हाकर कुछ दिना बाद पवार करमचन के पास

गया। फिर ग्राम जा कुछ हुआ वह ऊपर लिखा जा चुका है। परन्तु उसके उत्तराधिकारी होने का वर्णन पहिले किया गया वह उमक पिता का सुशी स नहीं था, बल्कि अन्तिम समय में मरदारा ने जबरदस्ती कराया था जमा कि हम अभी लिख चुके हैं।

इन तीनों भाइयों का अतिरिक्त महाराणा रायमल के कई बेटे और भी दूसरी रानियाँ स थे। परन्तु ज्यादा प्रसिद्ध वे ही हैं इसलिए उन तीनों का ही नाम लिखा गया।

महाराणा सगामसिंह ने १९ वर्ष राज्य किया। इस अल्प काल में जिसकी लड़ाइयाँ उसने लड़ी और विजय प्राप्त की उतनी उसके पूर्वजों में स किसी ने भी नहीं की होगी। सागा का अधिकार गुजरात में अहमदनगर तक जा चित्तौड़ से १०० कान है और मालवा में २०० कोस, चदेरी और भेलमा तक जा नवदा नदी के पास है और हिन्दुस्तान की तरफ आगरा तक यह भी २०० कास की दूरी पर है। आदि अरब क्षेत्र में पसा हुआ था। राजपूताना तो सिध तक उसके अधिकार में ही था। इन क्षेत्रों में अपना अधिकार बनाये रखने के लिये महाराणा ने जगह जगह किसानों का मजबूत किया था और बड़े-बड़े थाग्य और बहादुर अधिकारियों को उस क्षेत्र के प्रत्येक भाग में प्रशासन नियुक्त करके रखा था। मगर घर की शूट और खराबी जा हिन्दुस्ताना राज्या में अधिकतर विवाह करने से पड़ जाया करता है और वह सागा ने समय में भी शुरू ही गई थी जिसकी नाव स्वयं सागा ने हाड़ी राणी कमवती के प्यार से उसका बेटा विजयमाजीत और उर्यमिह को रणधभार का किला और क्षेत्र अपने उत्तराधिकारी ज्येष्ठ पुत्र रतनसिंह की इच्छा के विरुद्ध दकर अपने हाथों से डाली थी। इस कारण उसके बेटा और सरदारा में फूट पड़ गई। प्रत्येक एक दूसरे का दुश्मन हो गया और सरदार राय जिसका जिससे मन था उसी की मजबूती चाहते लग। महाराणा सागा के मरने के बाद कुछ सरदार इधर और कुछ उधर हो गये थे और जिस रानी ने अपने पति के ऊपर तबाह हाल कर अपने बेटा का रणधभार दिलाया था उसी ने भव उनका शासन बनाने के लिये बाबर हुमायूँ और बहादुर के पास सदेश भेज। फिर कई एमी घटनाएँ घटी जिनके कारण उमकी इच्छा पूरी हो गयी। परन्तु चित्तौड़ के ऊपर बड़ा २ विपत्तियाँ आई और दो तीन पीढ़ी तक छून की नानियाँ बहती रही। इतना बड़ा राज्य फिर किसी में नहीं सम्भल सका और इतना जल्दी अधिकार हाथ से निकल गया कि जिन लोगों ने उसको बनते हुए देखा था उन्होंने विगड़ते हुए भा देखा लिया।

## (२) महाराणा रतनसिंह<sup>१</sup>

महाराणा सशामसिंह के ५ पुत्र थे— १ भाजराज, २ बरग, ३ रतनसिंह। उन तीनों की माँ जाधपुर के कुँवर बाघा की बेटी धनवाई थी। महाराणा रतनसिंह का जन्म वशाख वदि ८, १५५३ वि<sup>२</sup> का हुआ था। ४ विषमाजीत और ५ उदयसिंह उन दोनों की माँ बूढ़ी के हाँडा राव नरबद की बटी बमवती बड़ी थी।

उन पाँचों में से भोजराज और बरग तो महाराणा के जीवन-काल में ही मर चुके थे। उनके बाद रतनसिंह को उत्तराधिकारी बनाया गया था। महाराणा का हाँडा राना से बहुत अधिक प्रेम था। इसलिये उसने एक दिन निवेदन किया कि 'रतनसिंह तो आप के बाद राज्य का मालिक होगा, परन्तु

---

१ 'मवाट देश के महाराणा श्री रतनसिंह, विषमाजीत और बनवीर का जीवन चरित्र' सम्बत—१९५०।

२ वृषवार अश्ले ६ १४९६ ई०, १(म०)।

सलहदी तबेर को रायसेन से अपने पास बुलाया और उसकी जागार बत्तन नी जिससे वह महाराणा के शामिल नहीं हो सके। इस अदूरदर्शिता पूर्ण काम से उमका और काम बिगड़ गया। क्योंकि सलहदी का सुलतान पर विश्वास नष्ट रहा और वह विद्रोही होकर महाराणा से जा मिला। उस वक्त महाराणा ने सलहदी और अपने सब सरदारों को एक्त्रिन करके सलाह की कि अब क्या करना चाहिये। गुजरात के सुलतान बहादुर शाह की तरफ से खत आया। पहिले भां जब सुलतान महमूद मेहनीगय बगरह राजपूता के दबाव में गद्दी छोड़कर गुजरात चला गया तो उसके पिता मुजफ्फर शाह ने उसकी मदद की थी। इसलिए हम सबध में सुलतान से राय लेना उचित समझा। महाराणा ने अपने वकील हुसैनजी और जाजरमी को सलहदी के पुत्र भूपतराय के साथ सुलतान के पास भेजे। वह भी इस समय सुलतान महमूद से बिगड़ा हुआ बैठा था। इनके आने को मालवा लेने का बधाई ममक कर या यह सोच कर कि यदि भवाड के मूरमा राजपूत मासवा लेंगे तो वे अधिक शक्ति शाली हो जावेंगे, मालवे की तरफ रवाना हुआ। जब खरजा की घाटी के पास पहुँचा तो महाराणा और सलहदी उससे मिलन गए। यह भेंट बड़ उत्साह से हुई। और दोनों तरफ से भेंट और सौगातें दी गई। सुलतान ने ३० हाथी बहुत से घोड़े और १५० जरा के मीरोपाव महाराणा को दिये। महाराणा सुलतान बहादुर को मालवा विजय करने का अधिकार देकर कुछ दिना बाद अपने राज्य में लौट आया। सुलतान ने सलहदी दलीपराय ईंडर और बागड के राजाओं और राणा के वकील हुसैनजी बगरह के साथ भाहू की तरफ जाकर सुलतान महमूद के ऊपर फतह पार्स। मानवा को अपने राज्य में मिला कर सुलतान मजकूर को मार डाला। सलहदी की सेवा से खुश होकर उस वक्त ता रायसेन भेलमा उज्जैन और मारगपुर बगरह उसको जागीर में दे दिये। परंतु बाग में उसकी उच्छता के कारण अप्रसन्न होकर उस पर चलाई की। सलहदी ने अपने बेट भूपतराय का महाराणा के पास सहायता प्राप्त करने के लिये भेजा। महाराणा ने अपने भाई विजयमाजीत का ४० ००० सवार और पैदल सैनिक लेकर उसके साथ बिना किया। जब वह सेना रायसेन के पास पहुँचा तो सलहदी का छात्रा बेटा पूरणमल २००० सवारा से निकल कर बेरमय गया और वहाँ सुलतान के दानदार के साथ नडाई करके विजयमाजीत से जा मिला।

सुलतान ने यह खबर सुन कर खानदेश के हानिम मुहम्मद खा का

विजयमाजीत से मुकाबला करने के लिये ग्वाना किया। विजयमाजीत ने इसकी सूचना महाराणा के पास भेजी। तब तो महाराणा स्वयं विनाल सेना लेकर आग बग। दरमया पहुँचने पर मुहम्मद खाँ ने यह खबर सुना और अविनम्य मुनतान बहादुर को तत्संबंधी सूचना दी। मुनतान रायमन का डेरा बँगा ही छाड़ कर महाराणा का सामना करने जाग बड़ा। मुनतान के आग बग के समाचार अपने जामूना ने मिलने के पूर्व ही महाराणा ने एक मंजिल पीछे हट कर मुनतान बहादुर के पास बसीन भेज, जिन्होंने उगाँ पाग जाकर कहा कि महाराणा ने मनहरी को तयारी का हान मुन कर विजयमाजीत का इस उद्देश्य से भेजा है कि आपने निवारण करें। भव जो आप यह तो आपका पास आये। मुनतान ने कहा बहुत अच्छा। बकाना न वापस जाकर राणा ने कहा कि हम बहादुर शाह का अपनी आशा से खूब आग्रह है। 'उमके साथ एक और शक्ति शानी सना है।'

इधर तो यह ही रहा था और उधर रणभार में यह खबर पहुँची कि हाडा राणी<sup>१</sup> कमबोता अपने बेटे विजयमाजीत को बराह का महाराणा बनाने के लाले बाबर वांशाह और मुनतान बहादुर से अपने भाई राव मूरजमल हाडा के माध्यम से बुलाने के बात कीत कर रही है।

इन बातों से अनुभववाने महाराणा एकत्र पररा उगाँ और मुनतान बहादुर के आन से और भी बका से पट कर अविनम्य चित्तीड को लौट गया। विजयमाजीत का भी लौट आने का हुकम निश्चि भेजा। मुनतान कुछ और दूर तक महाराणा का पीछा करके वापस रायमन आ गया।

मनहरी ने यह सब उतार चलाक देखा तो गहायता की आशा नहीं रहा। अतः अकल अपनी जान पर खेल कर मुनतान से युद्ध किया और अतः

१ कहते हैं कि इस राणी ने राजस्थाना परम्पराानुसार राणी भेज कर बाबर के बेटे हुमायूँ को अपना राणी बन भाई बनाया था और बाबर वांशाह से यह वादा किया था कि जो आप मरने पर विजयमाजीत का चित्तीड का सामना बना देंगे तो मुनतान होशंग मानवा वाले का ताज जडाऊ पीटा और रणभार का विना आपका नजर किया जावेगा। मगर वांशाह बाबर ने इसका नाम अपनी पुस्तक बाबर नामा में पचावती लिखा है। (देखी०)।



के अत्यन्त विश्वासपात्र राजपूत अशाव की तरफ से कुछ आदमी घाये थे और ७० लाख की जागीर लेने की जन पर विज्रमाजीत के अधीनता स्वीकार कर लेने का समाचार लाये। यह घशाव हिंदू विज्रमाजात की मा पचावनी (कमवती) का रिश्तेदार होता है। उसने विज्रमाजीत का मरा सवा के लिए राजा कर लिया है। मुनतान महमूद से लिया हुआ रत्न जटित मुकुट और कमर पटा जा विज्रमाजात के पास है उसने मुदा देना स्वीकार किया और रणथंभार पर मुभ से बयाना लेने की बात चान की परन्तु मैंने बयान की बात को टाल कर रणथंभार के बाल म शम्मावाद देने का कहा। उमा जिन उससे इन आत्मिया का खिलप्रत पहना कर ९ जिन के वाद बयान म मिलने को कह कर बिना बिये।

शामवार के जिन पाचवी मफर (अक्तूबर १९ १४२८ इ०) आगने म विज्रमाजात के पहिन और पिछेन बशील के साथ अपने बगीमा हिंदुष्मा म से देवा के घट<sup>१</sup> ( ) का भजा गया कि रणथंभार मौपन और विज्रमाजात का गवा स्वीकार करने की शर्तें हिंदुष्मा की रीति के अनुसार तय करें। मैंने भी यह कहा कि यदि विज्रमाजीत मुझे अपनी जनों पर हठ हा तो उसका पिता का जगह उसका बिसौह का गदा पर बठा दूंगा।'

---

१ नाम महा पडा गया जमिय जगम ग्राही साद श्री है। (दो०)।  
 बाबर-नामा (बखराज हुत अकबरी अनुशा भाग २ पृ० ९१६) म  
 उसका नाम हायूमा दिया है। वह भाग का गहन बाना था। (ग०)।

## (३) महाराणा विक्रमाजीत'

महाराणा विक्रमाजीत सम्बत् १५८८ (१५३१ ई०) में रणधमार में चित्तौड़ आकर राज सिंहासन पर बठा। उस वक्त उसकी आयु १२-१३ वर्ष की करीब थी। उसका पिता महाराणा सदाशिवदेव चारा तरफ घेरने राज्य की साम्राज्य का बना कर ६ करोड़ की आय का विस्तृत राज्य अपने उत्तराधिराज्य का लिये छोड़ गया था। अब उसके विगड़न का वक्त आ गया था। क्योंकि प्रथम तो उधर महाराणा नागालिख हान की कारण मिथान मन्-कूट और पहनवाना का नडाई लखन की और कोई काम नहीं करता था, उस कारण राज्य में अभावस्था फैल रही थी और उधर गुजरात का सुनतान बहादुर जाह मालवा से मवाद की थान (मैनिक चोकिया) उठाता हुआ चला आ रहा था। महाराणा सदाशिवदेव ने मालवा की बड़ जिल जीर की सुनतान मरूम में छीन लिया था। उनमें मचदरा को सवत् १५८४

---

१ मेवाड़ देश की महाराणा श्री रतनसिंघ विक्रमाजीत और बनबीर का जीवा चरित्र सम्बत् १९५०।

(१५२८ ई०) में बाबर बान्शाह ने मदनीराय से लीया था और रायमेन भेलसा मदमौर और गागरोन का मुनतान बहादुर गुजराती ने पतह कर लिया था। महाराणा विजयभाजीत उसका कोई प्रतिराध नहीं कर सका। गागरोन का मिलेदार ने तो गुजरात का फौज मार भगाई और जब स्वयं बहादुर शाह चले कर गया तो उससे भाग उसने युद्ध किया। परन्तु समय पर सहायता नहीं पहुँचने से लाचार हो आत्म समर्पण करना पड़ा। गागरान पतह करके बहादुर शाह मदमौर पहुँचा। वहाँ का मिलेदार बिना लड़े ही किला छोड़ कर भाग गया। मम्बत १५८९ (१५२८ ई०) में मवाड वालों के विरुद्ध मालवा क्षेत्र में यह मुलतान की अन्तिम विजय थी। यो निरन्तर प्राप्त मफतताओं से उसकी भवाड पर आक्रमण करने का साहस हुआ। उसने चित्तौड़ के किले पर अधिकार करने के वास्तव में हमी खाँ के मतृत्व में एक बड़ा सापखाना तैयार करना शुरू किया। लीय की तयारी के बाद विशाल मना के साथ चित्तौड़ पर चलाई की। दुर्ग का बचाने के वास्तव में जोधपुर और मेड़त से बहादुर हाडे-राठौड़ आकर मीमोदिया घूरमाभा के साथ शामिल हुए। और के बहादुर राजपूत सरदार गमी बहादुरी से लड़े कि मुलतान के तोपखाने की आग भी उनकी तरवार के पानी में बुझ गई। फिर भी राणा कमवती ने बहादुर शाह को जिद्दी शक्तिशाली और अपने बेटे को नामान और माफिल देख कर बहादुर से सुनह कर ली उचित समझी। कमवती ने मुलतान हाशग का जडाऊ ताज कमर पेना और कई कीमती जवाहरात<sup>१</sup> जो महाराणा सगाममिह को मुनतान महमूद गिरजा में हाथ लग थे और मालवा का वह मर क्षेत्र जो चित्तौड़ के अधिकार में था बहादुर शाह का देकर उससे सुलह कर ली। या बहादुर ने तान महीने तक घरा रखने के बाद चित्तौड़ से कूच कर अजमेर और रणथम्भोर को राणा के आदिमिया से लने के वास्तव में भजी और स्वयं भाड़ लोट गया।

कहते हैं कि वह महाराणा के भाई उदयसिंह का भी तब अपने साथ ले गया था। मुनतान बहादुर शाह निमतान था। अब उसकी रक्षा थी कि उदयसिंह को मुमलमान बना कर अपना उत्तराधिकारी बना दे। उस भेद का महाराणा के आदिमिया का पता चल गया। वे उदयसिंह का देकर भाग गये। इससे बहादुर शाह बहुत नाराज हुआ।

१ इसके अतिरिक्त १० हाथ और १०० घाटे भी दिये (म)।

बहादुर शाह के आश्रमण से भी महाराणा न बार्द सबक नहीं लिया और अपनी स्थिति को मजबूत करने की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। साथ ही अपने शत्रु से बेखबर रह कर बस ही मुस्ली और निरन्मी बातों में उसने अपना समय गवाया। और बन्मिजाजी से अपने मुसाहबा और भरनारा का भी नाराज करता रहा।

बहादुर शाह ने हमारे वष फिर पहिने से ज्यादा तोखाना लेकर और नमा खावा कितोड का हाकिम बनाने का बचन देकर कच्चाई की। मवाड के सूर-वारा का फिर उमम लडना पडा। मिरोही जानीर धूदी के चौहान फिर महाराणा की मन् का आध। राठीड भा मारवाड ने वक्त पर पहुँचे। (देबलिया प्रनापण के महारावस) सूरजमल का बटा बाधनिह जो महाराणा की बन्मिजाजी से अप्रसन्न हाकर माहू के बादशाह के पास चला गया था यह खबर सुन कर अपने पूवजा की राजधानी का बचाने के वास्ते विशान सना लेकर आया। कमवती राना ने उसकी उड़ी खानिर की और भरदाग ने उसकी जगह लियावना के निहाज से उसका अपना मेनापति बनाया।

राणा ने हुमायू बागशाह का भा निखा और अपनी मन्द के वास्ते बुताया बहादुर शाह ने उसका रास्ता रारने के वास्ते अपनी फौज का एक हिस्सा नागौर और हमरा आगरा का तर्फ भेजा।

हुमायू बागशाह उन वक्त बगान फन करने जा रहा था। रागी का पन पन कर कानिजर में लौटा और बहादुर शाह ने ऊपर खाना हुआ। मगर मौनविया ने कहा कि अब एक मुसलमान बागशाह काफिरों से लड़ रहा है तो उसके ऊपर हमला करना इस्लाम धर्म के खिलाफ है। आपने शहा भीर तमूर ने भा इसी मजब से रुम के सुनतान एलद्रुम बाइजीन के ऊपर चलाई करना मृतलवा कर लिया था क्योंकि तब वह फिरगिया से लड़ रहा था। जब वहा से निपट कर पीछा आया तो उन वक्त उन्होंने उसके ऊपर हमला किया। बागशाह उक्त शान सुन कर माग में मारगपुर<sup>१</sup> ठहर गया।

१ मिरात मिन्दग के अनुमार खालियर में ठहर गया था। साथ ही बहादुर शाह ने हुमायू का इस आशय का पत्र लिखा था कि इस समय वह जिहाद (धर्म युद्ध) पर था, अतः हुमायू का हिदुआ की मदद करना उचित नहीं होगा (स)।

बहादुर शाह ने सुरम लगा कर किले का दावार पुरज सहित उड़ा दी। इसके साथ ही बूंदी के राव के भाई अजुन और उसके ५०० हाडा राजपूत उड़ गये। चित्तौड़ के मूरमा सरदार बटन लिया तब गुजरातिया व हमला के रोक्ते रहे परंतु जब म जब किला बचने की आशा नहीं रही तब ता उन्होंने राणी कमवती की सलाह से महाराणा और उसके छोटे भाई उदयसिंह का ता बूदा में राव मुरतान के पाम भेज दिया और (रावत) बाघसिंह के मिर पर छत्र और कण रत्न कर बेसरिया वाना पहना और किले के दरवाजे खोल कर दुश्मनों में खूब लड़ाई की महा तक कि सब मार गये।

इस लड़ाई में ३० ००० हजार आदमी मार गये और १३ ००० हजार औरतें<sup>१</sup> राणी कमवती व साथ आम में जल मरी।

यह सावा चत सुदी ४ सवत् १५९२<sup>२</sup> का हुआ। इस पतह में हमी खा न बहुत योग दिया था तो भी बहादुर शाह ने अपना वचन नहीं निभाया। उसको मिला नहीं लिया (हाकिम नहीं बनाया)। इस कारण वह नाराज होकर हुमायूँ बादशाह से मिल गया। हुमायूँ ने चित्तौड़ बटन की खबर सुनते ही सारंगपुर से आकर पहिल मदनौर में और फिर माहू में बहादुर को घेरा जहाँ वह रस्त बंद हो जान से सड़ाई हार कर द्वारका की तरफ भाग गया। बादशाह ने माहू में महाराणा को बुलाया और अपने हाथ से तलवार उसके कमर में बांध कर पुन मवाड़ का राज्य उसका दिया। महाराणा पुन चित्तौड़ पर पूरा अधिकार ही नहीं कर पाया था कि बहादुर के जाने की खबर सुन कर हुमायूँ बादशाह खभात तक उसके मुकाबिले की गया। फिर पूब में शेरशाह पठान के जार पकड़ने की खबर सुन कर पीछे लौटा। अहमदाबाद में अपने भाई मिर्जा अयकरी का छोड़ गया जिसको निकाने के वास्त इशर से मलिक अमीन हाकिम रणभार बुरहानुलमुल्क हाकिम चित्तौड़ और शमशेर-मुक हाकिम अजमेर २० ००० सवारों के साथ पाटन तक पहुँचे। जधर से बहादुर शाह आया। मिर्जा अयकरी उन सबका उड़ाई उड़ कर अहमदाबाद में ९ महीने रहने व

१ उक्त वगन ख्याता व आधार पर ही दिया है जो अतिशयोक्ति पूर्ण है। (म)।

२ सोमवार माघ ८ १५३५ ई०। (स०)।

घाद हिंदुस्तान की तरफ चल दिया। और बहादुर शाह चापानेर से फिर द्वारिका गया। वहाँ २ वष बाज़ उसको ठीक उमी-मिन, जिन दिन कि उसने चित्तौड़ पर अधिकार किया था फिरगिया पुनर्वालिपो न मार डाला। उसके कोई बेटा नहीं था। अतः उसके विस्तृत राज्य में शाघ्र ही अव्यवस्था फैल गयी। यदि उस वक्त चित्तौड़ में कोई योग्य, कुशल, शक्ति शाली शासक होता तो गुजरातिया को इस अव्यवस्था से बहुत लाभ उठा सकता था। मगर वहाँ तो महाराणा विक्रमाजीन था, जो अपने नाम के अनुसार एन भी गुण नहीं रखता था। उससे तो मित्राय बढे रहन के और कुछ नहीं हो सका। चित्तौड़ अवश्य ही किसी तरह उसके हाथ जा गया था। मारवाड़ के राव भालदेव ने जो बडा माहुमी था अजमेर बगरह कई मेवाड के परगन, जा गुजरातिया न ले लिय थे फौजगी करके अपने अधिकार में कर लिये।

इन बातों में मेवाड के सरदारों को बडा आघात पहुँचा। इधर वे महाराणा की बदमिजाजी से पहिले ही तंग हो रहे थे। उसने अब तक जरा भी अपने चाल चरन को नहीं बदला था बल्कि उसकी बंमिजाजा प्रति-दिन बन्ती ही चली जा रही थी। यहाँ तक कि एक दिन भरा कचहरी में उसने पवार करमचन्द के, जिसका महाराणा सागा न अजमेर का राजा बनाया था, पूना मारा। उसकी आयु और इज्जत का भी कोई ध्यान नहीं रखा। यह हान देख कर सब सरदार उठ खड़े हो गये और बूझावनों के सरदार कानजीन जो उच्च श्रेणी का सरदार था कहा कि सरदारा! अभी तो यह बली ही खिला है। फन लगना बाकी है। यह सुनकर करमचन्द ने कहा कि बल ही उसका भागना चाह लेग।"

सरदार यो कह सुन कर पृथ्वीराज के खवास के बड़े बतवार के पास गये और कहा कि चला हम तुमका गद्दी पर बठा देंगे। उसने कहा कि 'मे इस योग्य नहीं मुझ का क्षमा कीजिये। सरदारा ने कहा कि राज्य की दशा बहुत खराब हो रही है। यदि तुम नहीं स्वीकार करागे तो दूसरा उठ जावेगा फिर उसकी सेवा किया करना।' यह सुन कर वह तयार हो गया और रात के वक्त महल में महाराणा को भाग कर अपने पिता के बन्दे अपने दादा महाराणा रायमन की जगह बठ गया।

मीरा बार्द की कथा और उसके भजना में बगन आता है कि राणा न मीरा बार्द के वास्त जहर का प्याला भेजा और वह उस चरगामृत करके

महाराणा विज्रमाजीत को बड़ा विश्वास था और जब बनबीर न महाराणा का मारा तो पहिले उसको घर जान की सीख दिला दी थी ।

रावत ने यह दोना लेकर उसम स कुछ नही खाया और बमा का बमा अपन सबक को दे दिया । बनबीर न कारण पूछा तो कहा कि मैं चौबे म खाता हू । इस पर बनबीर न नाराज हो कर निक्कल जान का हुक्म दिया ।

जान अपन और महाराणा विज्रमाजात क १०००० आदमी एकत्रित करके कु भलमर उदयसिंह क पास पहुँचा और कहा कि मैं आपके लिये प्राण देन का तयार हू ।

उदयसिंह न १०८ नन्या का पानी और १०८ कुशा के पत्त मगवा कर अपना राज्याभिषेक करवाया । और सब सरदार का बुलाने क वास्ते पास रखे भेजे । जालार क सानगरा चौहाना स महायता मागी । उस वक्त सानगरा का सरदार अक्षेराज रणधीरत भारवाह के राव मालदेव के राज्य का सेवक था । मानन्व ने भवाह म दा राजा देव कर कई सीमात परगना पर अधिकार कर दिया था और राठांड कूपा महाराजात को मदारिय म थाणदार रखा था । अक्षेराज गव मालन्व का स्वीकृति स कूपा मेहराजोत, राणा अक्षराजात और जसा भरुनामात बगर्ह राठोड सरदारो का लेकर उदयसिंह की सहायताथ आया । इसी तरह और सरदार भी उपस्थित हुए जिनके मजराना म बहुत स हाथी घाडे और नकन रुपये एकत्रित हा गये ।

उसा समया तर म बनबीर क धुव की शाता हान वाली थी जिसक वास्त उसन अपने एक पनाधिकारी रामनाथ का काठियावाह म घोडे और कपडे नाने के लिये भजा था । वहा स ९०० घाह और अन्य सामान खरीद कर जब वह चित्तौड नौट रहा था तब सानगरा ने जालार क पास पास उसका मार कर वह सब मामा अक्षराज को सापा । अक्षराज न अपना पुत्री का विवाह उदयसिंह स कर वह सब सामान उसको दहज म द दिया और उसक अतिरिक्त उदयसिंह क आग्रह पर १०००० सिर सोनगरा क भा नेन स्वीकार किये ।

फिर दूसरा विवाह उदयसिंह ने राठाड कूपा की बेटी से किया, जिसे १५,००० राठाड उसी वक्त उसके वास्तु जान देने को तयार हो गये। इस तरह वह इन सबधियों की २५,००० फौज और उससे चौगुना अपने भाइयों और राजपूतों की सेना इकट्ठी करके १ लाख २० हजार सवार और पदल से चित्तौड़ के उपर सबत् १५९७ (१५४० ई०) में चढ़ाई की। बनवीर ने रास्ते में आठ जगह अपनी फौज के धाने बठा रखे थे। पहिली लड़ाई मावली धान पर हुई। उसमें उदयसिंह की जीत हुई। इसी तरह वह सब धानों को मार कर चित्तौड़गढ़ की तलहटी में पहुँचा। वहाँ भी दो लड़ाइयाँ हुई जिनमें उदयसिंह की जीत हुई। अब उसने उन सरदारों को जो कि बनवीर के पास थे लिखा कि जो जिस गाँव में आकर हमारे बंदों से मिलेगा उसको वही गाँव दनिया जावेगा। इस सालच से वे सब मरदार बनवीर की छाड़ छोड़ कर उससे आ मिले। तब उदयसिंह ने आक्रमण करके विले के किवाड़ तोड़ डाले। बनवीर यह देखकर गुनरात की तरफ भाग गया और चित्तौड़ के विले पर उदयसिंह का अधिकार हो गया।





## (५) महाराणा उदयसिंह<sup>१</sup>

महाराणा उदयसिंह का जन्म भाद्रपद सुदि ११ संवत् १५७८<sup>२</sup> का हुआ था। उसने चित्तौड़ में गद्दी पर बैठ कर जब राठौड़ सरदारा को विदाई दी तो राव मालदेव के बाले उस मन्त्र के बन्त में ४० ००० फीरोजी और बमताराय हाथी भेजा। दोनों तरफ पहिले २ खूब मक्का और मिर्चपट भेज रहा। लेकिन कुछ समय बाद ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई कि घापम में बड़ी दुश्मनी हो गई। मारवाड़ क्षेत्र के सरवा के जागीरदार भाना जना की एक बन्ती का तो राव मालदेव के साथ विवाह हुआ था जिसका नाम भानी सरूपने था। उसने दूसरी बटी और भी। राव उससे भी विवाह करना चाहता था। जेता की इच्छा एक बहिन का दूसरी बहिन की सौत बना देन की नहीं थी। इसी कारण उसने यह दूसरा विवाह करना स्वारार नहीं किया। परन्तु जब राव ने बहुत अधिक दबाव डाला तो उसने ये महीन

---

१ भवाळ दश के भणहूर महाराणा श्री उदयसिंह जी का जीवन-चरित्र संवत् १९५०।

२ बुधवार अगस्त १४ १५२१ ई०।

वा ममरा राव से प्राप्त कर लिया और उधर राणा को खबर दी। राणा स्वयं छाया और उम लडकी से विवाह कर लिया। वह विवाह एक बड़ के नीचे हुआ था जो उसी दिन से भाली राणी का बड़ कहलाने लगा। यह हाल सुन कर राव बहुत काधित हुआ और नाटाल जोजावर और वीमलपुर बगरह गोडवाड के बड़े-बड़े गावा म थाने बैठा कर १५९७ वि<sup>१</sup> म उसने कुमनमेर पतह करने का फौज भेजी जिसके अधिकारिया म से राठोड पचायल बरमनियात और दादा भारमलीत सीनी लगा कर किले के ऊपर चढ़ गये। परन्तु बिन्देदार के सावधान और सतक हो जाने के कारण वे दुग म नहीं घुम पाये।

महाराणा ने यह समाचार प्राप्त कर अविनम्व उधर चढ़ाई कर दी। मारवाड क थाना को उठा लिया। बासीयल म राठोड जेतसी ने बड़ी बहादुरी से उसका सामना किया, जिससे राणा को पीछे हटना पड़ा। उस वक्त राव मालदेव का तेज-प्रताप बहुत बढ़ा हुआ था। इसके बाद सन् १६०० (१५४३ ई०) म जब वह शेरशाह घान्साह से पराजित हो गया और दो बरस तक जोधपुर पर पठानों का आधिपत्य रहा, तब महाराणा का अपना यह श्रेष्ठ वापस लेने का अवसर मिला। उस समय से महाराणा जगन्ना प्रसिद्ध हुआ।

सन् १६०२ (१५४५ ई०) में शेरशाह के मरने पर राव मालदेव ने पठाना को भगा कर जोधपुर और अजमेर पर पुन अधिकार कर लिया। महाराणा का उसका अजमेर पैना बहुत घुग लगा क्योंकि उसको वह अपना समझता था, वह मना लेकर उस आर खाना हुआ। राव के सनापति राठोड पृथ्वाराम जतानत ने गाव धगले म भुराबना परक उसको आगे नहीं बढ़ने दिया। अत राणा वापस कुमनमेर साट गया। अजमेर क ऊपर अधिकार करने क लिये पुन मुनिक तयारा करने लगा। इतन म शेरशाह क बेट मन्नीम शाह का फौज म राठोडा ॥ अजमेर लकर इन दोनों रजवाडों की तनवार म्यान म करा दी।

---

१ १५६० ई। उक्त सन् १५६० ई० में नहीं है क्योंकि उस समय सा उदयनिह चित्तोड पर अधिकार करके प्रयत्न म लगा हुआ था। (स०)।

महाराणा ने इस समय को चित्तौड़गढ़ का मरम्मत म लगाया जा बहादुरशाह की चढाईया से दट-पूट कर खराब हो गया था ।

संवत् १६१० (१५५३ ई०) म सलीमशाह के मरने पर राठौड पृथ्वीराज ने जोधपुर से जाकर फिर अजमेर के किसे को घेरा । क्तिेदार ने महाराणा का बिला देना मरके चित्तौड से बुलाया । महाराणा बहुत सी फौज लेकर गये और पृथ्वाराज का पराजित कर अजमेर पर अधिकार कर लिया । पठाना का वहाँ से सुरक्षित निवृत्तन कर उसने नागौर भी जा दबाया । इस बात से पृथ्वाराज बहुत लज्जित हुआ । उमन राव मालनेव के पास जो मेढता फतह करने को आ रहा था पहुँच कर उसका अजमेर के ऊपर लाने का बहुत कुछ प्रयत्न किया । राव मल्ला की विजय करना अजमेर से ज्यादा आवश्यक समझ कर पृथ्वीराज को भी अपने साथ ले गया । वहाँ उसकी हार हुई और पृथ्वीराज काम आया ।

महाराणा ने अजमेर और नागौर विजय करने के बाद रणथंभोर के ऊपर फौज भेजी । वहाँ जो किलेदार था उसने भी अजमेर और नागौर के किलेदारों की तरह वह बिला महाराणा के सेनानायकों का सौंप दिया जा महाराणा विज्रमाजीत के राज्य म सुस्तान बहादुर गुजराती न ले लिया था और फिर शेरशाह ने उम पर अपना अधिकार जमा लिया था ।

संवत् १६११ (१५५४ ई०) म महाराणा ने सुरताण हाडा को जिस महाराणा विज्रमाजीत ने बू दी का राज्य लिया था बुर आचरण और हाडा सरदारा पर अत्याचार करने और उनके शिकायत करने पर अलग कर दिया । तब अजु न हाडा के बेटे सुरजन हाडा को बू दी का राज्य लिया और किले रणथंभोर की चाबिया भी उसको अपना विश्वास पत्र समझ कर सौंप दी ।

कुछ दिना बाद महाराणा विवाह करने बीकानेर गया । माम म मालूम हुआ कि राव मालनेव की फौज ने राव जयमल भडतिया को मेढते म घेर कर पराजित कर रक्खा है । महाराणा वहाँ जाकर जयमल को ममभा कर अपने साथ ले गया । बीकानेर म राव कल्याणमल ने महाराणा का बहुत सम्मान किया । महाराणा विवाह के बाद पुन चित्तौड आ गया ।

संवत् १६१२ (१५५६ ई) में अकबर बादशाह यहीं पर बठा।  
संवत् १६१३ (१५५७ ई) में उसके दबाव से हाजी खा पठान को सनीम-  
शाह का भौकर था अलवर से आमेर की तरफ आया और महाराणा के  
अधिकार-क्षेत्र में लूटमार करने लगा। इस पर महाराणा के अधिकारियों ने  
उससे लड़ाई की किंतु वह उनको हरा कर अजमेर और तापीर का स्वामी  
बन बठा।

उक्त समाचार सुन कर महाराणा ने हाजी खा पर आक्रमण की  
तयारी प्रारम्भ कर दी। वही समय राव मालदेव ने अपनी फौज अजमेर पतह  
करने को भेजी। हाजी खा ने चालाकी से महाराणा के पास अपने भले आदमी  
भेज कर कहलाया कि राव मुझको मारना चाहते हैं। मैं तो यहाँ बैठा  
आपके ही विश्वास पर बठा हूँ। तब तो महाराणा शीघ्र ही ५००० सना  
लकर अजमेर पहुँचा। इस पर राव की फौज मारवाड़ चली गई। महाराणा  
ने राठाड़ तैनामी के शरसियोत और मूजा बालीसा का कहा कि 'तुम अजमेर  
जाकर हाजी खा से कहो कि हमने तुम्हारी महायता की है। इसलिए तुम  
हमको कुछ हाथी कुछ सोना और रंगराय पातर (वश्या) हमका दो।  
उन्होंने अज की कि 'हाजी खा बड़ा आदमी है और आज विपत्ति में है।  
आपने उसके ऊपर बड़ा अहसान किया है। इसलिए यह बात उसका कह-  
लाना उचित नहीं है। महाराणा ने स्वीकार नहीं किया और उनका  
बलात् भेजा। उन्होंने हाजी खा के पास जाकर यह बात कही तो उसने  
उत्तर दिया कि 'मर पाम कुछ भी देने को नहीं है और पातर तो मरी  
पत्नी है। उस कस दे सकता हूँ ?'

गुजरात की तबारीख 'मीरात-इ-मिबत' में लिखा है कि हाजी  
खा ४० मन माना और हाथी दान के नियम तो तयार हो गया था लेकिन  
रंगराय पातर का देना उमर स्वीकार नहीं किया।

महाराणा यह सुनकर बहुत क्रोधित हुआ और तनवार के वन पर  
उसको अपने क्षेत्र में निजान देने की तयारी करने लगा। हाजी खा ने देश  
काय रख कर राव मालदेव के पाम अपने आदमी भेजे और कहाथा कि  
आप मरी मरना क्या। 'राव ने १५०० मवार राठोड खीदास जतावन के  
नृत्य में अजमेर का खाना किया।

की कीर्ति फली और सम्मान बढ़ा। तब बादशाह ने अग्रसन्न होकर उसको कई बार अपन पास बुलाया। वह चाहता था कि आम्बेर वगैरह राजाओं की भाँति महाराणा भी उसकी सेवा स्वीकार कर ले। महाराणा ने अपने पूज्य की प्रतिष्ठा को ध्यान में रख कर अकबर व आम्बेरग की अस्वीकार कर दिया। परन्तु ज्याला दबाव डालने पर और अन्य राजाओं के लिखने पर अपने छोटे कुँवर शक्तिसिंह का कुछ भादमिया के साथ अकबर की सेवा में भेज दिया।

उस कुँवर की उम्र उम्र वक्त बहुत कम थी तो भी वह अपने पूज्य की तरह बड़ा धमकी और हिंदू धर्म का पूरा पालन करने वाला था। अकबर बादशाह उसको अपन बेटा व बराबर प्यार करता था। प्रायः शिकार व समय अपने साथ रखता था। एक बार वह यमुना के घाट पर बादशाह से कुछ आग आग जा रहा था कि प्यास लगी और बिनार पर बैठ कर पानी पीने का झुका। इतने में पीछे में बादशाह ने छुपचाप जल्दी से आकर उसके जाम को पाव में दबा दिया ताकि वह नदी में गिरने नहीं पावे। शक्तिसिंह का अपने जाम को पाछ की तरफ खिचावट का आभास हुआ तो उसने पीछे घूम कर देखा और बादशाह को जामा दबाये हुए पाया। तब तो जो पानी पीने का दास्त हाथ में ले रहा था अविलम्ब नीच डाल दिया और उठने लगा। बादशाह ने कहा कि डर मन पानी पी ले। उसने बट जवाब दिया कि मैं पानी कैसे पीऊँ? मेरा कपड़ा तो आपने पकड़ रखा है। और पानी नहीं पिया। बादशाह का उस आयु में उसका यह छद्मायुध का विचार देख कर अत्यंत आश्चर्य हुआ और फिर उसमें कुछ नहीं कहा<sup>१</sup>।

महाराणा उत्पति सिंह ने बाबू बहादुर आदि को आश्रय दिया था। यह दास्त बादशाह व जिन में हमेशा खटवनी थी। इनके अतिरिक्त महाराणा का उपस्थित नहीं होना भी एक जरूरत था और फिर चित्तौड़ व किल की परम्परा करवा कर मजबूत करना माना उस पाव व ऊपर नेमक छिड़वना था। अतः अकबर को चित्तौड़ ध्वंस करने और महाराणा को अपन आघात

---

१ यह घटना एतिहासिकता से पर है। शक्तिसिंह का महाराणा ने अकबर व पास नहीं भेजा था बल्कि कुछ बारगवज महाराणा से नाराज होकर व स्वयं ही अकबर व पास चला गया था। (स०)।

बग्ने की जिता हर समय रहती थी। मगर कुंवर शक्तिसिंह के हाजिर हो जान से कोई बहाना नहीं मिल रहा था।

महत् १६०४ (१५६७ ई०) में मालवा में उपद्रव होने की खबर आई। बादशाह बादवा बदि १२<sup>१</sup> को उस तरफ रवाना हुआ। धोलपुर में पहुँच कर मालवा के विद्रोहियों का दमन करने के उद्देश्य से उसने कहा कि हिन्दुस्तान के सब राजा और रईस हमारी दरगाह में हाजिर हो गये, मगर राणा अभी तक गफ्तगत की नींद में ही सो रहा है, सो थोड़े ही दिना में उसकी यह नींद घाड़ी की टापी से उड़ाई जावेगी।" और शक्तिसिंह की तरफ देस्य कर कहा कि 'तू इस घड़ाई में अच्छी सेवा करना।' शक्तिसिंह यह बात मख समझ कर उस रात को ही डर के मारे अपने राज्य की तरफ चल दिया, जिससे बादशाह को एक बहाना मिल गया और चित्तौड़ फतह करने का दृढ़ निश्चय करके उसने उसी तरफ बूच कर दिया।

महाराणा ने बादशाह की चित्तौड़ पर चढ़ाई के समाचार सुन कर उसकी चित्तौड़ पर आने के पूर्व दुर्ग में रमद और सना का सारा सामान एकत्रित कर लिया और शत्रुओं के लिए कठिनाइयाँ उत्पन्न करने के लिए अपना सारा राज्य क्षत्र उजाड़ दिया, यहाँ तक कि जंगल में घास का तिनका भी बाकी नहीं छोड़ा। और जब अपनी नीमा में बादशाह के पहुँचने की खबर सुनी तो मेढने के राव जयमल राठाड़ को ५००० मरन-भारन वाले राजपूतों के साथ किल में छोड़ कर स्वयं उदयपुर की तरफ चला गया। यह काम उसने इस उद्देश्य में किया था कि बाहर रहने से वह भीतर वाला का हर तरह की मदद<sup>१</sup> पहुँचा सकेगा। परन्तु ग्राम लोगो में उसका बड़ा यत्नाभी हुई, क्योंकि अब तक जिस तरह साव चित्तौड़ के ऊपर हुए उन सब में उसके पूवज बराबर उपस्थित रहे थे और मर कर ही उहान उस बिने का छोड़ा था। अतः हर एक व्यक्ति इस महाराणा से भी यही अपेक्षा रखत थे। महाराणा ने किल में एक ही जगह घिर कर मरना उचित नहीं समझा। बल्कि जहाँ जा व्यवस्था करनी चाहिये थी वहाँ पहुँच कर वह की। माडलगढ़ कुंभनगर और गागुदे के किलों का भी चित्तौड़ की तरह शम्भ्रा से सजाया और उनमें अपने विश्वास के अच्छे-अच्छे

सैनिका और राजपूता का रक्खा। किन्तु रणयभोर की तरफ से उमकी पहिले ही सताय था जो राज गुजन हाडा का सौपा हुआ था।

अबबर बादशाह धौनपुर से आगे बढ़ कर रास्ते में शिवपुर और कोटा को फतह करत हुए चित्तौड़ पहुँचा और किले को एक महाने में घेरा। इसकी ऊँचाई नापी गई तो दो काम की निकली।

फिर बादशाह ने महाराणा वं मुवाबत और दूसरे किला को फतह करने के वास्ते आसफ खाँ व साथ सेना खाना की। आसफ खाँ ने सब प्रथम भाइलगढ़ का घेरा। किलेदार राबत बल्लू मोल्गी ने बहुत बहादुरी के साथ उसका सामना किया। तब वह रामपुरा व ऊपर गया। वह गहर जल्दी ही फतह हो गया। वहाँ का स्वामी राज दुर्गा उज्जयपुर में महाराणा के पास चला गया।

दूसरा भला खाँ ने बहुत सी सेना व साथ उदयपुर पर चलाई की। महाराणा उससे लड़ कर कुछ भलमेर की तरफ चला गया। फिर उमन और दूसरे बान्शाही अमीरा ने महाराणा का बहुत बड़ा परतु कोई पता नहीं लगा क्योंकि वह इस समय भवाड़ छोड़ कर गुजरात का तरफ चला गया था। चित्तौड़ दुग के चारों तरफ बहुत सारे मारबं थे परन्तु उनमें से तीन बहुत बड़े थे—

- १ लाखौटा दरवाजे के सामने खास बान्शाह का मोरचा था और उसके अधिकारी हसन खाँ राय पीताम्बर दास और काजी अली बगदानी बगरह थे।
- २ दूसरा मोरचा मुजाअत खाँ, राजा टोडरमल और कामिअ खाँ का था और
- ३ तीसरा मोरचा आसफ खाँ और वजीर खाँ का था।

एवं इन दुग के सब सरदारों ने मिल कर माडा डोडिया को और दूसरी बार साहिब खाँ चौहान को भेज कर समझौते के लिये बातचीत करनी चाही। बादशाह ने यही कहा कि यदि राणा उदयसिंह उपस्थित हो जावे तो समझौता हो सकता है अन्यथा नहीं। यह बात किले वालों

के अधिकार के बाहर थी। इसलिये उन्होंने समझाने की आशा छोड़ कर लड़न मरन पर कमर बांध ली। वे हर रात किने की दीवारों पर ज़ूम कर बग़ुरों के ऊपर स तीर और बंदूकें मारा करते थे, जिससे बादशाही सना के आदमी और घाड़े बहुत अधिक मात्रा में मारे जाते थे। आ तीर गालिया और गोले शाही सैनिक किले पर मारते थे वे आधे तो रास्त में हट जाते थे। बादशाही अमीर अपने मोरचा से निकल निकल कर किले पर हमले भी करते थे। परन्तु ज़म ज़मीन पर रहने वाला का हाथ आसमान वाला पर नहीं पकच सकती है वम ही ये भा हमेशा घबरा कर पीछे चले आते थे। बान्शाह ने अपनी सेना के बचाव के वास्त मोरचा से किले की तरफ़ मानान बनान शुरू किये थे। यह एक पटा हुआ पेचदार रास्ता होता था जिसमें होकर सिपाहा अपने को बचात हुए किने की दीवार तक पहुँच जावे परन्तु किने के गोलदाज अपने निशान में बने चतुर थे। वे साबात बनान वाले मजदूरों और कारीगरों पर निशाना लगा कर ऐसे गोल मारते थे कि वे बिचारे जहाँ बँतहा भुन कर रह जाते थे। जहाँ गोला लगाने की जगह नहीं हाता थी वहाँ तारनाज़ और बंदूकची अपना कौशल दिखाते थे। बादशाह ने सब कारीगरों के वास्त चमड़े की ढालें बनवा दी थी ताकि काम के वक्त वे सिर के ऊपर रख लें। इस पर भी २०० आदमी प्रति दिन मारे जाते थे। मजदूरों प्रति दिन मरगा हाती जाती थी। काम करने के लिये आने वाले मजदूरों को मजदूरी के अतिरिक्त इनाम भी मिलता था। खच का कोई हिस्सा नहीं था। हम काय के लिये भारी मात्रा में धन व्यय हो रहा था। बहावत प्रसिद्ध है कि अत में बादशाह ने दमदमा के ऊपर मिट्टी डानेन वाता के वास्त एक टाकरी की एक अशरफी कर दी था। यह माना मजदूरों का जान की बीमत थी, जिसकी लाश भी टोकरों में माप हा किन वालों के जबूक तारा और गालिया में गिर कर दमदमे की उचाई से बढ़ाती था। चित्तौड़ी के नाम में वह अब तक मौजूद है।

अबुल फ़जल अबवर-नामा में लिखता है कि मिट्टी का मोल चाना और सान के बराबर हो गया था।

जब एक तरफ़ में साबात और दूसरी तरफ़ से सुरमें किले की दीवार तक पहुँचना, तब वहाँ प्रथम में १२० मन आर दूसरी में ८० मन बारूद भरा गढ़ी। बादशाह ने आदेश दिया कि सुरगा के पाछे सेना बमर बम कर गड़ा रहे। ज्यादा किले की दीवार उड़े, तुरत अंदर पहुँच जावे।



बुधवार पौस सुनी ७<sup>१</sup> को सुरगा म कुछ दूरी स आग पहिले एक सुरग उड़ी, जिसस किले का एक बूज लड़ने को त आदमिया सहित उड़ गई। अभी दूसरी सुरग म वत्ता नहीं पड़ी फौज किले की दीवार का गिरी हुई देख कर दौड़ पड़ी। तब न भी आग लो और व लोग जो आग बढ़े से जल कर मर गये म अथर्वस्था फल गया। इस सुरग की आवाज ५०-५० और दीवारा के पत्थर उड़ कर दूर २ तर गिरे। इसके आदमी किले के अंदर के और २०० बागशाह के मार गये बटे २ अग्रिवारी थे, जिनको बादशाह भी पहिचानता था। वर दूसरे मारचा की सेना लड़ने के निय आग बनी। राजपूत जनक कुशलता दिखाई। व दुश्मना स लड़त थे और गिरी हु भी मरम्मत करत जाते थे। यहा तक कि बहुत जल्दी उहान लखी चाडी दीवार बना ली।

उसी दिन आसफ खा के मोरच पर म भी सुरग दगा मिफ ३० आदमी किले वालो के मरे। इसर अतिरिक्त को नहीं हुआ।

अब बादशाह ने सुरगा की कायबाह छाड़ कर एक बनाने और मारचा बढ़ाने का आदेश दिया। किले के निशानेब की गोली बहुत कम चूकती था और उनका सनापति इसर निशानाबाज था कि जिस पर भी निशाना लगाता उसकी मार अपन सामने के मोरचे पर गालिया की वर्षा कर वहा निमी का प भी बठन नहीं दता था। यहा तक कि कारीगरा न प्राण के काम बंद कर दिया। बादशाह प्रतिदिन सवार होकर मारचा करता था। साथ ही जहा अवसर देखता वहा वृक्षा और पत्थर खड़ा होकर किले वानो पर गानी मारता था। उसकी गोना प्रा

१ सोमवार दिसम्बर ८ १५६७ ई०। उपयुक्त तिथि मुंश ने भ्रान्तिवश ही लिखा है। वस्तुतः माघ बदी १ १६२४ दिसम्बर १७ १५६७ ई० होना चाहिये। अरब्वर नामा ४० ५० ४६५ : (५०) :

जाती थी। एक दिन वह उस भोरचे में भी जा निकला और उसके अपूर्ण रहन की जानकारी प्राप्त कर वृक्ष की ओट में खड़ा हो गया। इसी समय इस्माइल ने पाँच अधिकारियों को गोली मारी। बादशाह ने भी उस छेद पर जहाँ से यह गोली आयी थी, निशाना लगा कर अपनी बंदूक चलाई। गोनी इस्माइल के गिर में लगी। वह मरा और उसकी बंदूक नीचे गिर गई।

इस्माइल के मारे जान से बंदूकची बहुत घबराये। जयमल राठोड़ द्वारा सात्वता दन पर उनको घेरज बघा और वे बस ही मुगला का शिकार करते रहे।

पुन राजा टाडरमन और कासिम खा ने एक बड़ा मावात तयार किया। उसके ऊपर अच्छे-अच्छे महल और मकान बने थे। उनसे शाही फौज का बड़ा बचाव हुआ। अब वे निभय होकर किले वाले पर तौर और बंदूक मारने लगे। अब लड़ाई रात दिन बराबर चलती रहती थी। सागो को खाने पान का समय नहीं मिलने से उनकी जान पर आ बनी थी।

चतुर्वदी १०१ को बादशाह की सम्पूर्ण सत्ता ने रिन के ऊपर हमला किया। गोला की मार से दीवारों में सूरख हो गये। किले वाले भी खूब लड़े। यहाँ तक कि लड़ते-लड़ते आधी रात हो गयी। उस वक्त वे आश्चर्यजनक कुशलता और काय धमता दिखा रहे थे। वे दुश्मना से लड़ते थे और दीवारों की दरारों में हर्द पास तल और लकड़ी भी भरत जात थे ताकि दुश्मना के पहुँचने पर उनमें आग लगा कर उनको पास नहीं आने दें।

राज जयमल राठोड़ प्रति दिन सभी मारचा का निरीक्षण करता था और लड़ने के लिये राजपूता का उत्साह और साहस बढता था। इसी काम में एक बार वह एक दीवार की दरार में स मशाल का रोशनी में बादशाह का भी नजर आ गया जो किले की तर्फ निशाना लगाय बठा था। उसी समय बादशाह ने एक सरदार का देखा जो हथार मग्री बबब पहिने पड़ा था। बादशाह अबवर ने उस पर अपनी बंदूक मशाम में गोना चनायी। और राजा भगवतनाम और शुजाअन का स कहा कि मुझे जान निजान

१ रविवार फरवरी २० १७६८ ई०। दुग पर अबवर का अधिकार मंगलवार फरवरी २४ १७६८ ई० का हुआ था। (स०)।

पर पूरा विश्वास है। यह गोली अवश्य निशाने पर लगी है।” खानजहा ने निवेदन किया कि “मैं इस व्यक्ति को बहुत बार इस जगह देखा है। यदि अब नहीं दिखाई दे तो सम्भव सेना चाहिये कि वह मारा गया।”

उन लोगों के ये विचार गहरी निम्ने। अबक की बंदूक की गोली से राव जयमल का काम तमाम हो गया। राव जयमल के मार जाने से किले वाले निराश हो गये। उन्होंने किले के बचन की आशा छोड़ कर जगह र औरता को आग में जलाना शुरू कर दिया क्योंकि उनकी इज्जत और आरत जालिम दुश्मना के हाथ से खराब नहीं हान देना चाहत थे। इस जीहर की जलती हुई आग बादशाही सेना में भी दिखाई दी। इसको देख कर कहा तरह-तरह के विचार हान लग। उसी समय राजा भगवतदाम ने कहा कि यह जीहर की आग है। हम जाना में यह परम्परा है कि जब राजपूत मरने का तयार हो जाते हैं तो अपनी मिया बच्चा को जीहर की आग में जला देते हैं। अतः इस आग से यह तो सम्भव सेना चाहिये की किले का कोई उत्तरदायी बड़ा सरदार मारा गया है।

तीन जगह पर जीहर हुआ। पहला मिमोनिया फत्ता जगावत के घर। दूसरा राठाठा के डेरे में और तीसरा चौहानों के मकानों में ईश्वरनाम के निरीक्षण में। इसमें सबको औरत आग में जीवित जल मरी।

जीहर के बाद राजपूतों को लड़ भरने के अतिरिक्त कोई काम नहीं था। अब वे जीने से निराश हो चुके थे।

उन्होंने किले के दरवाजे खोल दिये। शत्रुओं का प्रतीक्षा में घरा और मजिरे के दरवाजा पर नगी तलवारें लटकर बठ गयीं। अब फत्ता सिमादिया ने इस सेना का मनृत्व अपने हाथ में लिया। कसरिया कपड़े पहन कर उसने स्वयं भी खूब अमन पानी किया और दूसरे राजपूतों को भी कराया। यह उनकी अंतिम मनुहार थी।

रात का अंधरा तोपा बंदूकों और जीहर के धुएँ से डरावना हो गया था। दिन निकलने वाला था। वह प्रलय के दिन से कम नहीं था जिसका वास्तव हजारों अच्छे और बुरे मरदारा का कीमती जानें मौत का गन्तव्य रही थी।

ज्या ही दूर का तड़का हुआ। बाग़शाह की फौज ने किले में प्रवेश किया। बहादुर राजपूता ने अब उसका अपनी छाती की दीवारों से राका। यह रोक किले की दीवारा से भी मजबूत थी। सेना का भागे बढ पाना कठिन हो गया। जिम उरसाह से आक्रमण किया उस उल्हाह से भागे नहीं बढ पा रहे थे। जब बड़ी कठिनता से एक-एक वग़म भागे बढ रहे थे। उधर बादशाह को उदरसिह की सेना के आने का भय था। अतः बादशाह जल्दी में जल्दी दुर्ग में पहुँच जाना चाहता था। अतः सेना पर भागे बढने के लिये दवाब डाल रहा था परन्तु सेना आगे कैसे बढे ? उसको तो मृत्यु का सामना करना पड रहा था।

अतः में बादशाह अबबर ने हाथिया का महायता के बिना राजपूता का हगता असभव जान कर हाथिया को छोडने का आदेश दिया। उसी वक्त कई मस्त हाथी किले में छोडे गय। उनक पीछे पीछे स्वयं बादशाह भी सवार होकर चला। इन हाथिया न छूटने ही बहुत स आदमियों को रौंद डाला। परन्तु राजपूता का जार-शार उमसे कुछ भी कम नहीं हुआ बल्कि अब वे हाथियों से भी बस ही सबन लग जस भुगलो से लडने थे। उनकी उँसे वक्त की बहादुरी और वीरता का वग़न आज भी बहादुर और स्वदश प्रेमी लोगो के दिल में जोश पदा किय रिना नहीं रहता। जस-ईश्वरदास चौहान ने मधुकर हाथी के पास जाकर पूछा कि इसका क्या नाम है ? जब महायत ने नाम बताया तो एक हाथ से उसका दात पकड लिया और दूसरे हाथ से जमघर मार कर कहा कि क्यों गजराजजी हमारा भुजरा तुम्हार बदरदान बाग़शाह से कहाग ? इसी तरह एक और राजपूत एक हाथी को दख कर उस पर झपटा और तलवार मार कर उसकी सूड फाट दी। उस खूनी हाथी न सूड कट जान पर भी पद्मह राजपूता को मारा जय बीस का वह पहिल ही मार चुका था।

कुछ राजपूत मिल कर बादशाही फौज से लडने जात थे। गण्ड नामक हाथी लडाई के कोलाहन से चमक कर उन पर जा पडा और व सब उसम लड कर काम आये।

सबलिया नामक हाथी भी कई राजपूता का मार चुका था। उमका बदला सन के वास्ते एक राजपूत न दीड कर उसके सन्वार मारी।

उसने उस राजपूत को मूँड म लपट लिया । उमी क्षण दूसरे राजपूत ने भपट कर तलवार का एक हाथ मारा । हाथी उसकी तरफ दौड़ा । पहिल वाला राजपूत उसकी मूँड से निकल कर फिर सभला और उसने हाथी के एक तलवार मारी ।

ये सब १५० हाथी थे । जब इनसे भी राजपूत नहीं दबे तो बादशाह ने ३०० मस्त हाथी और छोड़े । इन हाथियों की रल-पेल से हजारों आत्मी पागल हो गये । अब राजपूतों को साधार पीछे हटना पड़ा । आखिर वे जब तक उन वालों बलाभा से बढत । उनका समूह तितर बितर हो गया । उनमें से कुछ तो मदिरो में मूर्तियों की सुरक्षा के वास्ते जा बैठे और बहुत से अपने मकानों के भाग नहीं तलवारे लेकर जा खड़े हुए और शेष एक स्थान पर एकत्रित हो गये जिनमें से दो-दो और चार-चार बरछे और बल्लम ल कर दुश्मनों पर जात थे और अनेकों को मार कर काम आते थे ।

हाथियों की कारवाई अब तक जारी थी और मुगल सैनिक उनके पाछे-पीछे भाग बल रह थे । फत्ता सीमोनिया ने इस सम्पूर्ण स्थिति को देखा तो भाग बल्ला हो गया । उसने अनेक बहादुर राजपूतों के साथ बढत हुए एक हाथी से माहरा किया । वह उसमें इतना लड़ा कि शत्रुओं से डर होकर जमीन पर गिर पड़ा । उसकी बचान के प्रयत्न में कई राजपूत मार गये । उस समय बादशाह गार्बिन ग्रामजा के मदिरे के पास पहुँचा था । उमी समय महाबत फत्ता का हाथी की मूँड में सपट कर भव्यर के पास लाया और राजपूतों की बहादुरी और शूर वीरता का सारा हाल अज किया । फत्ता कुछ समय बाद मर गया ।

फत्ता के मारे जाने से राजपूत जीरे भी उत्साजित हो गये तथा बड़ी तजी के साथ वे अकबर की मना पर तलवारा के प्रहार करने लगे । उनका दवाना कठिन समझ कर बादशाह ने कल्ल ग्राम का आदेश दे दिया । उस कल्ल ग्राम में निर्दोष प्रजा भी कल्ल हान लगी । इस प्रकार तढक से दोपहर तक ३० ००० आदमी रयत और राजपूतों में से मारे जा चुके । उसका बल लड़ाई बढ हा गई ।

पठान बंदूकची जिनके ऊपर बादशाह बहुत ही ओधिन था एक आश्चर्यजनक चानाका से जान बचा कर सुरक्षित निवल गये । जब शाही

फौज वाले बापों की मारने बाधा और मारने मुझे भी उसी समय उन्होंने अपनी हथौड़ी वज्जा का नुकीला भी तरह बाधा और मारती हुई तनवारा में सँकर चले बने। बाँही सनिक इन भ्रम में रहे कि ये हमारी ही सना व सनिक है जो किले वाला की स्त्रिया और वज्जा का बंदी बना कर नकर जा रहे हैं। ये सब ५००० व्यक्ति थे। विजय व बाट बाटशाह उनको क़दत ही रहे परन्तु उनका कुछ भी पता नहीं लगा।

या ता दिन में स्थान स्थान पर छादमा मारे गये थे परन्तु तीन जगह बड़ी भारी सन्ध्या में मर रहे थे। प्रथम महाराणा की छाना पर जहा बहुत से बहादुर और शूरवीर राजपूत थे जो दा-गो तीन तीन ग़ाहर निचन कर रहते रहे थे। दूसरे महान्व जी के मंदिर में और तासरे रामपुरा दरवाज पर।

छ महीन में अनवर बाटशाह चित्तौड़ दुग पर अधिचार कर पाया था। भलाउदान खिलजा ने भी तदन समय में अर्पान छ महीन और सात दिन में—श्रावण सुनि ५, १३६१ वि०<sup>१</sup> का दुग पर अधिपत्य जमाया था। उसक समय में इतन अधिच व्यक्ति उही मारे गये थे, जितन अनवर जम पुन स डरन वाल व समय में मार गये।

एसी राज मायता प्रमिद्ध है कि उक्त साका बहुत बड़ा हुमा था। उसमें इतन अधिच व्यक्ति मार गये थे कि उनक शरीर स ७४॥ मन जनऊ उतर थे। उस दिन स ७४॥ का जन तनाव हा गया है। वह पत्रा व लिफाफा पर लिखा जाता है ताकि गर बाटभी छाल कर न पन सके जो पड़े ता उमका चित्तौड़ मारन का पाप नग।

चित्तौड़ मारन व पाप का शपथ भी उसी वक्त से चली है। अगर किसी का किसी काम का कर्न स राकना हाता है ता कहते है कि जा तुम ऐसा करोगे ता तुमका चित्तौड़ मारने का पाप लगगा।

---

१ बुधवार जुलाई ८ १३०४ ई०। चित्तौड़ पर बलाउदान खिलजी का अधिचार सोमवार अगस्त २६ १३०३ ई० को हुआ था। यजानुन फ़तुह (अफ़ेजा अनुना पृ० ८८) (स०)।

यह अत्र तब किसान का नहीं मासूम हुआ है कि वह कौन ऐसा निर्दयी आदमी था जिसका उम्र वत्त इन जनेउआ का उतारने और तालन का समय मिला था ।

बादशाह तीन दिन चित्तौड़ में ठहरा था । चौथे दिन आसफ खा का किले में छाड़ कर अजमेर की तरफ चला गया । वहाँ उसने चित्तौड़ की सूट में से एक चादी का दीपक, भांड और एक बड़ा नक्काश ख्वाजा साहिब की दरगाह पर चढ़ाया ।

इस सारे से राजपूतों का नाम दुनिया में रोजन हो गया । मित्र शत्रु ने उनकी बहादुरी और साहस की प्रशंसा का जिसके लिये हमने बादशाहों तबारीखा में विवरण का अधिक विवरणनीय समझ कर उहाँ का यह खुलासा लिखा है ।

बादशाह के लौट जान का खबर सुन कर महाराणा गुजरात से मवाज आया । चित्तौड़ का भागी हुई रयत जो उदयपुर में आकर बसा थी उनका सात्वता दी और देवारी के घाटे को मजबूत किया ताकि मुगलों की फौज नहीं आ सके । तदनंतर कुभलगढ़ में जाकर अपने कबीला से मिले और बहुत दिनों तक चित्तौड़ जाने के निय प्रयत्न करता रहा । परंतु बादशाह ने वहाँ सुरक्षा की पूरा व्यवस्था कर रखी थी । अतः महाराणा का कोई अवसर नहीं मिला ।

सन् १६२५ (१५६९ ई०) में अक्टूबर बादशाह ने रणथम्भार दुर्ग का घेरा । आन्तर के राजा भगवतदाम के माध्यम से बादशाह से मिल कर राव मुजन से किला सौंप लिया । महाराणा का स्वामित्व और महायता को भूत कर उनसे बादशाह की सेवा स्वीकार कर ली । अपने नियमों का शर्तों की उनसे एक यह भी थी कि महाराणा में नदन के वास्तव वह नहीं जावगा । परंतु राव मुजन ने महाराणा का किला रणथम्भार बादशाह को दे दिया जिसके कारण उसको किसी ने धन्य नहीं कहा ।

अब हम यहां वह विवरण भी लिखे देते हैं जो कुछ अंतर के साथ अक्टूबर बादशाह और नूदी की तबारीख में लिखा गया है ।

‘अकबर नामा’ में लिखा है कि वह किला सनीमशाह मूर व गुनाम जूभार खा के पास था। जय अकबर बादशाह का राज्य हुआ तो उसने यह मोचा कि अब किना भरे पास नहीं रहे मकेगा अब किसी दूसरे आदमी का साथ कर वह स्वयं अलग हो जाव। वहां से कुछ दूरी पर ही राणा उदयसिंह का सबर राव मुजन रहता था। जूभार खा ने वह (रणयभार) किला जमावा बेच दिया। राव मुजन ने वहां अपने रहने के लिये महल बनवाय और सम्पूर्ण क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। बादशाह ने सबत् १६१५ (१५५८ ई०) में हबीब भली खा को कुछ सेना के साथ भेजा था। राव मुजन ने किले के भीतर से दसवें समय तक लड़ाई की फिर बराम खा वजीर का काम विगड़ जाने से वह मुगल फौज वहां से उठ गई और दुग पर अधिकार नहीं हो सका।”

मुन्तखुदुत्त तवाराख ‘म मुल्ता अब्दुल कादिर (बन्यामी) ने लिखा है कि वह किला अदली के गुनाम सम्राट खा के पास था। अकबर बादशाह ने वहां पर बठन के कुछ दिना बाद हिंदू वेग बगरह कई अमीरों का उस पर भेजा, मगर कुछ काम नहीं निकला। फिर हबीबुल्ला खा का भेजा गया। वह एक वर्ष तक किले का घेर रहा। जतन में मघाम खा ने कहलाया कुछ खज मुक्त दो ता मैं किला सौंप दू। बादशाही अमीरों के पास स्पष्ट नहीं था। इस लिये कुछ दिनों के बाद अपने का बाला कर उन्होंने घेरा उठा लिया। परंतु स्पष्ट नहीं पहुँचा और उधर मघाम खा ने देखा कि कभी न कभी यह मुझ से छीन लिया जावगा। इसलिये उसने यह किला बहुतसा स्पष्ट लेकर राव मुजन को बेच दिया। उसने किलेगारी का मामान और बहुत सा सना नया करके आम पान के परगने भी दवा लिये।

फिर हबीबुल्ला खा बगहर अमीर भी कुछ समय तक रणयभोर के लिये जूभार करके अपनी अपनी जमीन में चले गये।

स० १६१५ में हुसन खा बगरह कई प्रसिद्ध अमीर रणयभार के उपर तनात हुए। उन्होंने शिवपुर पहुँच कर बड़ा लड़ाई का जिम्मे राव मुजन का मुकामिने में हट कर किन के अन्त जाना पडा। जमा समय पैगाम खा का काम विगड़ जाना से वे नाग घेरा छोड़ कर ग्वाजियर का चले गए।



बूंदी की तबारीख बश-भास्कर म लिखा है कि "सामंतसिंह हाडा बूंदी के राव मुरताण स अप्रसन्न होकर सताम शाह (सूर) के पास चला गया था । बान्शाह ने उसको रणभार का किलदार बना लिया । सवत् १६११ म राव मुजन बूंदी का स्वामी हुआ । तब सामंतसिंह ने उसका लिखा कि अब यह किला अपने अधिकार म कर लेना चाहिये । राव मुजन स० १६२० (मृ १५६३ ई०) म सना लेकर रणभार पहुँचा और मिले पर अधिकार करके सामंतसिंह का ही अपनी तरफ स वहा रखा । जब राव मुजन न यह किला बादशाह का मौफा तो सामंतसिंह ने इस स्वाकार नहीं किया । वह लडा और मारा गया । तदनंतर हा रणभार पर बादशाह का अधिकार हुआ ।

उपयुक्त विभिन्न बराना का भावाय तो एक ही है परंतु विवरण और बर्णों (ममय) म भिन्नता है । ऐसा अंतर तबारीखा म प्राय हुआ करता है ।

(जसलमेर के) रावल हजाराज ने अपना पुत्री का विवाह राणा उदय-सिंह से करने का तय किया था परंतु बाद म अपना निश्चय बर्तन दिया और उक्त बर्तन का विवाह बान्शाह (अकबर) स करना चाहा । लडकी को यह स्वीकार नहीं था । उसने महाराणा का कहलाया कि 'मुझे इस नक म जाना मजूर नहीं है' । इस पर महाराणा सवत् १६२० (१६६९ ई०) म कुछ सना लेकर जसलमेर का खाना हुआ । मगशिर सुदी ३<sup>१</sup> का भाद्र-पूत म मारवाड का राव चंद्रसन भा उसके साथ हो गया । बान्शाह न रावल का महाराणा से लडाई करने का आदेश दिया था । अत राणा उदय सिंह जब जसलमेर पहुँचा तो रावल न दुग के द्वार बंद कर निय और लडने की तयारी की । लेकिन रावल ने यह बहाना बनाया कि आप (महाराणा) बिना बुलाय गये, इस कारण मैं शांति नहीं करता । महा राणा के पास किला ताडन का मामान नहीं था । इसलिए पीछे पीट आये कि पुन अधिक फौज और तोपखाना लेकर जाय । पीप बदा ११<sup>२</sup>

१ शुक्रवार नवम्बर ११ १५६९ ई० ।

२ रविवार दिसम्बर ४ १५६९ ई० । चंद्रसन ने अपनी लडकी का विवाह पीप सुदी १ १६२६ वि० तनुमार शुक्रवार दिसम्बर ९ १५६९ ई० का किया था । मारवाड परगना की विगत भाग १ पृ० ६० । (म०) ।

को भाद्राशून पट्टेच कर राव चन्द्रसेन ने अपनी लड़की कमवती बाई का विवाह महाराणा से कर दिया। महाराणा राठोड राणी को लेकर उदयपुर गए।

बागशाह खबर सुन कर दूसरे वष अर्थात् मवत् १६२७ (मन् १५७० ई०) में उदयपुर जोधपुर और बीकानेर के राजाओं पर निगरानी के वास्तु कई महान तब अजमेर और नागौर में रहा और जब वहाँ गव चन्द्रसेन और राव बन्याणमल उपस्थित हो गए तो निर्भीक होकर बागशाह मुलतान के भाग में लाहौर चला गया और साम्बर के राजा भगवत्संग को जैमसमेर भेज कर डोला मगवा लिया। इस तरह बादशाह के विरुद्ध राठोड-सीसोदिया का एक करन का महाराणा का उद्देश्य बागशाह की बुद्धिमत्ता के कारण पूरा नहीं हो सका।

महाराणा अपने जीवन के अन्तिम दिना में गोगुदा रजता था और वही फागुण सुदी ११ १६२८ वि०<sup>१</sup> को उसकी मृत्यु हो गयी। उसमें अपनी ५० वर्ष की अवस्था में प्रारम्भ से अत तक जमाने का बहुत सा अच्छा बुरा हान देखा फिर भी उसमें कोई सीख नहीं ली। यही कारण था कि अपने पिता की तरह वह भी मरत वक्त अपने पुत्रों के लिये भगडा छोड़ गया। परन्तु मरदाराने बुद्धिमत्ता से उसी वक्त उसका मिला दिया नहा ता मवाद का राज्य बाहरों दुश्मना में ज्यादा बृह-करह से ही विनष्ट हो जाता।

महाराणा उदयसिंह की औलाद से सीमानिया में एक नयी खाप (शाखा) राणावता का प्रारम्भ हुई वही अब तक राज्य का उत्तराधिकारी समझी जाती है।

महाराणा का उच्च कुल हान के कारण उसका विवाह लगभग प्रत्येक उच्च जाति के राजपूतों के यहाँ हुआ था। परन्तु उनकी राणियाँ और सताना की गिनती में अनेकता मिलती है। एक वर्ग उन दूसरे से विभक्त है। टाउ न महाराणा के पुत्रों का मर्यादा २५ तक लिखी है। उसमें से

- 
- १ रविवार फरवरी २४, १५७२ ई०। उपयुक्त तिथि नहीं है।  
 उदयसिंह की मृत्यु फागुन सुदी १५ तदनुसार शुक्रवार फरवरी २८ १५७२ ई० का है। आभा. जयपुर. १ पृ० ६२१। (प०)।

महाराणा का कुंवर जगमाल से जा बीरानेर के राव लूणकगंग का नवामा (दाहिने) था, बहुत स्नेह था। अतः अपने अंतिम दिना में उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र प्रताप के स्थान पर जगमाल को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। और मरने के समय सरलांग और अमीरा से भी उसको गद्दा पर बठान के वास्तु कहा। उदयपुर में परम्परा है कि एक राणा के मरते ही दूसरा गद्दी पर बैठ जाता है। फिर उसकी स्वीकृति मिलने पर ही म्बर्गीय राणा को बाह्य संस्कार के वास्तु से जाते हैं। अतः जगमाल भी इसी परम्परा के अनुसार गद्दी पर बैठ गया। जब महाराणा का गद्दा संस्कार के वास्तु में गया तब अखराज मोनगरा ने रावत किशना से कहा कि भना। आपने बहुत हाकर यह अयायपूर्ण काय करवा रखा है। उसने जबकि दिया कि जब एक बीमार जा मरने का था तूध माया तुमने क्या नहीं दिया? अखराज चुप हो रहा। लेकिन वहाँ से सौट कर रावत किशना और गालियर के राजा राममाह रमाद घर में पहुँच। वहाँ प्रत्यक्ष न एक-एक हथियार जगमाल का ले लिया और धारे से उसका गद्दा के सामने ला बैठाया और कहा कि आपका स्थान यहाँ है। आप गलती से अपने भाई की जगह बैठ गये थे। प्रतापसिंह को जो बाहर जान के वास्तु छोड़े पर जीन कम रहा था लाकर कमर में तनवार बांधी और गद्दी पर बैठा कर सब ने वशा मनाई।

जगमाल अक्टूबर द्वाग्राह के पास चला गया। बादशाह ने उसे सम्मान रखा। उसका विवाह सिरौही के राव मानसिंह की पुत्रा में हुआ था। इसी वर्ष स. संवत् १६३८ (सन् १७८१ ई०) में जब बादशाह ने राव मानसिंह के उत्तराधिकारी राव मुरतार को गद्दा में हटाया तो सिरौही राज्य जगमाल का प्रदान किया। जालारी एतमाद खा और राव रायसिंह राठाड़ को उसका मन्त्र पर भजा। उन्होंने जगमाल का राज्याधिकार सिरौही में करवा दिया। मुरतार आबू की तरफ चला गया। फिर एतमाद खा तो जालोर में उपद्रव होने की खबर सुन कर वहाँ गया। जगमाल मुरतार देवडा को निकालने का प्रयत्न करने लगा। वार्षिक सुन्ना ११ १६४०<sup>१</sup> का रकम केरा गाव दत्ताणी में था। वहाँ प्रकाए राव मुरतार ने आनमग किया। तब जगमाल और राव रायसिंह उसमें लड़ कर वहाँ पर काम आया।

जगमाल का जन्म जापाड वदी ५ १६११ वि०<sup>१</sup> को हुआ था। उसके पुत्र रामसिंह जीर श्यामसिंह बगैरह थे।

राव रायसिंह राठोड के वर में तो जोधपुर के राजा उदयसिंह और मूरसिंह ने कई बार सिरौही को लूटा। राव मुरताण के कई भाई-भतीजा का पक्ष और मारा। इसी कारण सम्वत् १६५२ (१५९८ ई०) में राव मुरताण ने हार कर राजा मूरसिंह का बंदी देना करके सुलह कर ली। परंतु जगमाल के खून के वास्ते महाराणा प्रतापसिंह ने राव मुरताण से कुछ भी नहीं कहा बल्कि अपनी पौत्री का विवाह और उससे कर दिया। इस बात से सगर ओ जगमाल का सगा भाई या बुरा भान कर अन्धबरा बान्शाह के पास चला गया। बाहशाह ने उसको राणा का खिताब दिया। बान्शाह उसका चित्तौड़ का राज्य भी देना चाहता था परंतु मल्लनत के दूमर आवश्यक कार्यों में अवन्यास नहीं मिल पाया। उसके बाद जब जहागीर बादशाह गद्दी पर बठा तो राणा सगर ने मवाड को विजय करना बहुत सुगम बता कर महाराणा अमरसिंह के ऊपर चलाई कराया। जहागार बादशाह की मगर के ऊपर बहुत कृपा थी। उसने चित्तौड़ नागौर और अजमेर बगैरह कई धरगने उसका दिये थे। सम्वत् १६७१ (१६१५ ई०) में महाराणा अमरसिंह ने शाहजाना सुरम के पास उपस्थित होकर बादशाही आश मान लिया था। बादशाह ने चित्तौड़ और राणा का खिताब मगर से वापस लेकर महाराणा को दिया और सगर का रावत का खिताब देकर पूव में जागीर दी। सगर ने पुष्कर में बराह का मन्दिर बनाया जो अब तक विद्यमान है। उसका जन्म भाद्रपद सुदी ३ १६१३ वि०<sup>२</sup> का हुआ था। उसके पुत्र हिंदूसिंह और मानसिंह बगैरह थे।

शक्तिसिंह महाराणा जयसिंह का द्वितीय पुत्र और टांडा के राव पृथ्वीराज मूरमेनात का नवामा (दाहिने) था। वह अपने पिता के जीवन काल में अन्धरा बादशाह के पास रहा करता था। उसका महाराणा प्रताप सिंह में मनमुटाव था। मगर जब सम्वत् १६३३ में महाराणा प्रतापसिंह ने बादशाह से सना में जा बुकर मानसिंह के लछवाहा के नृत्य में मवाड पर

१ सामवार मई २१ १५५४ ई०।

२ शनिवार अश्वस्त ८ १५५६ ई०।

चर कर आयी थी युद्ध करन पराजित हुआ और दो मुगल महाराणा को मारने के लिये उनके पीछे दौड़े, तब शक्तिमिह के दिल में भावुकता का स्नेह उमड़ पड़ा यद्यपि वह उस समय शाहा सेना के साथ था। और वह भी उन सवारों के साथ हो गया। भाग में उन मुगल सवारों को मार कर महाराणा से मिला। महाराणा उसके इस कार्य से बहुत खुश हुआ और उसको राणा बलराम का खिताब दिया। उसके वश में भी एक बड़ी खास शक्तावत सीमोनियों की है।

महाराणा उदयसिंह के अग्र पुत्र विशेष प्रसिद्ध नहीं है।

टाड ने अपनी पुस्तक में महाराणा उदयसिंह की बहुत बुराई की है। उनसे हमारा कोई संबंध नहीं है, क्योंकि अपनी र राय है। फिर भी उससे जा भूलें हुई हैं व अवश्य ही ध्यान देने योग्य हैं।

जब उसने महाराणा उदयसिंह के वास्तव लिखा है कि वह राणा सांगा का बेटा था जो उसके मर पीछे पटा हुआ था (पृष्ठ ३३१ तरजुमे टाड राजस्थान नवल विशार के छाप खाने की छपी हुई) और बनबीर की गद्दी नशानी के वक्त ६ वर्ष का था। बारी उसको भेव की टोकरी में पत्ता से छुपा कर ले गया। वह मोया हुआ था। धाय उसको लेकर कुभलमर पहुँची। वहाँ के हाकिम आशामाह ने भानजा बना कर रखवा और ७ वर्ष तक वहाँ छुपा रखा (पृ० ३३६)। उदयसिंह सन् १५९७ (मन् १५४१ ई०) में गद्दी नशीन हुआ (पृ० ३३९) और उसी साल (१५४२) में अकबर भा पैदा था (पृ० ३४०)। सो यह बिलकुल गलत है क्योंकि महाराणा उदयसिंह अपने पिता के जीवन काल में उसके मरने के ८ वर्ष पहिले भाद्र पत् सुटा ११ १५७८ वि०<sup>१</sup> का पत्ता हुआ। वह बनबीर के मिहासनाहट होने के वक्त १४ वर्ष का था। महाराणा सांगा के अपने जीवनकाल में उसका और उसके बड़े भाई विक्रमाजीत को रणथम्भोर का किला द दिया था और वे वहाँ रहते थे। महाराणा रतनसिंह के वक्त में चित्तौड़ आग्र और राणा बिक्रमाजीत ने उनका कुभलमर का किला दिया था। उदयसिंह एक बार मुलतान बहादुर गुजराती के पास भी गया था। बनबीर के समय में

१ मगनवार अगस्त १३ १५२१ ई। टाड राजस्थान

आक्रमण मस्वरण० पृ० ३६१ ३६७-९।

उमकी आशामाह का भानजा बनन का कोई आवश्यकता नहीं थी और न ही वह इस तरीके से छुप सकता था ।

दूमरा उदयसिंह का राजसिंहासन पर बठन और अकबर बादशाह के जन्म का वष एक ही नहीं हैं क्योंकि अकबर बादशाह का जन्म महाराणा के गद्दी पर बठन के करीब दो वष बाद नातिक मुनी ७ स० १५९९ वि०<sup>१</sup> का हुआ था । तीसर उमन (टाट) महाराणा की आयु ४२ वष लिखी है । वह भी गलत है, क्योंकि महाराणा की ५० वष की अवस्था में मृत्यु हुई थी । पत्ता सीमादिया का १६ वष की आयु में काम जाना लिखा है परन्तु उस समय उमकी आयु इससे कहीं अधिक था । उसके कई पुत्र हुए थे जिनमें से तान जयात् बल्ला शखा और करण महाराणा प्रताप के विपत्ति-काल में मार रहने के योग्य हुए थे ।

---

## (६) महाराणा प्रताप

### सोरठा

हिंदूपति परताप पत राखी हिंदूवान की।  
सह विपन सताप सत्य शपथ कर आपना ॥

महाराणा प्रताप का जन्म जेठ सुदी १३ सं० १५७६<sup>१</sup> का हुआ था। फागुण सुनी १५ सं० १६२८<sup>२</sup> को गाव गोधुदा में वह गद्दी पर बठा। इस उत्सव में शामिल होने के लिये जाधपुर का राव चंद्रसन भी आया था। चार महीने बाद शाह अकबर ने गुजरात फतह करने के लिये चढ़ाई की। वह श्रावण बदा ७<sup>३</sup> का फतहपुर से रवाना होकर अजमेर मेड़ता और नागार

- १ मुशा देवी प्रसाद ने उक्त तिथि 'अमर काव्य' के आधार पर दी है परंतु सही तिथि ज्येष्ठ सुदी ३ है। तन्नुसार सोमवार मई १० १५४० ई०। नरसी० १ पृ० ६८ परगना० ३ पृ० ३४१ ओभा० प्रताप०, पृ० १ महाराणा० पृ० १०। (स०)।
- २ गुन्वार फरवरी २८ १५७७ ई०। बीर०, २ पृ० १४५ १४६।
- ३ बुधवार जुलाई २ १५७२ ई०।

हाता हुआ तीन महीन बाद भगमर वदी १०<sup>१</sup> को मिरोही पहुँचा। इस बीच म महाराणा ने अपन राज्य की सुरक्षा के वास्ते सना एकत्रित कर ली थी। उमना यह भी विचार था कि जब बादशाह गुजरात पहुँच कर वहाँ की लड़ाइयाँ में व्यस्त हो जावंगा, तब उसके अधिकार क्षेत्र पर घावा करके मवाड की लूट-मार का बदला लेगा। इस बात का पता बादशाह को चल गया। इसीलिये जब वह सिरोहा से गुजरात को जान रागा तो बीकातर के राय रायसिंह का एक विशाल सना देकर उसकी नेख-भाल व लिये मारवाड में छोड़ गया। और जोधपुर जो इस समय छालमा (बादशाही साम्राज्य) में था रायसिंह को उसकी जागीर में द दिया। अब अबुल फजल ने इस सम्भ में महाराणा का नाम अकबर नामा में नहीं लिखा है। लेकिन निजामुद्दीन अहमद ने अपनी पुस्तक तबकात-इ अकबरी में इस तरह लिखा है कि 'इस मजिल (सिरोही) पर बादशाह ने यह उचित समझा कि अपने सेवकों में से एक को जोधपुर में नियुक्त करे ताकि उस सीमा का मजबूत कर गुजरात का भाग प्राप्त रहे जिससे राणा बीका से किसी को नुकसान नहीं पहुँचाने दे। यह काम रायसिंह बाकानरी को मिला। बहुत से बादशाही नौकर उसके साथ नियुक्त हुए। उस सूबे के अमारो और जागीरदारा का नाम आदेश हुआ कि जिस वक्त रायसिंह किसी काम के वास्ते जावे ता उसका सहायता के निये उपस्थित हो जावें।' अबुल फजल का लिखना है कि इस मजिल में रायसिंह और दूसरे बहुत से साथ वाला को आदेश हुआ कि जोधपुर और मिरोही की सीमा में रह कर देखने रह कि बिद्राही लोग गुजरात में निजल कर बादशाही मंत्र में कोई उपद्रव नहीं करने पावें।<sup>३</sup>

इस व्यवस्था के बाद बादशाह गुजरात पहुँच कर लगभग एक वषर रहा और इस अरसे में सम्पूर्ण गुजरात विजय करके जब वहाँ से वापस लौटा तब पहिले ज्यष्ठ सुनी १०<sup>४</sup> १६३० वि० को भगमर और दूसरे ज्यष्ठ सुनी ४<sup>५</sup> को पतटपुर में अकबर ने प्रवेश किया। परंतु तीन महीन बाद उस पुन वापस गुजरात जाना पडा।

१ गुजरात अक्टूबर ३१ १५७० ई०।

२ तबकात० (अ० अ०) २ पृ० ३७३।

३ अ० ना० (अ० अ०) ३ पृ० ८।

४ बुधवार मई १३ १६३३ ई०।

५ बुधवार जून २, १५७३ ई०।



कु वर मानसिंह का मेवाड में आना —

“अकबर नामा” में लिखा है कि बादशाह न फतहपुर को लौटते समय आम्बेर के राजा के पुत्र कु वर मानसिंह और राजा गोपालसिंह और जगन्नाथ दगरह अमीरो का आदेश दिया कि डूंगरपुर और ईडर का जागीर-दारा को आधीन करते हुए आवे। इसलिये कु वर मानसिंह उधर का काम पूरा कर फतहपुर जाते हुए उदयपुर के पास पहुँचा। महाराणा ने उनकी अगवानी की। बादशाह का खिलजत पहना और कु वर को अपने घर ले जाकर प्रकट में तो बड़े प्यार से महमानदारी की परन्तु वास्तव में धाखा करने की उसकी इच्छा थी। लेकिन उसके शुभेच्छुका ने उसे ऐसा करने नहीं दिया।

राणा ने बादशाही दरबार में उपस्थित हान का नये कुछ इक्कार और कुछ बहाना करके मानसिंह का खाना किया और वह भी सरकार सम्मान करके चला आया।<sup>१</sup>

राज प्रशस्ति में लिखा है कि भाजन के समय मानसिंह और राणा का मध्य आपस में मन मुताब हो गया जिससे मानसिंह बहुत नाराज हुआ बादशाह के पास गया।<sup>२</sup>

टांड राजस्थान में इस अप्रमत्तता का बख्त अधिक स्पष्ट कर दिया गया है। वह इस प्रकार है कि जब खाना (भाजन) आ गया तो मानसिंह ने कु वर अमरसिंह से पूछा कि राणा नहीं आये। कु वर ने कहा कि उनके सिर में दर्द है। कु वर (मानसिंह) ऐसा मुख ता था नहीं जो इस बहाने का नहीं समझ सकता। उसने कहा कि मैं सिर में दर्द हान का कारण अच्छी तरह जानता हूँ पर तु इसका कोई इलाज नहीं है। भला यदि हिंदूपति (महाराणा) मरी मनवार नहीं करे तो कौन करेगा?

महाराणा ने देखा कि जब भेद खुल गया तो अब विशेष आपत्ति करने में कोई लाभ नहीं है। इसलिये स्पष्ट कहला भजा कि मुझसे भी आपके अकेले ज्ञान का बड़ा दुःख है मगर क्या कर आपन तुझ से विशेष मिलजोल करके अपनी राजपूती परम्परा का छाड़ दिया है।

१ अ० ना० (अ० अ०) ३ पृ० ५७।

२ राज प्रशस्ति मय ४ श्लोक २१ २२।

‘इसमें कुछ बर मानसिंह नाघित हो उठा। अतः ‘उमने भाजन के हाथ नहीं लगाया बल्कि कुछ दान चावल के उठा कर पगड़ी में रख लिया और चलन समय महाराणा से जो उसकी पहुँचाना आ गया था कहा कि ‘यदि मैं तुम्हारी शेखी न भाड़ दूँ तो मेरा नाम मान नहीं है।’ महाराणा ने नम्रता से जवाब दिया। क्या डर है ? जमे मिनते हो जैसे हमशा हमसे मिलत रहना। उस वक्त किसी ने गुन्नाखी करके यह भी कह दिया कि आपन पूजा अकर को भी लेन घाना भूतना नहीं।’

जिस जगह पर यह भिजमाना हुई थी वह अपवित्र समझ कर खुदाई गई। मवाद के सामन्ता ने भी शुद्धिररग के लिये स्नान किया और वस्त्रादि धुएँ।<sup>१</sup>

मुहल्लान नगमी की रियासत में लिखा है कि ‘राणा ने मानसिंह का आना सुन कर मोनगरा मानसिंह अखराजोत और डोटिया भीम का भेज कर बहुत सी बातें शिष्टाचारी का कहलाई। परन्तु दूँगरपुर के रावल महममन ने मानसिंह का रीत भात दंग कर कहला भजा कि ‘आप इसमें नहीं मितें। यह आदमा तरहगर (बाका) है। राणा ने उनकी बात नहीं माना और पशवान् करके मिला। भाजन के समय नाराजी हुई। मानसिंह बादशाह के पास गया और राणा के ऊपर मुगला की चढ़ाव्या शुरू हुई।<sup>२</sup>

अबबर बादशाह का गुजरात पर दूसरा आक्रमण और राजा भगवतदास का महाराणा से मिलना —

बादशाह ने एक बिद्रोही मिर्जा मुहम्मद हुसैन ने उपद्रव करके बादशाही भूबन्गर का अहमदाबाद में घेर लिया। बात्ताह भासा वली ११, रविवार १६३० वि०<sup>३</sup> को तज चलन वाली साइनिया पर सवार होकर नौ दिन में ३००० मवारा से अहमदाबाद पहुँचा। दूसरे दिन लहारी के पक्षान में विद्रोहियों के ३०,००० मवारा का हरा कर अहमदाबाद में प्रवेश किया। अगले कुछ दिनों बहा ठहरा और आगरा के लिये खाना हान के पूरे आम्बर

१ टाइ राजम्यान०, (जा० सं०), १ पृ० ३९१-३९२।

२ नगमी (प्रतिष्ठान) १ पृ० ८८।

३ जगन् २३ १५७३ ई०।

४ मिनमर २ १५७० ई०।

के राजा भगवतदास की ईडर के माग स मेवाड होकर आन और उस तरफ के सभी सरदारा का आधान करन का आदेश दिया । राजा भगवतदास ईडर होकर मेवाड में पहुँचा । महाराणा गोगु दे में पशवाई करके राजा का अपने निवास स्थान पर ले गया । पूरा साज सज्जा के साथ उसका आदर मत्कार किया । राजा के बिना हो क समय अपन योग्य पुत्र अमरसिंह का साथ भेजा और कहा कि अभी तो आप इसका ले जाओ । जब मर दिल का सवाच दूर हो जावेगा तो मैं भी दरगाह में उपस्थित हो जाऊंगा ।

राजा भगवतदास कार्तिक सुदी<sup>१</sup> में बादशाह के पास पहुँचा और कुवर को बादशाह से मिलाया ।<sup>२</sup>

### राजा टोडरमल बजीर का आना —

उही दिना बादशाह ने राजा टोडरमल बजीर को गुजरात की जमाबंदी के वास्तु भेजा था । लौटते वक्त वह मेवाड के माग स लौटा । माग में महाराणा गोगु दे आकर उससे भी मिला और बहुत शिष्टाचारी की ।

### अकबर और महाराणा की राजनीति —

उपयुक्त वगन से स्पष्ट हो जाता है कि अकबर बादशाह ने चार वर्ष तक महाराणा का अपना अधीनता स्वीकार कराने के लिये शन शन प्रयत्न किये । कुवर आनसिंह बगरह हिंदू जमारा को ईडर की तरफ स आन का आदेश देने का उद्देश्य यही था कि महाराणा को समझा कर अपन साथ खरवार में लावें और उससे भी शाहों सवा स्वीकार करावें ताकि सम्पूर्ण राजपूताना में उसका अधिकार हो जाव । यह बात महाराणा प्रतापसिंह के स्वभाव और इच्छा के बिल्कुल विरुद्ध थी और वह किसी भी स्थिति में नहीं चाहता था कि महाराणा सांगा का वह पौत्र बाबर के पान के समक्ष सिंग झुकवे । इसीलिये वह हर बार बादशाही सेवा के सदशों को धाता

१ नवम्बर १५७३ ई० ।

२ कुवर अमरसिंह का साथ जाना साबित नहीं होता । यह कवल अनुमान के बल पर आधारित है । जब किसी भी ग्रंथ में इसकी पुष्टि नहीं होती । [अ० ना० (अ० अ०) ३ पृ० ९२] (म०) ।

ही बातों में टालता रहा था। उसने दिल में चित्तौड़ छिन जाने का घाव क्या कुछ कम था, जो अब बादशाह की सेवा स्वीकार करके उसके ऊपर नमक छिड़कता। वह तो उसी को पुनः प्राप्त करने की चिन्ता में था, न कि और अपनी स्वतंत्रता और रही सहा बात भा खो देता।

टाड ने लिखा है कि “महाराणा ने चित्तौड़ के शोब में अच्छे वस्त्र पहनना छाड़ दिया। डाढ़ी रखना जमीन पर मोना नगाड़ा सना के पीछे रखना और पत्ता में भाजन करना प्रारम्भ कर दिया था। यही नियम अपने उत्तराधिकारियों के लिये भी बना दिया था और कहा कि जब तक चित्तौड़ गढ़ पर पुनः अधिकार नहीं हो जावे वे भी इस नियम का पालन करें।”<sup>१</sup>

भानसिंह की चढाई —

बादशाह ने तीन बार अपने प्रतिनिधि भेज कर महाराणा का अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए तयार करना चाहा, परन्तु कोई सफलता नहीं मिली। अतः चत्र सुदी ५ सं० १६३३<sup>२</sup> को कुवर भानसिंह को ५००० सवारों और नीच लिये बड़े-बड़े अनुभवी सरदारों के साथ अजमेर से महाराणा के विरुद्ध खाना किया।

- १ आसफ खा, भीर बरहा
- २ गाजी खा बरहानी,
- ३ सम्यद अहमद खा बारहा
- ४ सम्यद हाशिम खा बारहा,
- ५ सम्यद राजू,
- ६ जगन्नाथ कदवाहा
- महतर खा
- मुजाहिद बग
- ० राज लूणकरण वगरह।

१ टाड राजस्थान० (जा० सं०) १ पृ० ३८७।

२ सामवार माच ५ १५७६ ई०। वस्तुतः भानसिंह सामवार अत्रैत २, १५७६ ई० का अजमेर से खाना हुआ था। अ० ना० (अ० ज०), ३ पृ० २३६-३७। (अ०)।

सना को मुख्यस्थित करन के लिये कुछ समय के लिये कुवर मानसिंह माण्डलगढ़ ठहरा था। महाराणा ने यह समाचार सुना कि उमा के एक बड़े जमींदार के नृत्य में भुगत सना उमस लड़ने के लिये आ रहा है तो वह आग बबूना हो उठा और अपने दुश्मन की मांडलगत में हाथ दबा देना चाहता था। परंतु उमने शुश्रूषका ने महाराणा का माण्डलगत जाने में राक लिया।

कुवर मानसिंह के साथ शाही सेना माण्डलगत में गांगुदा का ओर खाना हुई। महाराणा भी कुभलमेर से हाथर गांगुदा पहुँचा और हल्दीघाटी में शाहा सेना से युद्ध किया।

मुत्तख-उम्-तवारीख का मस्रन मुल्ता बंगालुनी भा इन अभिमान में मानसिंह के साथ था। उमने युद्ध की आवा दली घटनाओं का वणन दिया है जो अबबर नामा और टाड कृत राजस्थान से अधिक विश्वसनीय है। अब उमका वणन नीचे लिखा जा रहा है —

**महाराणा और मानसिंह की लड़ाई —**

(हल्दी घाटी का युद्ध)

मुल्ता बंगालुनी लिखता है कि रबी-उल-अव्वल सन् ९८४ के आरम्भ (ज्येष्ठ के अन्त)<sup>१</sup> में मानसिंह ने गांगुदा को फतह किया। जब मानसिंह और आमफखा अजमेर से कूच करते हुए मांडल के भाग से हल्दी नामन घाट पर पहुँच। वहाँ से राणा बीका (प्रताप) का निवास-स्थान गांगुदा केवल ७ काम दूर रह जाता है। यहाँ राणा युद्ध के लिये सामन आया। मानसिंह हाथी पर सवार होकर अपना सेना के मध्य भाग में पड़ा हुआ। उमके जनक मल्वाजा मुहम्मद रफी वदल्गी अना मुराद आदि मय बादशाही यादवाओं के साथ भांभर का राव भुगकरण आदि राजपूत पड़े थे। इसी हरावल में कुछ प्रसिद्ध वीर लड़ाके यादवा नियुक्त हुए। सम्यक हाशिम बागहा के नृत्य में चुन हुए ८० यादवा हरावल में भी आगे नियुक्त हुए। सेना के साथ पार्श्व में सम्यद अहमद बागहा जोर उमनी

१ गांगुदा पर मंगलवार जून १९ १५७६ ई० को अधिकार हुआ।

अ० ना० (अ० अ०) ३, पृ० २४७। (म०)।

२ अप्रैल २ १५७ ई० को वं अजमेर से खाना हुआ था। (म०)।

सैनिक टुकड़ा का नियुक्त किया। काजी जरी खा व सावरी के श्रेया ने मना का दाहिनी पार्श्व ग्रहण किया। मना के चदावल म महतर खा नियुक्त किया गया।

गंगा कीरा ३००० मवार के साथ सेना को दो भागों में विभक्त कर घाटी के पीछे में निराना। सना के एक विभाग ने जिनका मेनापति पठान हसीम मूर था पहलू के पश्चिमी द्वार में निरान कर शाही हंगवल पर आक्रमण किया।<sup>१</sup> वहाँ का उग्र खावड जमीन जीर कटोती नाटिया के कारण शाही गंगवन में गड़बड़ी पन गई। इस सेना के राजपूत जिसका मुखिया माभर का गव गूणकरण था जोर जिनम स अधिनाश बायें भाग में थे मेना के भुक्त का तरह हरावल स भाग कर दाहिनी तरफ के सैनिक दल में जा मिले। उस दल (अलबनायुनी) कुछ खास जानमिया सहित हरावल में था। उसने आत्म खा में पूछा कि ऐसा स्थिति में अपने और शत्रु के राजपूतों की पहिचान कैसे की जाय। उसने कहा कि तुम तो तीर चढ़ाना शुरू करो मामने गढ़ बाहर है। रिमी की भा तरफ के राजपूत भार जान स मुसलमानों का लाभ ही है हम तीर चलाते रहें और हमारा एक भाग तार-स अपार भीड़ में खानी नहीं गया। इस प्रकार हमका विधर्मिया का मारन का पुण्य प्राप्त हुआ।

बारहा के मध्यदा द्वार कुछ स्वाभिमानी राजपूतों ने इस युद्ध में हल्ले के समान पराक्रम दिखाया और दाना तरफ के अपनेका सैनिक युद्ध में मार गए।

गंगा की मना का दूसरा भाग जिसका नेतृत्व महाराणा स्वयं कर रहा था घाटी के मुख्य गल्ले में निकला और बाबा या आन्नि का घाटी के मुहाने में गढ़ा कर शाही मना के मध्य भाग पर आक्रमण किया। मोक्का के गढ़वाले उस आक्रमण के वक में घबरा कर एकत्रिय युद्ध-क्षेत्र में भाग उठे हुए। भागत समय शत्रु इब्राहिम के दामाद अख ममूर के कूट पर तार लगा जिसका धात्र कर्म निना तक बना रहा।

१ गामवार १८ दून १५७६ का प्रात युद्ध आरम्भ हुआ। अ० ना० (अ० अ०) ३, पृ० ७४५। (म०)।

किंतु बाजी खा मुल्ला (धार्मिक व्यक्ति) था, फिर भी मरवीरा की तरह कुछ समय तक युद्ध क्षेत्र में टटा रहा। जन में उसके ताम्रि हाथ पर तलवार का एक घाव लगा। इसके बाद वह युद्ध क्षेत्र में ठहर नहीं सका और भाग कर सना के मध्य भाग में चला गया।

जा शाही सनिक जात्रमण के प्रथम आघात की प्रचण्डता का न क्षल कर भागे थे पांच काम तन ठहर नहीं सके।

युद्ध की गरमा गरमी के समय महार खा भयकर शारंगुन करता हुआ तथा तगाटे बजाता हुआ चलावल के स्थान में आग लगा। शाघ्रता में आग लगने हुए उसने यह अफवाह फैलाई कि बादशाह अकबर स्वयं युद्ध भेदान में पहुँच रहा है। इस अफवाह में आगे हुए बादशाही सनिका का भी कुछ धक्का बढ़ा और वे पुनः युद्ध भेदान की तरफ लौट पड़े।

खालियर का तबरा राजा रामसाह जो प्रसिद्ध राजा मान का पौत्र था इस युद्ध में राणा के आगे रह कर कुंवर मानसिंह और उसके सनिका में ऐसी बहादुरी से लड़ा जिसका बखान नहीं किया जा सकता। शाही हरावन से भाग कर आसिफ खा आगि अनेक सनिक सना के दाहिनी तरफ लड़ रहे बाराहा के सैन्य के शरण में आ गए थे। उस समय अगर सय्यद भी युद्ध क्षेत्र में पान नहीं जमाते तो बहुत बुरी हार होती।

राणा के हाथी बादशाही हाथिया से भिड़े। उनमें से दो प्रसिद्ध जंगी हाथी जा तब मरते थे आपस में लड़ें। बादशाही हाथिया के फौजदार हुसन खा न जा कुंवर मानसिंह के पीछे दूसरे हाथी पर सवार था और अपने हाथी पर मानसिंह स्वयं महावन की जगह बैठा था ऐसा भयकर युद्ध किया कि उसमें ज्यादा किसी अन्य से संभव नहीं था। बादशाही हाथी ने राणा के हाथी से जिसका नाम राम प्रसाद था और जा बहुत प्रचंड था भयंकर लड़ाई का। दोनों एक दूसरे का डकलते रहे। अंत में राणा के हाथी रामप्रसाद के महावन के अचानक तीर लग जाने से वह जमान पर गिर पड़ा। इस समय शाहा हाथा का महावन अपने हाथा से कूट कर पलक अपकृत ही राणा के हाथी रामप्रसाद पर सवार हो गया। अभी पूर्वी अंश दूसरा बाई नहीं दिखा सकता था।

ऐसी परिस्थिति में राणा युद्ध-क्षेत्र में ठहर नहीं सका और राणा-क्षेत्र छोड़ चला पड़ा। उसके निबल जाने से राणा की सेना में अव्यवस्था पन गई। शाही सेना के प्रसिद्ध शूरवार मोद्दाओ न, जा मानमिह की रक्षा में उसका चारा तरफ घूमे थे। अन्त में युद्ध किया। उनका युद्ध मुल्ता जैरी के शत्रुओं में हिन्दू मजनद शमशेर इमलाम अर्थात् दम युद्ध में हिन्दू ने अपने हाथों में मुमलमानी तलवार सेवर युद्ध किया।

'इस युद्ध में प्रसिद्ध वीर जयमल मडनिया का पुत्र रामदास राठी<sup>१</sup> और खालिपर का राजा रामशाह अपने पुत्र शासिबाहन आदि सहित वीरता से लड़ते हुए मारे गए। उनके पाछे खानियर राजवंश का बाई भी उत्तराधिकारी बच नहीं रहा।

महाराणा जय माधोसिंह से युद्ध कर रहा था उस समय उसकी तारी ब घाव लग। इसी समय हकीम मूर भी राणा की सेना के हराबल से भाग कर महाराणा के पास आ गया था।

युद्ध क्षेत्र में दोनों (विराधी) सेनाएँ आपस में भिड़ गई अर्थात् अति निकट का नज़रबंद होने लगा। ऐसे समय में महाराणा अपनी सेना को छाड़ कर पहाड़िया में भाग गया।

'यह युद्ध प्रातः आरम्भ हुआ था और मध्याह्न तक चलता रहा। उस समय की अमहनीय गम हरा के कारण मिर उबलने ला लग गया था। इस युद्ध में ५०० आत्मी मरे रहे। उनमें में १२० मुमलमान और शत्रु मरे हिन्दू थे तथा ३०० से ज्यादा घायल हुए। गम हरा के चलने से मरिका के हौसले पस्त हो गये थे। माध ही के जानते थे कि राणा पहाड़ के पाछे घात लगाय बैठा होगा यही भाव कर मानमिह ने पीछा नहीं किया और मुडापरान बड़े पुन अपने पटाव पर ही आ गया। और घायल मरिका का इलाज करने लग।

दूसरे दिन मानमिह बग में बूच करके युद्ध मगान में प्रत्येक मैनिव का काम करने हुए घाटा से पार हुआ, और गागुन्ग पहुँचा। वहाँ पर राणा

१ यह रामदास जगन्नाथ बख्खाहा के हाथी मारा गया था। (म०)।

२ माधोसिंह—यह मानमिह बख्खाहा का छात्र भाई था। (स०)।



के महिला के कुछ पहरेदार और मन्त्रि म रहने वाले कुछ पुजारी आदि ५ जिनकी कुल गिनती २० ही रही होगी। अपनी प्राचीन हिन्दू रीति व अनुसार धर्म और इज्जत की रक्षा के मन्त्रि और धर्म से निवृत्त कर उद्धान युद्ध किया और मार गये।

राणा द्वारा रात्रि में छापा मारने के भय से अस्तिन गाही सनानायक ने मागुला गांव के चारों तरफ महारा छाई खुदवाया तथा गांव के चारों तरफ दीवार बनवा कर पक्की मोर्चा बंदी की जिससे कि कोई भी सैनिक इस मोर्चे को पार कर सफल प्रविष्ट न हो सके।

इस प्रसंग के पश्चात् युद्ध में मार जाने वाले सैनिकों और घाटा के पूर्ण विवरण का सख्ती से बखर्क करने का निश्चय हुआ। पर अहमद खा न कहा कि हम में से कोई भी जादमी नहीं मारा गया और न ही हमारा घाटा काम आया है। इन नामों का लिखने से कोशिश भी नहीं है। इस समय समस्या अनाज की है अतः उस पर विचार किया जाय।

इस पहाड़ी क्षेत्र में पानी कम होती थी और अनाज समाप्त हो चुका था। बनजार<sup>१</sup> उस तरफ नहीं आते थे। इस कारण से उन दिनों में गाही सैनिकों के ऊपर अजीब विपत्तियाँ आ गई थी।

अमीरा ने आपस में सलाह करके यह निश्चय किया कि एक ही सैनिक टुकड़ियों को पहाड़ी घाटियों में और टेकरिया पर भेज कर अनाज मगवाया जाय। इस प्रकार के सैनिक दल वहाँ के निवासियों का लूटने लगे किन्तु उनका गुजारा जानवरों का मांस खाने में चलता था। इस क्षेत्र में आम बहुत थे जिनका कुछ गिनती नहीं हो सकता था। वहाँ पर सबार और निम्न श्रेणी के लोग अनाज के बदले में आम ही खाया करते थे और प्रायः वानियों के मारे वामार हात थे। यहाँ का आम तोना गया। उसका वजन जफरी मेर भर का हुआ। उसका छिनका पतला था लेकिन वह आम भीठा और बहुत स्वादिष्ट नहीं था।

१ राजपूताना में माल ढान का कार्य बनजार करते थे जो अपने पशुओं की पीठ पर लाद कर माल का एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते थे। (सं०)।

२ वायु रोग।

“इस अवधि में बादशाही सदेशवाहक महमूद खवास बादशाह के ज्ञापन से वहां पर जाया और युद्ध का पूरा विवरण प्राप्त करने दूसरे दिन वापस बादशाह के पास चला गया, और वहाँ प्रत्यक्ष का जमा कुछ नाम सुना था उमने निवेदन किया। बादशाह को राणा का पीछा नहीं किया जाना और उसका जीवित छोड़ दिया जाना पसंद नहीं आया। बाकी के मार हालात से उसको मताप हुआ।

कुंवर मानसिंह ने रामप्रसाद हाथी को जिसका बादशाह ने पहल कई बार राणा में मांगा था और राणा ने उन नहीं दिया था, ३०० सवारों के साथ भुना<sup>१</sup> के साथ बादशाह की सेवा में भेजा। गौगुदे से २० कोस, गांव मोही तक मानसिंह स्वयं शिकार के वहाने में उस पहुँचाने गया। मार्ग में लोग हर जगह लड़ाई और मानसिंह का विजय का हाल सुनते थे मगर इस पर विश्वास नहीं करते थे। जब भुना आम्बर पहुँचा तो वहाँ लोगों को बड़ी खुशी हुई। फतहपुर में राजा भगवतदास मुल्ला को शाही दरबार में न गया। बादशाह ने पूरा विवरण को सुन कर मुल्ला को १६ मुहरों पनाम में दी और रामप्रसाद का नाम ‘पीर प्रसाद’ रखा।<sup>२</sup>

मेवाड़ की तबारीख में इस युद्ध के बारे में मानसिंह का लड़ाई में इतना और ज्यादा विवरण भी लिखा मिलता है कि जब लड़ाई शुरू हो गई तो महाराणा अपने घाटे चेटक का दौड़ा कर बादशाही सेना में घुस गया और मानसिंह के हाथी पर बरछों का बार किया मगर हाथी का हौदा पौतादी तप्ला का बना होने के कारण मानसिंह तो बच गया किन्तु उनका महावत मारा गया। उस अवसर पर वहाँ भयंकर युद्ध हुआ और भुना ने महाराणा को घेर लिया। महाराणा तीन बार इस घेरे में बच कर निजान गया, किन्तु चौथी बार वह घेरे में ते निकल नहीं सका। उस समय भाला मान उसका छत्र और गुनहरी झंडा लेकर एक तरफ भाग खाने हुआ। भुना ने उस ही राणा समझा और उसके पाछे दाढ़े और उस प्रकार उस अवसर पर महाराणा जान बचा कर निजल गया।

१ जय मेवाड़ (म०)।

२ कल्याण (म० अ) २ पृ० २३६ २४१। (अ)।

इसके बाद भाता मरणा न मुगल से भयकर युद्ध किया और अपन माथिया सहित काम आया। उसकी दम नवा क जल म महाराणा ने उस वंशजा का दरवार म अपने गहिन हाथ की तरफ बठन का कुरव<sup>१</sup> दिया और आदेश दिया कि जब भी उन वंशज दरवार म आव तो राजकीय महला तक अपना नक्कारा बनात आव। साथ ही भडा और छन भी अपने पास रखा करें।

महाराणा के युद्ध स निकल जाने के बाद उसकी सना भी तिनर-नितर हो गई। वह जेला हा पहाडा म चला गया। उस युद्ध धन स निकलत दख कर दो मुगल सनिक उसके पाछे चल पडे। माग म एक पहाडी माला जाया। महाराणा का घाडा चटक उसकी पार कर गया।

महाराणा क भाई शक्तिमिह न जिसका अक्बर बादशाह न भसरोड का दलाका लिया था और जो इस मुहिम म मानसिह क साथ आया था जन लखा कि मेरा भाई जकला जा रहा है और दा मुगल उसका मारने क निय पीछे चल जा रह है तो उसके दिा म भाई क प्यार न जाश मारा और वह घाडा लोडा कर मुगल क साथ हो गया। फिर उपयुक्त स्थान पर कर बरछ म उन दाना सनिका को मार कर वह अपन भाई स जा मिला। उस समय दोना भाइ बडे प्यार म मिले और चटक जा बुरी तरह स धायल हो गया था अजकन हाकर गिर पडा। शक्तिमिह ने अपना घाण महाराणा को नीप लिया। महाराणा न चटक के ऊपर स ज्याही सामान आनि उतार कर शक्तिमिह क घोड पर रखा त्याही चटक मर गया। शक्तिमिह महाराणा स कुछ समय तक बात चीत करता रहा। फिर वह वापस लौट पडा और महाराणा गागु दा चला गया।

राज प्रशस्ति<sup>३</sup> म लिखा है कि महाराणा न हम सवा क दान म शक्तिमिह और उसके वंशजा का राणा पल्लभ की पत्नी प्रदान का।

१ सम्मान।

२ उक्त घटना नाक तथा पर आधारित<sup>३</sup> एवं अन्य ऐतिहासिक ग्रंथा मे पुष्टि नहीं होती है। अतः माय नहीं हो सकती। (म०)।

३ राज प्रशस्ति महाकाव्यन् सग ४ श्लोक ३०। (स०)।

टॉड 'राजस्थान' में लिखा है कि यह युद्ध भावग्न बंदी ७, स० १६३३<sup>१</sup> का हुआ। उसमें महाराणा के ५०० सैनिक और तब राजा रामसाह सहित ३५० सैनिक जिनका महाराणा ने ८०० रुपये रोज महमान-दारी देकर रखा था अपना नाम और कुल को उज्जवल बना कर इस युद्ध में काम आये।<sup>२</sup>

अक्षर नामा' से महाराणा की हार का विशेष कारण यह माना जाता है कि जब युद्ध ने उग्र रूप ग्रहण कर लिया और महाराणा के कुंवर मानसिंह एक क्षण में लड़ रहे थे उस समय ऐसा लिखा गया कि शामद दुश्मनों (महाराणा) का विजय होगी। उस समय महतर खा शाघ्रता के साथ से सना के पृष्ठ भाग में अपनी सना का दाढ़ता हुआ लाया और ऐसी अप्रत्याशित कि बादशाह स्वयं नई घुड़ सवार सना के साथ आ गया है। इससे दुश्मन भाग खड़ा हुआ और युद्ध में विजय हुई।<sup>३</sup>

इस विजय की सूचना युद्ध के छठवें दिन घामाना बना १२<sup>४</sup> को फतहपुर के शिविर में बादशाह के पास पहुँची।

मुल्तान नगमों की र्यात में लिखा है कि मानसिंह का पड़ाव यनाम नदी के ऊपर था। उससे ३ काम दूर राणा का शिविर था और यह जगह उन्मपुर में ९ कोस की दूरी पर थी। महाराणा ने पुरबिया मुदरनास और सीमादिया नदी भाकरोत का मानसिंह की सूचना जान के लिये भेजा। उस समय मानसिंह राणा के शिविर से २ कोस की दूरी पर शिकार खेल रहा था। उसके साथ केवल १०० सवार थे। इन गुप्तचरों ने रात्रि के समय लौट कर राणा को यह सूचना दी तथा कहा कि यही उचित अवसर है मानसिंह पर आक्रमण करना चाहिए। तब जबसंर में लाभ उठाने के लिये महाराणा भी तयार हो गया किंतु उसके सरदार बीना भाना ने महाराणा

१ बुधवार जुनाद १८ १५७६ ई०। टॉड राजस्थान (जा० स०, १ पृ० ३९६) में आवण सुना ७ ना है। मुशा दवाप्रसाद ने आतिवश महा आवण बनी ७ लिख दा है। (स०)।

२ टॉड राजस्थान (जा० स०) १, पृ० ३९६। (म०)।

३ अ० ना० (अ० अ०) ३५० २६६। (स०)।

४ शनिवार जून २३ १५७६ ई०।

को खाना नहा होन दिया । दूसर जिन खमनार नामन स्थान पर लडाइ हुइ । राणा व पास ९-१० हजार मवार ५ । मगर भानमिट की विजय हुई और राणा हारा । <sup>१</sup>

हार-जात तो ईश्वराधीन है लेकिन इसमें वार्द सद्दह नहा कि राणा न बीरता के साथ युद्ध किया । अगर बागशाह व आन की झूठा अपवाह नहा उडाई जाती तो महाराणा व जीत जाने म वार्द मरु नही था ।

राजस्थानी और पारमा अ या म इस युद्ध का निधि छप मिलती है किन्तु महीना म विभिन्नता लिखाई दना है । राजस्थानी लेखर विजय माल व श्रावण कृष्णा ७ का युद्ध होता लिखत हैं<sup>२</sup> लेकिन अक्बर नामा म तीर माह की ७ तारीख लिखी है जिसकी गिनती वजन पर आमाइ कृष्णा ७ ही आती है<sup>३</sup> मुहना अल्लुन कादिर के ओप्प क्रु वणन व आधार पर यहा तिथि मही प्रतीत हाती है ।

मुहगोत नगमी न युद्ध का १६३० विक्रमा म होना दिया है<sup>४</sup> लेकिन प्राग्शिव वप गणना व पारण यह विभिन्नता प्रकट हाता है । मागवाच म श्रावण माह और मवाड म भाद्रपद माह<sup>५</sup> की कृष्णा १ स वप की गणना आरम्भ हाता है जयवि विजय सबत् म यह गणना चत्र शुक्ला १ स हा आरम्भ हाती है । अत नगमा का १६३२ भी १६३३ विक्रमा हा माना जायगा ।

अम युद्ध के बाद महाराणा कु भलभर व दुख म रहने लगा । गह स्थान उज्जयपुर से पश्चिम दिशा म गाडवाड परगना के पहाडा प्रन्ग व ऊपर ह । महाराणा न मवाड का सम्पूर्ण मदाना प्रदेश उडाइ लिया और यहाँ व निवासिया का पहाणा म बुनवा लिया । फिर अजमेर मालवा और

१ नगमी० (प्रतिष्ठान) १ पृ० ८० । (स०) ।

२ बुधवार जुलाई १८ १५७६ इ० । यह तिथि राणा प्रताप रा बात (महाराणा प्रताप स्मृति ग्रंथ राजस्थानी मल पुरातात्विक सामग्री पृ० १० ११) आर वाकादास री ख्यात (पृ ८२ क्र १ २६) म मिलता ह । (स०) ।

३ सामवार जून १८ १५७६ ई० । अ० ना० (अ० ज०) ३ पृ० २४५ । (स०) ।

४ नगमी० (प्रतिष्ठान) १ पृ० २०८ । (स०) ।

५ यहा मुजी देरीप्रमाण से भूल हा गइ है मेवाड म सबन श्रावण कृष्णा १ म आरम्भ हाता ५ । बीर विनाय० २ पृ० २६ । (स०) ।

गुजरात के रास्ता पर लूटमार शुरू करवा दी। फलतः रसद और दूसरी व्यापारिक वस्तुओं का घाना जाना बंद हो गया जिससे शाही सेना को अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ का सामना करना पड़ा। ऐसी परिस्थिति में आसफ खाँ और मानसिंह से कुछ भी व्यवस्था नहीं हो सकी और इस अव्यवस्था की शिकायत बालशाह के कानों तक पहुँची। किन्तु उस समय बादशाह का ध्यान बगाल की तरफ लगा हुआ था, जहाँ शाही सेना पठानों से सघपरत थी। साथ ही वह स्वयं भी सेना की मदद के लिये अवध कृष्ण २<sup>१</sup> को बगाल की तरफ रवाना हुआ। सौभाग्य से उन्नीस दिन और उसी मिति को गोगुदा विजय के पञ्चोत्सवों के दिन बगाल पर भी शाही सेना ने विजय प्राप्त की। बालशाह यह खबर सुन कर रास्त से ही राजधानी लौट आया। वहाँ से लिखावटों रूप में ताँ देव गण और वास्तव में मेवाड़ स्थित शाही सेना का मदद पहुँचाने के लिये रवाना होकर आसोज सुदी ५<sup>३</sup> को जजमेर पहुँचा। वहाँ पहुँचने पर उसे मालूम हुआ कि गोगुदा में स्थित शाही सेना में भाग की कठिनाइयाँ के कारण अनाज कम पहुँच पाता है और कुँवर मानसिंह ने राणा के प्रश्न में लूटमार करने की मनाही कर दी है। इस कारण से गोगुदा में सेना का अनेक कठिनाइयाँ उठाने पड़ रही है। इसके अतिरिक्त कुँवर मानसिंह के आसफ खाँ से भी विरोध प्राप्त है। ऐसी परिस्थिति को देख कर बालशाह ने वहाँ के अमीरों को अति शीघ्र अपने ही अपने पास चल आने का आदेश भेजा। जब ये बादशाह के सामने उपस्थित हुए तो बादशाह ने मानसिंह और आसफ खाँ का कर्द गिन शाही दरबार में प्रवेश की मनाही कर दी। बाद में सघपरत क्षमा करने पर ही उन्हें अपने समान बुलाया।

इस समय महाराणा ने सिराही के राव मुग्ताण देवड़ा जालोर के खान ताँ ग्या और फ़ैर के राजा नारायणदास का भी अपने शामिल मिला लिया और अरावली के पहाड़ों के गैला तरफ गुजरात के भागों पर लूटमार और भगने करने लगा। बालशाह ने जालोर और सिराही के ऊपर तरसू खाँ और राव रायसिंह का भेजा। तब ही शाही सेना में घबराहट और दोना ही शायक शाही दरबार में उपस्थित हो गये। अतः तत्पश्चात् बालशाह ने तरसू खाँ का पारंग का अधिकारी बना कर भेजा। रायसिंह का नाना रहने का आदेश

१ शुक्रवार, जुलाई १३ १५७६ ई०।

२ शुक्रवार मिनरवार ७, १५७६ ई०।



स्वाधिकार की। पहला चर्चा-विषय है मुसलमानों के प्रति यह दृष्टिकोण कि  
आराम किया।

बादशाह का गांधुदा आगमन और इसके पश्चात् पहाड़ी भाग से  
मालवा की तरफ जान का कबज एक मात्र यही उद्देश्य था कि किसी भी  
प्रकार महाराणा भी अथ हिंदू शासकों की तरफ उससे प्रभावित होकर  
आधीनता स्वीकार कर लें। किन्तु महाराणा बान्साह के सामने न झुकने  
के लिये यह प्रतिज्ञा की। महाराणा की बात तो दूर रहा उस समय एक भाट  
जिमका महाराणा ने प्रमत्त हाकर अपनी पगड़ी प्रदान की थी, जब  
अबबर बादशाह के दरबार में गया और उसका झुक कर सलाम करने के  
समय महाराणा द्वारा प्रमत्त का गई पगड़ी को उतार कर नंग मिर बादशाह  
में मुजरा किया। बादशाह द्वारा इस प्रकार नंग मिर मुजरा करने का कारण  
पूछ जाने पर उसने निर्भयता के साथ उत्तर दिया कि यह पगड़ी महाराणा  
प्रतापसिंह का है जिसने आज तक किसी हिंदू या मुसलमान शासन के सामने  
मिर नहीं झुकाया। इस कारण मैंने भी उसका सम्मान रखा है।<sup>1</sup>

बादशाह अबबर कम से कम छ माह तक महाराणा का परेशान  
करने के लिये इस प्रदेश में रहा। लेकिन महाराणा ने इस कठिन समय में  
भी डैम नहीं छोड़ा, तथा बान्साह की परवाह नहीं की। इससे विपरीत वह  
बादशाह का निरंतर परेशान करता रहा। जब महाराणा ने देखा कि बादशाह  
उसके प्रदेश में छोड़ कर दूर निकल गया है तो वह पहाड़ी क्षेत्र में नीचे  
उतर कर बान्साहा पाना पर आक्रमण करने लगा। उसने आगरा के मेवाड़  
का भाग अवरुद्ध कर माही सना का भाग बंद कर दिया। जैसा कि मुल्ला  
अबुन कादिर (अनायुना) लिखता है कि वह बीमार होने के कारण आगरा  
में ही रह गया था। स्वस्थ हान के पश्चात् वासवाड़ा के भाग से अबबर के  
पास सना में जाना चाहता था, किन्तु अबुना खा ने इस भाग को अरमिन  
और भयानक बला कर बीच भाग में हिण्डौन से ही उस बाप में लोटा दिया,  
और फिर वह ग्वांतियर सारंगपुर और उज्जैन होता हुआ देवातपुर में  
बान्साह के पास पहुंचा।<sup>2</sup>

१ यह ऐतिहासिक घटना नहीं है। इससे केवल महाराणा की स्वाभिमान की  
प्रवृत्ति पर प्रमाण जता जाना ही उद्देश्य है। (ग०)।

२ अनायुना (१० अ०) २ पृ० २५०। (ग०)।



दम मययावधि म हो गिराणा का नामक मुस्ताग स्वका भी जाना मना म भाग कर गिरोही जा पहुँचा था और ईदर व राव नारायणनाम न भी बिदाही वायवानी आरम्भ कर गी थी। यह सब सुनते थे बाग पोष शुक्रवा ६, १६, २३ वि० का बागगाह अरजर न राजा भगवतनाम पु दर मानगिह मिर्जा या घोर कागिम या आनि मनातायका को गोमुना का तरफ रखाता किया। गिराहा व नामक गुरताग स्वका का दवान व निय राव रायगिह को तथा नारायणनाम का स्वका व निय घागव या का किया। राव रायगिह ने गिराही पर आक्रमण कर गिराही घोर आयू गट गुरताग म छीन निय। उधर महाराणा न अपनी ओर म महायना स्वर नारायणनाम का आसप या व विरुद्ध भेजा। ईदर म दम कािम पर पहुँच कर उमन बागशाही धान पर छापा मारा का प्रथम किया किन्तु घागव या न मक्कता व नाय पांगुल शुक्रवा ४ का ईदर स ७ कािम घाग बढ़ कर नारायणनाम का नामना किया घोर उम हरा कर भगा किया। किन्तु राजा भगवतनाम और मिर्जा या घागह या महाराणा को स्वान म मक्कता मठा मिला। य सब उमा तरह धाना पर दीडत रह। शाही अमीरा न महाराणा का पकडन का बहुत प्रयत्न किया लेकिन महाराणा उनसे हाथ नहीं धाया। जब शाहा अमार महाराणा का एक पहाड पर ठहरना मुा कर उन पहाड को पेर लेत तब महाराणा दूमर पहाड स निवस कर उन पर छापा मार जाना था। वह कभी भी एक स्थान पर या एक विस म अधिव समय तक नहीं ठहरता था। क्याकि इनम गिरा वस बठिनाई म पड गयता था। वह तित्य प्रति शाही सना की तलाश म फिरता रहा। इनके पन्थवरूप उन्पपुर और गोमुदा स बागशाहा धान उठ गय और माही का धानगर मुजाहिद बग मारा गया।

**बादशाह का दूसरी बार अजमेर जाना—**

सदब या तरह जबवर बादशाह कातिक कृष्णा १२ १६ ८ वि०<sup>३</sup> को पुन अजमेर पहुँचा। वहाँ कुछ दिन ठहर कर भवाड का सारा वस्तु

- 
- १ बुधवार निमम्बर २६ १५७६।
  - २ शुक्रवार फरवरी २२, १५७७ ई०।
  - ३ मितम्बर १८ १५७७ ई०।

स्थिति समझने का प्रयत्न किया। पहिले की सेना से मेवाड में कुछ काम निरन्तरता हुआ न देख कर मेडता से उसन फिर एक नवीन मना कार्तिक शुक्ला १५ १६३४ वि०<sup>१</sup> को शहवाज खा के नृत्व में महाराणा की दवाने के लिये भेजी। राजा भगवतदास कुंवर मानसिंह, पायदा खा सैय्यद कासम, मय्यद हामिम सय्यद राजू अमद तुक्मान और गजरा चौहान आदि अन्य सेनानायकों का भी शहवाज खा के साथ खाना किया। आसिफ खा के स्थान पर दहरी भी शहवाज खा को बनाया। शहवाज खा चुस्त और चालाक अधिकारी था। इससे पहिले भी उसने हज जाने वाला को, जिनके साथ बादशाह ने मक्का शरीफ के लिये बहुत से रुपये भेजे थे महाराणा की सरहद में से हाकर सुरक्षित रूप से पार करवा दिया था। उसने मेवाड स्थित बादशाही घाटी का निरीक्षण करने के बाद शाही इलाके की सरहद की सुरक्षा के लिये बादशाह से अनिश्चित सहायता की प्रार्थना की। उसकी प्रार्थना पर बादशाह ने शायद दुराहीम फतेहपुरी को कुछ सना के साथ उसके पास भेजा। उसके पहुचने के पश्चात् शहवाज खा ने कुंभलमेर पर आक्रमण कर उस पर अधिकार करने का निश्चय किया। साथ ही महाराणा की तरफ्तारी करने की आज्ञा से उसने राजा भगवतदास और कुंवर मानसिंह दोनों को वापस शाही दरबार में भेज दिया और स्वयं शरीफ खां गाजी खां और मिर्जा खां आदि के साथ जाकर कुंभलमेर के दुर्ग को घेर लिया। वैशाख कृष्ण १२, सवत् १६३५ वि०<sup>२</sup> का महाराणा ने मुगल से दुर्ग के भीतर से युद्ध किया,

१ अक्तूबर २६ १५७७ ई०। परन्तु शहवाज खा का तो अक्तूबर १५, १५७७ ई० को मेवाड के विजय भेजा था। अ० ना० (अ० अ०), ३ पृ० ३०५। (स०)।

२ गुरुवार अप्रैल ३ १५७८ ई०। 'मेवाड की तबारीखा में इस घटना का आमान कृष्ण ३० १६३५ वि०स० (गुम्बार, जून ५ १५७८ ई०) को होना निश्चित है। किन्तु समकालीन फारसी ग्रन्थ 'अकबर नामा' में इसका उल्लेख २४ फरवरदीन के दिन किया है। जिसकी गणना करने पर वैशाख वने १२, १६३५ वि० ही आता है अतः यही तिथि सत्य प्रतीत होती है। संभव है कि युद्ध वैशाख कृष्ण १२ को आरम्भ हुआ और दुर्ग पर अन्तिम रूप से आपाठ कृष्ण ३० का शहवाज खा का अधिकार हुआ हो। (दबी०)। परन्तु दबी प्रसाद द्वारा व्यक्त यह सम्भावना सही नहीं है। अप्रैल ३ १५७८ ई० का ही दिने पर अधिकार हो गया था। अ० ना० (अ० अ०) २ पृ० ३४०। (अ०)।

किंतु दुग म एन वटी तोप के फट जाने स दुग म रखा हुआ युद्ध का सारा सामान जल गया । फलत महाराणा का विवश होकर बिला छाड़ना पडा । महाराणा वहाँ से निकल कर वासवाढा की तरफ चला गया । किंतु उसके कुछ प्रसिद्ध योद्धा पहले ता दुग के दरवाजे पर लडे जाए फिर दुग स्थित मदिरा और अन्न घरा के आगे धीरतापूर्वक लडत हुए काम जाय । शहबाज खा गाजी खा को दुग म छोड कर स्वय महाराणा का पीछा करने के लिये रवाना हुआ । दूसरे दिन दापहर को गोमुदा तथा तदनंतर अघर त्रि म उन्मपुर पर अधिकार कर लिया और वहा उसने बहुत सा माल लूटा ।

मुहल्लान नैगमी की न्यात म लिखा हुआ है कि अक्बर की सेना ने सवत् १६३३ वि० म कुभलमेर पर अधिकार कर लिया और वहा पर भाए अमराजोत जाति राणा क कई अय राजपूत भी मार गये । <sup>१</sup> इस प्रकार यहा दो वष की गनती है जा पता नही क्या कर रह गई है ।

दसर पश्चात् शहबाज खा महाराणा की खोज म उस पहाडा प्रेश म यत्र तत्र फिरता रहा लेकिन महाराणा उसके हाथ नही आया । अत म निगाह हाकर उसने महाराणा का पीछा करना छोड दिया । तथा पता नगा कर उसके गरा का लूट लिया । इसी समय राव सुरजन हाडा का पुत्र दूदा जो कुछ समय पहले शाही सेना स विद्रोह कर महाराणा की सेवा म चला गया था और बान्शाह का विराध कर रहा था वही दूदा इस समय शहबाज खा क पास उपस्थित हुआ । अत शहबाज खा उसका साथ लेकर पजाब म बादशाह क पास गया । आमान शुक्रा १० १६३५ वि० क दिन शाही त्गवार म पहुंच कर दूदा न बान्शाह स मुजरा किया । शहबाज खा की प्रायता पर बान्शाह न भी दूदा का क्षमा कर दिया ।

शहबाज खा क पंजाब की तरफ चने जाने क बाद महाराणा वासवाढा की तरफ स पुन छपने क पहाडा म आया और बान्शाही आना का लूटमार करने लगा । इसकी सूचना मिलने पर बादशाह न फिर पीप वृष्णा १ १६३५ वि०<sup>३</sup> क दिन शहबाज खा और गाजा खा का राणा का दमन करने क निय

१ नैगमी० (प्रतिष्ठान) १ पृ० २०९ १० । (स०) ।

२ सोमवार जून १९ १५७८ ई० ।

३ सोमवार निम्बवर १५ १५७८ ई० ।

मेजा । इनके साथ मुहम्मद हुसैन शेख तमूर वदस्थी और भीरजादा अली खा आदि अनेक मुगल सनानायकों को भी नियुक्त किया । इस सना के जागमन की सूचना मिलने पर महाराणा पुन पहाड़ा प्रदेश में जा छिपा । शहवाज खा ने तीन महीनों तक उस प्रदेश में निरन्तर घूमना रहा । उनमें प्रत्येक धाना चाकी का निरीक्षण कर वहाँ युद्ध-पटु सुयोग्य सैनिकों को नियुक्त किया और स्वयं शाही दरबार में लौट गया । उसने लौट जाने के बाद महाराणा ने ज्येष्ठ शुक्ला १४ १६३६ वि०<sup>१</sup> से पुन सूर्यमार आरम्भ कर दी । इस पर बान्शाह अक्टूबर जव कार्तिक कृष्ण ११ १६३६ वि०<sup>२</sup> को अजमेर आया और शुक्ला ११ का<sup>३</sup> वापस जाने लगा तब साभर के पहाड़ से अजमेर सूत्र के प्रबंध के लिये फिर से शहवाज खा को वहाँ छोड़ दिया । हमसे यह स्पष्ट होता है कि महाराणा ने मेवाड़ के अतिरिक्त सूबा अजमेर के अथवा अना में भी हस्तक्षेप किया और कुम्भार की थी ।

शहवाज खा ने फिर महाराणा का पीछा करना आरम्भ किया । इस बार महाराणा को बड़ा कठिनाइया का सामना करना पड़ा । उसका भोजन करने तक का समय नहीं मिलता था । वह जिधर भी जाता मुगल सेना निरन्तर पीछा करता रहती थी । एक दिन तो उसको अपनी जान बचाने के लिये पाँच बार भाजन छोड़ कर भागना पड़ा था । ऐसी विपत्ति, कि जिसमें हर पल शत्रु हाथ में तलवार लिए सर पर खड़ा हुआ अथवा किसी के सामने उपस्थित नहीं हुई हमी । ऐसी कठिनाइया से गुजरने वाला एक मात्र व्यक्ति महाराणा प्रतापसिंह ही था । इतनी कठिनाइया का सामना करने पर भी उसने अपने स्वाभिमान का नहीं छोड़ा । विद्वानों का कथन है कि सच्चा शूरवीर उमी का मानना चाहिये, जो हार और जीत दोनों ही परिस्थितियों में समान ढंग में रहे । यह बात महाराणा प्रतापसिंह में अच्छी तरह से देखी जा सकती है । उसको प्रतिदिन हार का सामना करना पड़ रहा था । सम्पूर्ण भूमि उसके अधिकार से निवृत्त चुकी थी । फिर भी वह सदा लड़ने का तैयार रहता था । तथापि वह कभी दान वचन अपने मुख से नहीं निकालता था ।

१ ममवार पून ८, १६७९ ई० ।

२ शुक्रवार अक्तूबर १६ १६७९ ई० ।

३ शुक्रवार अक्तूबर ३० १६८० ई० ।

टांड ने अपन ग्रन्थ में लिखा है कि एक दिन महाराणा की छोटी पुत्री अपने हिस्से की आधी रोटी ता खा गई और आधी रोटी का दूसरी बार के लिये सुरक्षित रख दी। इतने में ही एक बिल्ली आयी और उम रोटी को खा गई। इसके लिये वह लड़की चिल्ला कर रोने लगी। उसका यह दुःख महाराणा से देखा नहीं गया। उसने इन कठिनाइयाँ से छुटकारा पाने के लिये अकबर को पत्र लिखा। अकबर इस पत्र को प्राप्त कर गदगद करके भगा और ग्राम दरवार में वह पत्र सबको दिखाया गया। बीकानेर के राजा रायमिह के छोटे भाई पृथ्वीराज ने कहा कि ऐसा दीनतापूर्ण लख महाराणा कब भी नहीं लिख सकता है। यह तो किसी ने पढ़ा-पढ़ा कर उम पर कलक लगाने का प्रयास किया है। मैं राणा को जानता हूँ। वह कब भी इस प्रकार का एक शब्द भी नहीं लिखेगा। इसके बाद ऐसी कोई कायवाहा से उसे राजन के लिये पृथ्वीराज ने महाराणा को कई आज्ञास्वी दीह लिख कर भेजे जिनको सुनने के बाद महाराणा का स्वाभिमान पुन जाग उठा उसकी निराशा समाप्त हो गई और उममें १००० घोड़ों का बल आ गया।<sup>१</sup> यह घटना केवल कहानी मात्र जान पड़ती है। इस घटना का अकबर शाह का भी किसी तबारीख में उल्लेख नहीं है। अगर महाराणा ने ऐसा पत्र लिखा होता तो अबुल फजल जो छोटी २ बातों को बना बना कर लिखने में चतुर था इस घटना का उल्लेख अकबर नामा में अवश्य ही करता। परंतु अकबर नामा में इस घटना का उल्लेख नहीं मिलने से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह घटना केवल कल्पना मात्र ही है।

यह सत्य है कि जब गहवाज खा द्वारा निरन्तर पीछा किया जाना महाराणा मवाड क्षेत्र में ठहर नहीं सका जहाँ उमको आम-पास कहीं ठहरने का सुरक्षित स्थान नहीं मिला तो भाग कर वह सूधा के पहाड़ों में जो आज से १२ कोस उत्तर पश्चिम में स्थित है और विपत्ति के दिनों में राणा मानवली भी वहाँ रह चुका था चला गया। वहाँ पर नेवर राजपूतों का अधिकार था उन्होंने महाराणा का बहुत जादर सम्मानपूर्वक स्वागत किया। तथा सोयरा के ठाकुर रायधवल ने जो दबल राजपूतों का मुखिया था महाराणा का भेंट करने के लिये अपने पाम बाई उपयुक्त वस्तु न देकर

१ टॉड राजस्थान० (भा० म०) १ पृ० ३९८-९९। (स०)।

२ यह परिहारों की उप शान्ति थी। (म०)।

कर अपनी पुत्री का विवाह महाराणा से कर दिया। तत्पश्चात् उसने महाराणा को पहाड़ के ऊपर बड़े आदर सम्मान और सुरक्षा से रखा। महाराणा ने उस जगह पर एक बाग बगवाया तथा एक बापी (बावड़ी) भी बनवाई जो अब तक वहाँ मौजूद है।

महाराणा के सूछा पहाड़ पर चले जान के कारण शहवाज खा को महाराणा की कोश भी सूचना नहीं मिली। इस समय बगाल और बिहार के शासक विद्रोह करने लग गये थे। अतः उन्हें दवान के लिये उस समय शहवाज खा का पूव की तरफ बूच करने का वात्शाही आदेश प्राप्त हुआ। अतः मेवाड़ में रवाना होकर शहवाज खा आमाठ शुक्ला ६, १६३७ वि०<sup>१</sup> (१६३६ वि० मन्वानी गणना से) का फतहपुर मवादशाह के पाम पहुँचा। दसका पता लगने पर महाराणा ने पुनः मेवाड़ जाने के लिये रायधवल की सहमति प्राप्त की। अन्त में उस समय रायधवल का इनाम में देन के लिये महाराणा के पाम कुछ भी नहीं था फिर भी उसने रायधवल को राणा की पदवी देकर उसका अपन परावर का मान दे दिया।

वात्शाह ने शहवाज खा के स्थान पर दस्तम खा का अजमेर का सूबदार नियुक्त किया।<sup>२</sup> किन्तु वह कुछबारा विद्रोहिया का सामना करता था। महान में हा मारा गया।<sup>३</sup> तत्पश्चात् उसका स्थान पर बादशाह ने बराम खा के पुत्र मिर्जा खा का जो भाग चल कर खानखाना के नाम से प्रसिद्ध हुआ नियुक्त किया। महाराणा की प्रशंसा में मिर्जा खा द्वारा रचित दाह प्रसिद्ध है। अतः महाराणा से कोई छेड़ छान नहीं की। फलतः मेवाड़ में पुनः महाराणा का प्रभाव स्थापित होन लगा और धीरे धीरे महाराणा आम जनता में अतः यह स्पष्ट होता है कि मिर्जा खा का महाराणा में मन्त्रानुभूति थी।

मुद्रणोत्तर तथ्यामी न निखा है कि बैमाछ शुन पक्ष १६३८<sup>४</sup> (१६३९

१ शनिवार जून १८ १५८० ई०।

२ अन्तम खा १० १५७७ ई० में ही अजमेर का सूबदार था। मेवाड़ अभियान ही केवन शहवाज खा का सौंपा गया था तथा शहवाज खा के चले जान के बाद यह कार्य भी दस्तम खा पर आ पड़ा था। (म०)।

३ भक्तुवर २४ १५८० ई०। महाराणा०, पृ० ४१। (म०)।

४ अरेन २० मई ७, १५८० ई० तक।

वष अर्थात् १६५३ वि०<sup>१</sup> तक महाराणा का कोई विवरण नहीं मिलता । इस वष भी महाराणा की मृत्यु की सूचना ही लिखी हुई है ।<sup>२</sup> इस लम्बे समय तक मेवाड़ के प्रति बादशाह की उत्तमीनता और महाराणा के विरुद्ध सना नहीं भेजन का यही कारण था कि बादशाह १६४१ वि० (१५८४ ई०) से पजाब में रहा और उसका ध्यान अधिकतर उत्तर पश्चिमी सीमा की तरफ था क्योंकि तूरान के शासक अन्दुला खा उज्जैन के साथ विगाड़ हो गया था और बारबार उसके काबुल और हिंदुस्तान पर आक्रमण करने के समाचार फैलते रहते थे ।

टाड-राजस्थान में लिखा है कि महाराणा के कठिन समय का देख कर उनके पुश्तनी दीवान भामा शाह को दुख हुआ और उसने अपने पूज्या द्वारा सचित धनराशि महाराणा को सौंप दी । महाराणा ने इसी धनराशि से घोड़ा और राजपूता की सेना सजा कर त्वर में स्थित बादशाही सेना पर आक्रमण किया और सारी सेना का गाजर मूली की तरह काट डाला । जो बच कर भागे उनका आमेद तक पीछा किया । इस जोश में कुभलमर पर आक्रमण कर वहाँ अन्दुला और लखर खा का मार डाला । इसी तरह से उन प्रदेश के बाइस मुगल थाना पर अधिकार कर वहाँ से शाही सेना को मार भगाया ।<sup>३</sup>

मेवाड़ की तवारीख लिखन वालों का कथन है कि केवल १ वष में ही अर्थात् १६४२ वि०<sup>४</sup> में ही अजमेर चित्तौड़ और माडलगढ़ के अतिरिक्त सम्पूर्ण मेवाड़ पर महाराणा ने पुन अधिकार कर लिया । राजा मानसिंह और जगन्नाथ गव से पहले फिरत था कि हमने महाराणा की बन्दी बुदशा का मो उनसे बदला लेने के लिय महाराणा ने साथ ही आम्बर पर हमला किया और वहाँ के घनाढ्य शहर मालपुरा का लूट कर मिट्टी में मिला दिया ।

महाराणा के अन्तिम वष शांति में निकले क्योंकि इन अन्तिम १२ वर्षों में मुगलान ने मेवाड़ पर कोई चढ़ाई नहीं की । इन उस समयावधि में

१ १५९७ ई० ।

२ अ० ना० (अ० अ०) ३ पृ० १०६९ । (स०) ।

३ टाड राजस्थान० (आ स०) १ पृ० ४०३ । (स०) ।

४ १५८५-८६ ई० ।

महाराणा न उजड़े हुए मेवाड़ की ओर ध्यान दिया। मुगल आक्रमण के कारण उदयपुर आदि होत होत रह गया था उसको नये सिरे से बसाया। जिन मेवाड़ी सामन्तों ने बठिनाई के समय महाराणा का साथ दिया था महाराणा ने उनको बड़ी बड़ी ज़मीनों प्रदान की तथा उनके दरज और कुब म वृद्धि की।

**महाराणा का देहांत —**

संवत् १६५३ वि० में महाराणा का देहांत हो गया। तिथि ज्ञात नहीं हुई। टॉड राजस्थान और मुद्गलांत नैगमी की क्वात में काद तिथि नहीं है। परंतु अकबर नामा में लिखा है कि बहमन माह की ३ तारीख मद् ४१ जूवसा<sup>१</sup> तदनुमार माह मुनी ३<sup>२</sup> संवत् १६५३ वि० को महाराणा कीका<sup>३</sup> का मृत्यु उसके अग्रणी पुत्र अमरा द्वारा जहर खिना देने तथा एक धनुष की प्रत्यक्षा चढ़ान के प्रयत्न में लगे भटके के कारण हो गई।

**टॉड 'राजस्थान' के अनुसार महाराणा की मृत्यु का विवरण—**

महाराणा का सारा जीवन विपत्ति और युद्ध में बीता था। उसका सम्पूर्ण शरीर युद्ध में लगे हुए घावा से भरा हुआ था। हर समय की चिन्ता और दुःख के कारण अपना जवानी में ही वह बूढ़ा हो गया था। रात दिन की दौड़ धूप के कारण उसके हाथ परो में शिथिलता आ गई थी। उस माना प्रकार की बीमारियाँ हो गई थीं। उसके अन्तिम समय की क्या भी उसकी बहादुरी का प्रतीक बन गई। उसने अपने उत्तराधिकारी को यह शपथ दिलाई की हमेशा शत्रुओं से लड़ना और युद्ध से कभी भी पीछे मत हटना। अमरमिह न यह

१. इस इनाही तारीख के दिन मही तिथि माह मुनी ० (=रविवार, जनवरी १६ १५९७ ई०) थी। इस तारीख के सम्मुख जो तिथि यहाँ आगे मुनी दली प्रमाण से दी है वह मही नहीं है। (स०)।

२. इस तिथि के बाद हमको एक उदयपुरी मित्र के पत्र से पालूम हुआ कि महाराणा का देहांत माह मुनी ११ (तदनुमार बुधवार, जनवरी १९ १५९७ ई०) को हुआ था। (स०)। यही तिथि सही है। (स०)।

३. अकबर बाग़ाह महाराणा प्रतापसिंह का शगा कीका कहता था। (स०)।



मपय ली और महाराणा का वचन भी लिया। लेकिन महाराणा को सताप नहा हुआ क्योंकि वह जानता था कि उमरा पुत्र स्वतंत्रता के पथ पर आनवादी कठिनाइयाँ और सबक बाल का नहीं मह मक्का। अमरमिह के प्रति महाराणा की एमी धारणा एक समय घटित घटना के कारण बन गई था। घटना दम प्रसार थी—महाराणा और उमरा सामन्त ने पीछाला भीन के किनारे पर कई भापड़े बना लिये थे। अपना सबक-बाल उन्हीं में मिलाते थे। राशि के जघन और वर्षा में भी वही भापड़ियाँ में रहते थे। एमी की भापड़ी से निकलने समय राजकुमार अमरमिह का यह ध्यान नहीं रहा कि उमरा दरवाजा उन्नत नीचा और उमरा बास बाहर का निकला हुआ था जिससे वह बास उमरी पगडा में फँस गया और वह उसका खूबत हुए भाग घला गया था। महाराणा ने अपने पुत्र की इस जल्दबाजी का दृष्टा ता उस दुःख हुआ। उसको यह विश्वास हो गया कि उमरा पुत्र शत्रुता से मुक्त करने की तत्कालीन का जब भी सामना नहीं कर सकेगा।

तब एक दूटे हुए भापड़े में महाराणा चला हुआ था। विपत्ति के निम्न में उमरा सहायक सभी मवाडा सामन्त उमरा सिरहाने बैठे वहाँ लाचारा उमरी और दुःख के साथ उमे देख रहे थे। ऐसा स्थिति वहन कर तक बना रही तो ठंडी साम भर कर मनुष्य के मरदार ने महाराणा से पूछा कि आपका एमी क्या परगानी है (किन्ना है) जिसमें आपका प्राण भटक गया है निम्न नहीं रहे हैं। तब महाराणा ने स्वयं का मभारा और उत्तर दिया कि

तुम सब मुझे आश्वासन दो कि मेरे मरणापरांत मवाड का प्रश्न तुम्हें का नहीं है दिया जावेगा। उस भापड़े बाना घटना के कारण अपने पुत्र के स्वभाव का विचार करके मैं यहाँ ममक रहा हूँ कि मेरे बाल में वह इन भापड़ा के स्थान पर बड़े बड़े मत्त बनवा कर आगम में लीन हो जावेगा। अब मवाड की स्वतंत्रता जिस के नियम में जाना खून बहाया है उमरा हाथ में चली जावेगी। क्या तुम भी उसी के अनुसार हो कार्य करोगे? महाराणा करण के ये शब्द सुन कर सभी सरलरा ने बाप्पा रावन के मिहासन का मपय ली और कहा कि हम सभी राजकुमार की तरफ से यह जमानत दान है कि जब तक मवाड का पुनः स्वतंत्रता नहीं मिल जाती है तब तक हम सभी राजकुमार का महान जाति नहीं बनाने दोगे और न वही आराम में बैठने दोगे। अपने सरलरा द्वारा कही गई बात सुन कर महाराणा पूरी तरह आश्चर्य हो गया और उमरा प्राण तत्काल निकल गये।

टाड का कथन है कि उन प्रदेशों के शामका का, जिनके प्रदेश इस प्रकार की उद्यम-मुख्य स वचे हुए हैं। मानना चाहिये कि इस राजपूत शामक प्रताप में कितनी बहादुरी और शूरवीरता का जोश भरा हुआ था, जिसने अपनी छोटी सी ही फौज और सीमित आर्थिक माधन के होते हुए भी एक तेजे बड़े वात्साह का सामना किया जिसकी मेना की गिनती भूतना पर आक्रमण करने वाली ईरानी सेना से भी कई गुना अधिक थी।

अरावली पहाड़ा में कोई भी ऐसी घाटी नहीं रही है निम्न महाराणा ने बहादुरी का काम नहीं किया है जिनमें या तो उसकी विजय हुई होगी अथवा पराजय भी ऐसी हुई होगी जिसमें उसकी प्रतिष्ठा बड़ी और उसका प्रसिद्धि भी मिता थी। इन सदाइया में से हल्की घाटी और नेवर की 'वडा'याँ विशेष प्रसिद्ध हैं।<sup>१</sup>

### सारांश

महाराणा प्रतापसिंह बड़ा बहादुर और शक्तिशाली राजपूत था। राजपूतों में जो गुण हान चाहिये वे सभी गुण उसमें विद्यमान थे। योग्यता और बहादुरी के क्षेत्र में वह अनवर स किसी प्रकार कम नहीं था।

वह इतना धीर बाग और संभार था कि निरंतर सक्क-काल हान और लगातार युद्ध करने रहने पर भी महाराणा अपनी बात का धनो बना रहा। उसकी सेना के हजारों सैनिक मार गये, फिर भी वह कभी भवराया नहीं। उसका व्यवहार इतना अच्छा था कि उसका पास धन सम्पत्ति नहीं हान पर भी बचल अपनी मिलनमारी प्रवृत्ति के कारण ही वह अपना कार्य बड़ा आमाना से निवाल लेता था। वह अपनी प्रजा का इतना प्यारा था कि जब वह चाहता हुआ मैनिका का जान तक देने के लिये तत्पर कर लेता था। उसका हितार्थ बहुत से आत्मीय मर खप गये फिर भी उसकी प्रजा महाराणा का पूर्ववत् ही चाहती थी।

महाराणा ने मयान का भी पालन किया। अपने प्रपञ्च के जिन कानूनों और अपने पूर्वजों द्वारा बनाये गये दरवारी रिवाजों का आति के निम्न में

भी बहुत ही कम लोग पालन कर सकते हैं, महाराणा ने अपन विपत्ति के दिना में भी उनका बहुत अच्छी तरह पालन किया था ।

अपन प्रशस्ति के प्रति प्रेम और उसकी स्वतन्त्रता की चाह महाराणा में कूट-कूट कर भरी हुई थी । कड़ा मेहनत करने का यह ज्ञान था कि भूखा मरता था । राजसिंहासन के स्थान पर पत्थर पर बैठता था छत्र के स्थान पर चक्षा की छाया में समय व्यतीत करता था और आराम के नाम से बहुत ठण्डी हवा भी नहीं मिलती थी । फिर भी उसने अपन पूर्वजा से प्राप्त जंगल और पहाड़ शत्रुओं को देना नहीं चाहता था । अन्त में इस मेहनत का परिणाम यह निकला कि अपन छाया हुए राज्य का शाहूजी शेर की डाढ़ में से उभरे निकाल लिया और अपना बाकी रहा जीवन आराम से काटा ।

बादशाह अकबर और महाराणा प्रतापसिंह के सम्बन्धी अनन्व गीत और कविता बनाय गए हैं । उनमें से कुछ दोहें यहाँ उद्धृत किये जाते हैं—

- १ अकबर समद अयाह सूरायन भरया मजल ।  
मवाडा तिग माह पायण फूल प्रतापमी ॥ १ ॥
- २ अकबर धार अधार उधाण हिङ्ग अवर ।  
जाग जगतातार पोहर राण प्रतापमी ॥ २ ॥
- ३ अकबर एरण बार दागल की मारी दुना ।  
बिन दागल असवार एकज राण प्रतापमी ॥ ३ ॥<sup>१</sup>
- ४ खपो पीता डाह पारम तगो प्रतापमी ।  
मोरभ अकबर साह अनिवन आभयो नही ॥ ४ ॥
- ५ पातन पाथ प्रणाम साचा सागाहर धरणी ।  
रही सदा नग गगन अकबर मू ऊभी अणी ॥ ५ ॥<sup>२</sup>

पण्डित गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने उदयपुर में महाराणा प्रतापसिंह और कुंवर मानसिंह के मध्य हुए (हन्दी घाटी के) युद्ध संबंधी एक श्लोक भेजा है जो उनको विसा प्रशस्ति में मिला था । इसमें कवि का धमत्कार है जिस यहाँ दिया जा रहा है—

१ उपयुक्त तीनों पद्य दुर्गादास रचित हैं । (सं०) ।

२ यह पृथ्वीराज राठौर रचित है । (सं०) ।

## श्लोक

कृत्वा कर खङ्गलता सुवल्लभा,  
प्रतापमिहे समुपायते प्रग ।  
सा खडिता मानवती द्विपच्चमू,  
मकोचयती चरणौ पराड मुखी ॥

## अर्थ

प्रातः काल में अतिशय प्यारी खङ्गलता को हाथ में लिय हुए प्रतापमिह के युद्ध भग्न भ) आने पर घरती सनुचित होने लगी और मानमिह की शत्रु मना युद्ध क्षेत्र से विमुख होकर भाग गई ।

इस श्लोक का दूसरा अर्थ मानवती नायिका के सदृश भी लगाया जा सकता है ।<sup>१</sup>

## कुछ त्रुटियाँ

महाराणा में सम्बंधित इतिहास के लेखक ने अपने बहाना में कुछ त्रुटियाँ भी की हैं । जने —

१ टाण राजस्थान में यह शतक लिखा है कि 'हल्दी घाटी में बादशाह अकबर का पुत्र शाहजहाँ मलीम भा मानमिह के साथ आया था ।' इसका पुष्टि अकबर मस्जिद की भी ऐतिहासिक ग्रंथ से नहीं होनी । साथ ही शाहजहाँ मलीम का जन्म स० १ २६ (१५६९ ई०) में हुआ एवं उस समय वह अकबर ॥ वर्ष का बालक था, उस एसी अकबर चन्द्र में अकबर कस भज सकता था ।

२ राज प्रशस्ति में भी यही भूल हुई है कि बादशाह अपने बेटे शाहू बादा का मवाह में छोड़ गये थे लेकिन यह विवरण भी मवात् १६३२-३३ (सन् १५७४-७६ ई०) का है । उस समय शाहजहाँ छ वर्ष का बालक ही था ।

१ जगन्मोह-मन्त्रि की प्रशस्ति शिला १ श्लोक स० ४१ । वीर०, २, पृ० ३८७ । (म०) ।

३ मेवाड के हिन्दी इतिहास में इससे भी वही अधिक प्रातिपुर्ण बातें लिखी हैं जस महाराणा को सिकानिया<sup>१</sup> का सूचनाएँ देते रहना बादशाह के जनानखाने में पहुँच कर महाराणा का बादशाह का मूँछ काट लाना जानि । ये बातें किसी भी तरह मानने योग्य नहीं हैं ।

**महाराणा के राजलोक और कुवर—**

महाराणा के निम्नलिखित १२ रानिया थीं । उनका शीरा यो है —

२ चौहान,

२ पवार

१ सोलंकिनी

४ राठोड़ (जोधपुर मेड़ता और ईटार राजवंश का)

१ भाली हलवद की

१ हाडी - धूँदी की और

१ देवडी - मिराही की ।

१२

महाराणा के कुवरा के बारे में मतभेद है लेकिन ये छ पुत्र प्रसिद्ध हुए थे—<sup>२</sup>

१ अमरसिंह—जन्म चन मुदी ७ १६१६ ।<sup>३</sup> पूरबिया चौहान मुबारक खा का भानजा और अशाकमल का गृहिता था ।

२ सखरा

३ कल्याणरास

४ कचरा,

१ अदृष्ट वंश - भविष्य तथा दूर क्षेत्रीय वाता का बना सकने वाला ।

२ महाराणा प्रताप स्मृति ग्रंथ (महाराणा प्रताप के परिजन) में इनके अतिरिक्त सीहा भगवानदास रापाल मावन्दास दुजननाम चाना हाथी रायसिंह जमवतसिंह माना नाथा और रायभाण वारहू नाम दिये हैं । (सं०) ।

३ गुम्वार माघ १८ १५५९ इ० ।

४ महना—अपन बड़े भाई अमरसिंह की विपत्ति के समय में उसने उसका बहुत सवा की। इसका पुत्र भोपत बड़ा दातार हुआ। वह महाराणा की ओर से शाही सवा करता था।

८ पूरगमन—वह सन् १६९४ वि०<sup>१</sup> जोधपुर आया। सन् १८०० वि० तक इसको जोधपुर राज्य के अतगल जागीरें प्राप्त हुई थी।

---

१ नगमा० (प्रतिष्ठा १ पृ २८) न धनुमार पूरगमन स० १६६८ वि० का जोधपुर चला गया था पार स० १६८० में उस महता का गांव बाहा रहित ४ गांव जागार में मिले थे। (अ०)।

## आम्बेर (जयपुर)

### (१) राजा पृथ्वीराज, आम्बेर

राजा पृथ्वीराज आम्बेर के राजवंश में बड़ा नामी और भगवद्भक्त हुआ है। अतः आम्बेर के राजाओं के इतिहास में पृथ्वीराज का वर्णन कम और भगवान के भक्त के चरित्र में इस राजा का वर्णन अधिक मिलता है।

पृथ्वीराज संवत् १५५९ वि० का फागुण वदी ५<sup>१</sup> का अपने पिता राजा चंद्रसेन के मरणोपरान्त आम्बेर की राजगद्दी पर बैठे। इस शासनकाल में भी उसके पिता के शासनकाल के समान ही कछवाहा की शेखावत और नरुका शाखाओं का बसेड़ा बना रहा। पृथ्वीराज ने यथा-संभव प्रयत्न कर इनको दबाय रखा, और बाहरी शत्रुओं से भी राज्य का

वचाये रखा। पृथ्वीराज को इहनाक की अपक्षा परलोच की अधिक चिन्ता थी, और मात्सरिक मुछ भागने के स्थान पर उमको तपस्वी जीवन ज्यान्त पसन्द था। उमने भोग-विलास को छोड कर जोगी चतुरनाथ से कठिन याग-माधना सीखी थी। योगी चतुरनाथ अपन समय का माना हुआ प्रसिद्ध तपस्वी था। प्राय गुरु और शिष्य दोनो ही अविकेश्वर महादेव के मंदिर म योग माधना और समाधि लगाया करते थे। एक दिन यागी न प्रमत्त हासर पृथ्वीराज को वरदान दिया और उमन जाल के एक वृक्ष की तरफ इशाग कर क कहा कि 'इमी की तरह तुम्हार वंशजो का राज्य बना रहेगा।'

कुछ समय पश्चात् रामानन्द स्वामी का शिष्य कृष्णदाम पयहागी भ्रमण करता हुआ भाम्बर पहुँचा। बीकानेर के राव सुगवरण की पुत्री पृथ्वीराज की बीबावत रानी बाल बाई न साधु कृष्णदास को अपना गुरु बना लिया। इस कारण धम को लेकर राजा-रानी म बाद विवाद हान ग्या। राजा अपन गुरु और शवमत की प्रशंसा करता था, और रानी अपन गुरु और वष्णव धम का थोँठ घताती थी। इसी तरह प्रजा म भी इन सम्प्रदाय के समर्थका म स्थान स्थान पर धार्मिक वमनस्पता को लेकर भगडे और झलडे होत थे। अन्त म यहाँ पर राजा और रानी के धार्मिक शिक्षा के मध्य शास्त्राथ हुआ, जिमम चतुरनाथ पराजित हो ग्या। कृष्णदास न भोगिया के स्थान गलता को इस शास्त्राथ म जीत कर वहाँ अपने सम्प्रदाय का गुरुद्वारा बनवाया। साथ ही (शवमत मानन वाले) यागिया पर प्रतिदिन हवन के लिये लकड़ी के दा गठूर लाने का वण्ड भी सक्का दिया। तत्पश्चात् राजा न भी कृष्णदाम से दाशा ली। कृष्णदाम न एक प्रतिमा नरसिंहजी की तथा एक सीतारामजी की पूजा के लिय राजा को दी और कहा कि जब तक भाम्बर म नरसिंहजी की यह प्रतिमा रहगी, तब तक तुम्हार वंशजो का राज्य कायम रहगा और सीतारामजी की प्रतिमा को पुढ क्षेत्र म धाग रख कर युद्ध करोग ता विजय होगी।' उमी समय स भाम्बेर (जयपुर) राज्य म यह प्रथा चली आ रणी है कि सवारो और युद्ध के समय सीताराम जी की सवा का हाथी आगे रहता है। तभी स यह कहावत भा प्रचलित हा गई है कि, लडहू खान के लिय मत्नमाहनजी और लडन के लिय सीतारामजा।

राजा के वष्णव धम स्वीकार करन के कारण भाम्बर म बहुत म



लागा ने भी वष्णुव मन स्वीकार कर लिया। अय क्षेत्रा में यह खबर फलन से दूर दूर के स्थानों से वष्णुव माधु सत आम्बर में भ्रान लगे। राजा ने सभी माधुमा का आदर सत्कार किया और जगह-जगह भगवान के मंदिर बनवाये। तत्पश्चात् उसने अपने गुरु के साथ द्वारिका को घम यात्रा पर जान का निश्चय किया। किंतु राजकीय कमचारियां ने राजा का द्वारिका जाना राज्य के अहित में समझ कर उसके गुरु कृष्णदास से प्रार्थना की कि वह राजा का अपने साथ नहीं ले जावे। अतः गुरु ने भी राजा को द्वारिका जाने से मना कर दिया तथा कहा कि तुम्हारे लिये अपने राज्य में रहना ही उचित है। अगर तुम्हारी भक्ति सच्ची है तो तुम्हें यही पर द्वारिकानाथ के दर्शन हो जावेंगे।" यह सुन कर राजा बहुत उदास हुआ और तीन दिन तक भूखा प्यासा रहा। चौथी रात्रि में श्री रणछोड़ भगवान ने स्वयं ही राजा को दर्शन दिये। राजा ने अपनी रानी बीकावत का भी जगाया। रानी ने राजा के भाग खड़े होकर भगवान के दर्शन किये। भगवान के दर्शन में रानी एसी मग्न हो गई कि उसको समय ज्ञान ही नहीं रहा। उधर राजा भी भगवान की भक्ति और प्रेम में अपने वर्तमान को भूल कर अपना रानी को कहने लगा कि बाई<sup>१</sup> अगर दर्शन कर चुकी हो तो एक तरफ हट जा और मुझे भी दर्शन करने दे। रानी ने यह सम्बोधन सुन कर राजा की तरफ देखा तथा कहा कि तुमने मुझे बाई कस कहा? राजा का वस्तुस्थिति का ज्ञान हान पर वह बहुत शर्मित हुआ। उसी दिन में यह रानी अपने समुराल में बाला बाई के नाम से पुकारी जान लगी।

बालाबाई से राजा की विशेष प्रेम थी। अय रानिया की सुरता में उसके सत्तान भी अधिक थी। उसके कुल ११ पुत्र थे जिनके वंशज आज भी जयपुर के राज्य में राजा के अतिरिक्त जयपुर के बड़े बड़े जागीरदार हैं।

जयपुर में आज भी बाला बाई के नाम की विशेष मान प्रतिष्ठा है। जाम्बेरे में ■ य देवी देवताओं के मंदिरों की पूजा के समान ही बाला बाई के बठन की माल<sup>२</sup> की आज भी पूजा होता है।

राजा पृथ्वीराज ने लगभग पच्चीस वर्ष तक राज्य किया। वह सन्

१ बाई शब्द पुत्री या वहिन के लिये ही प्रयुक्त होता था। (स०)।

२ एक प्रकार का बड़ा कमरा। (स०)।

१५८४ के वार्तिक में मरा ।<sup>१</sup> टाड ने अपने इतिहास में यह<sup>२</sup> म लिखा है कि राजा पृथ्वीराज भगवान के स्थान करने के लिये द्वारिका गया था । माग में उसके पुत्र भीम ने जो राक्षस वृत्ति का था उसको मार डाला । तब उसने सरदारा न भीम के पुत्र आसकरण का, भीम का भाग्न के लिये तैयार किया तथा कहा कि तीर्थ यात्रा द्वारा इस पाप का प्रायश्चित्त कर लेना ।<sup>३</sup> पता नहीं यह बात कहाँ तक सत्य है ? क्योंकि जहाँ तक मुने (देवाप्रसाद का) मान्य है जयपुर की तबारीख में ऐसी कोई बात नहीं पायी गई है ।

राजा पृथ्वीराज के ९ रानियाँ थीं जिनसे उसके कुल १९ पुत्र हुए —

- १ तखर रानी के पूरणमल हुआ ।
- २ धीरावत रानी की बेटों में भीम सागा पचारा भारमल गोपाल, सुरताण जगमल बगभद्र, रायमल चतुर्भुज महमल नामक ११ पुत्र हुए ।
- ३ बड़मूजर रानी से प्रतापसिंह और रामसिंह नामक पुत्र हुए ।
- ४ सीसोदिनी रानी से कल्याणदास और भीखा नामक पुत्र हुए ।
- ५ गौड़ रानी से रूपसी बराणी नामक पुत्र हुआ ।
- ६ सालकिनी रानी से साईदास नामक पुत्र उत्पन्न हुआ ।

राजा पृथ्वीराज के इन पुत्रों का वंश दिन प्रतिदिन बढ़ता गया और कुछ ही प्रमुख वंशजों के तो बड़ी बड़ी जागीरें भी हैं । उनमें में कुछ जागीरों की आरम्भिकता तो एक समय की सम्पूर्ण रियासत की आरम्भिकता के बराबर थी ।

पूरणमल के वंशज पूरणमलौत भीम के वंशज में नरवर के राजा पचारा के वंशज पचायणौत, गोपाल के वंशज गायवत, सुरताण के वंशज सुरताणौत, चतुर्भुज के वंशज चतुर्भुजात तथा रूपसी के वंशज जगो और बराणा के वंशजों के नामों से प्रसिद्ध हैं । मागा के कोई पुत्र नहीं हुआ किन्तु मागानर वंशजों से उनका नाम भीलाद वंशजों से ज्यादा प्रसिद्ध है ।

१ भक्तनर नवम्बर १५२७ ई० । (स०) ।

२ गी० राजस्थान० (आ० म०) पृ० १३२७ । (म०) ।

जयपुर राज्य के प्रमुख मरदारों में १२ मरदार केवल पृथ्वीराज के वंशज हैं। जिनकी जागीरें वारह बोटदी कहलाती हैं। उनमें में चोमू और मामाद के नायाबत बगरू के चतुर्भुजात डिग्री के खगारोन, अचराल के वनमद्रात मरदार जयपुर राज्य में अत्यधिक बलशाली और अपना एक विशिष्ट स्थान रखते हैं।

राजा पृथ्वीराज का समकालीन दिल्ली का बादशाह सिकन्दर लोदी था। सन् १५८२ वि० (सन् १५२६ ई०) में मुगल बादशाह बाबर ने उसके पुत्र इब्राहिम लोदी को युद्ध में परास्त करके दिल्ली पर अधिकार कर लिया था। मारवाड़ में राव भूजा राज्य करता था और उसके पश्चात् सन् १५७२ वि० (सन् १५१४ ई०) में राव माणा राजगद्दी पर बैठा। चित्तौड़ में राणा रायमल था। उसके मरणापरांत सन् १५६६ वि० (सन् १५०९ ई०) में महाराणा सप्रार्थमिह मिहामन पर बैठा जो प्रायः चल कर राणा माणा के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

ऐसा कहा जाता है कि राणा माणा अपने राज्याराहण से पहले अपने भाइया के आपसी भगडा के कारण मवाद छाड़ कर आम्बर चला गया। वह मिपाहा के भेस में राजा पृथ्वीराज के यहाँ सेवा करने लगा और रात्रि के समय वह राजा पृथ्वीराज के महल का पहरा देने लगा। एक बार वर्षाकाल में सावन भादों की काना कानी घटाआ में रात्रि का अधरा बहुत बन्ना हुआ था और माणा महल के नीचे खड़ा पहरा दे रहा था। उन्ही समय वर्षा होने लगी। पहाड़ के ऊपर से वर्षा का पानी इतनी तीव्र गति से गिरने लगा कि उमकी आवाज माणा के कानों का बुरी लगी। उसने सोचा कि पानी की यह आवाज मेरे में भी ज्यादा राजा का भा खराब लग रही होगी। इसी विचार में उसने एक बड़ा सा घास का गद्दर जो पास ही पड़ा था, उठा कर पानी के गिरने के स्थान पर डाल दिया। फलतः पानी की वह नापसन्द आवाज तुरन्त ही बन्द हो गयी। देवयोग से उस रात्रि में पृथ्वीराज की मीसोन्गिनी रानी जो माणा की पूफी (बुआ) थी पृथ्वीराज के साथ थी। उसने पुनः वह वचन कर देने वाला शोर नहीं सुना तो राजा ने कहा कि अब वर्षा बन्द हो गयी है। राजा ने कहा कि वर्षा तो नग रहा है परन्तु आश्चर्य है कि नाल का पानी गिरना कैसे बन्द हो गया है? अतः उसने एक मक्का को इसका कारण जानने के लिये भेजा।

उमन वापस आकर निवेदन किया कि नाला तो बसा ही गिर रहा है, लेकिन पहर पर खड़े सिपाही न नाले के नीचे घास रख दी है, जिससे पानी के गिरने से गिरन की आवाज नहीं होती है।" राजा यह सुनते ही समझ गया कि पहर पर खड़ा हाने वाला साधारण सिपाही नहीं है। वह कोई अमीर या अमीर का पुत्र है जिसका पानी की यह आवाज पसंद नहीं थी और पूरा व्यवस्था करने वाला भी है जिसने तुरंत ही उपाय करके पानी की आवाज भी बन्द कर दा। राजा ने अपना यह विचार रानी के समक्ष भी प्रकट कर दिया। तब रानी ने कहा कि मैंने सुना है कि मेरा भतीजा मागा घर छाड़ कर निकल गया है। वही पहर पर बट ही तो नहीं है क्योंकि वह भी इसी तरह का आदमी है। अतः राजा ने उसका पहर से बुलवाया और गुप्त रूप से उसको रानी का भा बिछा दिया। रानी ने सागा को पहचान लिया। इस पर राजा का बहुत आश्चर्य हुआ। उसने राणा सागा का बहुत आदर-सत्कार किया और कहा कि मुझ से सारी बात क्या छिपायी थी? क्या मैं काह पराया था? तब उसी दिन से राणा मागा का आदर-सत्कार हान लगा। कुछ समय के पश्चात् राणा सागा राजा पृथ्वीराज से अनुमति लेकर वापस अपने घर (मवाड) चला गया और अपने पिता के दरबारपरान्त राज गद्दी पर बैठ कर बड़ा बभबशाली शासक बना।

## (२) राजा पूरणमल कछवाहा

राजा पृथ्वीराज के बाद उसका बड़ा पुत्र पूरणमल कार्तिक सुदी १२ मन्वत् १५८४ वि०<sup>१</sup> की श्राव्हेर की गद्दा पर बैठा। उस समय मुगल का सत्ता हिन्दुस्तान में स्थापित हो गई थी। बाबर के मरणोपरान्त सिन्धी के मिहामन पर बादशाह हुमायूँ बैठा। राजा पूरणमल ने बादशाह का आधानता स्वीकार की और राजा के खिताब के अतिरिक्त माहीमरातिरा भी प्राप्त किया। वह अपने वंश में पहला शासक था जिसने मुगल बादशाहों से मित्रता बनाने की नींव रखी थी। इनके बाद ही इसी नींव पर एक भयंकर इमारत का निर्माण किया गया। जिससे इमारत और बनाने वाला का नाम इतिहास में प्रसिद्ध हुआ।

राजा पूरणमल ने मिर्जा हिन्दाल<sup>१</sup> के विरुद्ध युद्ध करके अपनी जान नष्ट वादशाह हुमायूँ की महारवानिया का बदला चुकाया। वह वादशाह का भाग हात हुए भी वादशाह (हुमायूँ) का विरोधी था।

इस प्रकार इस राजा ने जो रामचन्द्र के वंशजा में से पहला व्यक्ति था मुगल वादशाह के आपसी युद्ध में माह मुदी ५ सवत् १५९० वि०<sup>२</sup> के त्तन अपना खन बहाया। इस वसन्त ऋतु में जबकि दूसरे राजा और राव अपने महाना में अपनी रानिया के साथ रण और मुलाल से खेल करत हुए जान-मना रहे थे त्तम बहादुर राजा ने युद्ध मदान में भुमलमाना से अपने खन की हाना खली थी।

राजा पूरणमल के दो रानिया राठोड और चौहान जाति की थी। उसमें केवल एक पुत्र सूरजमल अभी केवल दो वर्ष का बालक मात्र था। इसी कारण वह अपने पिता का उत्तराधिकारी नहीं बना। उसकी मा बालक के चाचा भीम के डर से भयभीत होकर अपने बच्चे को लेकर अपने पिता के वहाँ चली गई। और भीम जो राजा पूरणमल के समय में राज्य काय का सम्पूर्ण भार सम्भाल हुए था और जिसको टांड ने पितृहन्ता बनाया है पूरणमल के बाद आम्बेर की गद्दी पर बैठा।

१ अकबर नामा में केवल जना लिखा है कि राजा पूरणमल मिर्जा हिन्दाल की लड़ाई में मारा गया। इसमें जलावा कहीं पर भी पूरा विवरण नहीं मिलता है। मगर यह एक किस्मती प्रसिद्ध है कि वादशाह हुमायूँ ठाण मिर्जा त्तन को अकबर और मेवात का प्रणेश दिया था। उहाँ ने त्तन ने अखावता पर आक्रमण किया और राजा पूरणमल अखावता की सहायता करना दुआ त्तम युद्ध में मारा गया। (दवी०)।

२ सामवार जनवरी १० १५२६ ई०।

## (३) राजा भारमल कछवाहा

आपाट कृष्ण ८ संवत् १६०४ वि०<sup>१</sup> के दिन राजा भारमल आम्बर के सिंहासन पर बठा, उस समय दिल्ली में शेरशाह सूरी का पुत्र सलीमशाह मूर था। राजा आमकरण तीस यात्रा करता हुआ सलीमशाह मूर के पास पहुँचा और अवसर पाकर उसने अपना सम्पूर्ण वृत्तांत बान्शाह को निवेदन किया। बादशाह ने हाजी खा पठान को राजा आमकरण की मदद के लिये जान का आदेश दिया। अतः हाजी खा ने आम्बर पर चढ़ाई की। राजा भारमल ने हाजी खा से समझौता कर अपने भाई रूपसी को बान्शाह सलाम शाह मूर के पास भेजा। इससे आमकरण भी बान्शाह के दरबार में पहुँचा और उसने याद दिलाई कि वह सेना (हाजी खा) तो मुझ मरा राज्य जितान के लिये भेजी गयी है। रूपसी ने भी बान्शाह से निवेदन किया कि नगबर

का प्रदेश हमारा प्राचीनतम स्थान है और बहुत समय से वह हमारा अधिकार में नहीं है, वह पुनः आसकरण को दिलवा दें। बादशाह ने नरवर आसकरण को दिला लिया और आबर भारमल के पास ही रख कर हाजी खा को पुनः दरबार में बुला लिया।

सन् १६१२ वि० (१५५५ ई०) में हुमायूँ बादशाह ने जिमको कुछ समय पहले शेर खा ने हिन्दुस्तान से खदेड़ दिया था, अब पुनः काबुल की तरफ से आबर सनीमशाह के बेटा का हटा कर दिल्ली पर अधिकार कर लिया। लेकिन इस विजय के छ माह बाद ही वह मर गया। उसका पुत्र अकबर पंजाब में सिंहासनारूढ़ हुआ। ऐसी परिस्थिति में पठाना ने मुगल को निकालने का प्रयत्न किया और हाजी खा ने आगे बढ़ कर नारनौल का किला घेर लिया। राजा भारमल भी हाजी खा के साथ था। वहाँ का किलेदार मुवाजर खा पठाना की शक्ति को देख कर घबरा गया। लेकिन राजा भारमल ने बीच बचाव करके नारनौल का दुग हाजी खा को सौंप दिया और किलेदार मुवाजर खा को उसके भाल जमबाब सहित सुरक्षित रूप से वहाँ से निकाल दिया। कुछ समय पश्चात् जब अकबर बादशाह पंजाब से दिल्ली पहुँचा तब नारनौल के उक्त किलेदार ने बादशाह का राजा भारमल द्वारा की गई सहायता का विवरण बड़ी प्रशंसा के साथ सुनाया। बादशाह ने भी प्रसन्न होकर राजा का दरबार में बुलाने का आदेश दिया। अतः वही किलेदार राजा भारमल के पास गया और उसको बादशाह के पास दिल्ली ले लाया। बादशाह ने राजा का सत्कार और सम्मान किया। बादशाह ने कुछ समय तक राजा का अपन पाम रखा और फिर उसको आबर जान की स्वीकृति दी।

जिम दिन राजा भारमल और उसके भाई बेटा को बादशाही खिलअत मिले और उनको बिगाड़ के नियम बादशाह के पाम ल गये उस समय बादशाह अकबर एक मस्त हाथी पर गवार था और वह हाथी अपनी मस्ती में इधर उधर लौट रहा था। वहाँ उपस्थित सभी लोग हाथी में डर कर इधर-उधर भागते थे। हाथी अपनी मस्ती में एक बार इन राजपूतों

१ जिमी पुस्तक में मजनु खा लिखा है। (दबी०)। अ० ना० (५० अ०)

२ पृ० ३६। (अ०)।



परशान है और पहाड़ा में छिपा हुआ है।' बान्शाह ने कहा कि 'ऐसे शुभ चिन्तक को सता कर मिर्जा ने बहुत बुरा किया। अब तुम जाओ और उस सात्वना देकर बादशाही दरबार में ले आओ। हम उसके साथ महरबानी में पेश आवेंगे। यह सुन कर चंगताई खा उसी दिन राजा का लान के लिये रवाना हो गया।

जब बादशाह बीज महित बीसा पहुँचा तब वहाँ के हाकिम और राजा भारमल के भाई रूपसी ने अपने पुत्र जयमल को बान्शाह के पास भेजा। बादशाह को जब जयमल के उपस्थित होने का समाचार मिला तो उसने कहा जयमल का दरबार में उपस्थित होना भाग्य नहीं है। हमारे आगमन को ईश्वरीय देन समझ कर रूपसी स्वयं दरबार में उपस्थित हों। बान्शाह का यह आदेश सुन कर रूपसी शीघ्र ही दरबार में उपस्थित हुआ। बादशाह ने उस पर बड़ी कृपा की। कुछ दिन पश्चात् चंगताई खा माभर के शाही पड़ाव पर राजा भारमल का उसका सभी भाई बेटा सहित बादशाही दरबार में ले जाया। इस समय राजा का ज्येष्ठ और उत्तराधिकारी पुत्र कुंवर भगवतदास आम्बेर का सुरक्षा हेतु बही रहा और शाह दरबार में उपस्थित नहीं हो सका। बान्शाह ने राजा पर बड़ी महरबानी की तथा कुछ दिनों के बाद अमीर चंगताई खा के साथ उसको एक विशेष काम के लिये पुनः आम्बेर भेज दिया।

मिर्जा शेरकुद्दान ने अजमेर से प्राकर (माभर के पड़ाव पर) बादशाह का सलाम किया तब बान्शाह ने उसका जगन्नाथ आदि राजा भारमल के पुत्र और कुटुम्बिका को दरबार में उपस्थित करने का आदेश दिया। मिर्जा कुछ दिनों तक तो बहाना बना कर टालता रहा लेकिन अजमेर पहुँच कर मिर्जा को मजबूर होकर इन सबका बादशाह के सामने उपस्थित करना ही पड़ा। बादशाह उन सब का देख कर अति प्रसन्न हुआ। साथ ही राजा भारमल के पास भी इनका रिहान की सूचना पहुँचा दी।

अजमेर से वापस लौटते समय माभर में बड़ी घुमघाम के साथ बान्शाह का शाही हुई। दूसरे दिन रतनपुर नामक स्थान पर राजा भारमल पुनः अपने सभी भाई बेटा के साथ बान्शाह के दरबार में उपस्थित हुआ और निवेदन किया कि 'हजरत (बादशाह) आम्बेर पधारें।' बादशाह ने

वहा कि इस समय आगरे जाना बहुत ही आवश्यक है, अगर कभी वापस  
 इधर आना हुआ और समय मिला तो निश्चय ही तुम्हारे घर आवेंगे।' यह  
 कह कर बादशाह ने राजा पर बहुत मेहरबानी की और उसको विदा किया।  
 किंतु उसका पौत्र मानसिंह को होनहार बालक देख कर अपने साथ ले लिया।  
 कुंवर (मानसिंह) का पिता भगवतदाम जो स्वयं भी कुंवर ही था,  
 अपना इच्छा में बहुत से भार्य भतीजों और मह्यगी राजपूता सहित बादशाह  
 की सेवा में रह गया और उसके साथ ही आगरा गया।

इधर राजा भारमल ने बादशाह की हिमायत से माहम पाकर नाहण  
 पर चढ़ाई की। यह शहर टांडा-भीम के पहाड़ा में स्थित भीलों का बस्ती  
 था। इस शहर के ५२ कुंज और ५६ दरवाजे थे। यहां पर एक भीला  
 राज्य करता था। वह बड़ा बहादुर था। लेकिन अब उसने अपनी प्रजा से  
 भ्रूसा हो भी कर लेना शुरू कर लिया था तो प्रजा उससे नाराज हो गई  
 थी। राजा भारमल भी बहुत वर्षों से किसी उचित अवसर की तलाश में  
 था। अब उसने नाहण पर आक्रमण कर दिया और भीलों का मार कर  
 उस मार प्रदेश पर अधिकार कर लिया। इस विजय से टांडा प्रदेश में  
 भागा का राज्य समाप्त हो गया। अब वह सभी राजपूतों के बड़ा नौकरी  
 करने लगे। नाहण राज्य के कारण भागा की जा झूटमार आम्बेर राज्य में  
 हाना रहना था वह भी बंद हो गई। राजा और प्रजा अब शान्ति में रहने  
 लगे।

राजा भारमल ने नाहण के ५० दरवाजे तोड़ कर उस शहर को  
 उजाड़ डाला और उसका नाम दूसरा शहर लिवाण नाम में रखा।

इस प्रकार राजा भारमल अपने राज्य में शान्ति स्थापित कर बाह्य-  
 जाह के नाम आगरा गया। बादशाह ने उसका बड़ा सम्मान किया। बादशाह  
 राजा पर बहुत विश्वास करता था। जब कभी बादशाह किसी दूरस्थ मन्त्रि  
 अभियान पर जाता उस समय राजा का राजधानी की व्यवस्था आर मुरमा  
 न्तु छाड़ जाता था। उसका पुत्र भगवतदास और पौत्र मानसिंह मन्त्र  
 बादशाह के साथ रहते थे। इनकी कभी कभी अलग कार्यों पर भी नियुक्त  
 किया जाता था।

संवत् १६२५ वि०<sup>१</sup> म जब बादशाह भक्वर रणयम्भार का दुग जात कर अजमेर म आगरा जा रहा था, तब माग म अपने बायदे के मुताबिक वह आम्बेर भी गया। लेकिन उस समय राजा भारमल वहाँ पर नहीं था। उसके पुत्र भगवन्तदास ने बादशाह की अच्छी तरह म भेटमान्तारी और अच्छी नजर-निछरावल भी की।

संवत् १६२९ वि०<sup>२</sup> म जब बादशाह गुजरात विजय के लिये खाना हुमा तो सन्ध की तरह राजा भारमल को आगरा म ही छोड़ा गया। राजा ने अपने भाइया और पुत्रा को जगह-जगह पर नियुक्त कर आगरे का बन्द अच्छा प्रबन्ध किया और किमा भी प्रकार की कार्र अग्रिय घटना नहीं होन दी। इसका अतिरिक्त उन दिना के विद्रोही मिर्जा इब्राहिम हुमन और मिर्जा मुजफ्फर हुमन द्वारा दिल्ली पर चढ़ाई का जब सुना, तब उसने अपने भतीज खगार और दूसरे कछवाहा सरलाग को उन विद्रोहिया को भगान के लिये भेजा। खगार ने दिल्ली की सुरक्षा का बहुत अच्छा प्रबन्ध किया। मिर्जा न जब उधर जान म कुछ लाभ नहीं दखा तो वह मभल की तरफ चला गया।

माघ शुक्ला ४। संवत् १६३० वि०<sup>३</sup> का राजा भारमल की मृत्यु हो गई। उसने आम्बेर पर २५ वर्ष ७ माह और १२ दिन तक राज्य किया।

राजा भारमल के ९ रानिया थी जिनम सालका मालवा प्रांत का पद्मावती, चौहान और राठौड़ रानिया प्रमुख था। राजा के १० पुत्र थे—

१ भगवन्तदास— राजा के मरणोपरांत आम्बेर का गरी पर बठा।

२ भगवानदास— इसका भा बादशाह न राजा और बाका कछवाहा की पत्नी प्रणन का था। इसका सत्तान निवाणा क राजा और बाकावत कछवाहा कहलाती है।

१ १५६९ ई०।

२ १५७२ ई०।

३ बुधवार जनवरी २७ १५७४ ई०।

३ गगतार— इसको टोडा का इलाका जागीर में मिला था और यह भी बादशाही मनमवदार था ।

४ भोपतमिह ।

५ शादू तमिह— इसका मालपुरा जागीर में मिला था ।

६ सुदरलाम— इसको चाटमू जागीर में मिला था ।

७ पुष्पाश्व ।

८ सबनदव ।

९ रूपचन्द ।

१० परमराम ।

राजा भाग्यल बड़ा चतुर और दूरदर्शी था । उसके समय तक आम्बर राज्य की स्थिति दुबन थी । राजा को गृह बन्ध में भी बँध नहीं था । जब वह गद्दी पर बैठा उस समय आम्बर राज्य की स्थिति बड़ी न्यनीय थी । उस वक्त यह किसी का विश्वास नहीं हाया कि यह राज्य हमी राजा के बशजों के पास रहेगा क्योंकि उस समय राज्य के अनेक दावतार थे । मुगल पठान जाति जा तब हाकिम थे सभी राजा से दुर्प्या करते थे । किन्तु राजा ने अपना चतुराई में कुछ गमा राजनतिक चालें चली जिनसे राज्य के दूसरे दावतारों का समाप्त कर दिया और आम्बर राज्य को अपने बशजों के नियम सुरक्षित कर दिया ।

## (४) राजा भगवन्तदास कछवाहा

राजा भारमल के पश्चात् माह सुनि ६ १६३० वि०<sup>१</sup> के दिन भगवन्तदाम पतहपुर में अपने पिता भारमल की गद्दी पर बठा। बादशाह अकबर ने ही उसको राज्य का टीका प्रदान किया था। वह बहुत पहन से ही बादशाह अकबर की सेवा में रहता था। वि० सं० १६१८ में जब रतनपुर के पडाव से बादशाह अकबर ने भगवन्तदास के हौनहार पुत्र कुंवर मानसिंह का अपने साथ ले गया। उसी समय से भगवन्तदाम भी स्नेह से बादशाह के साथ ही गया था। वह हमेशा बादशाह के पास रहा और बादशाह की बहुत अच्छी सेवा का। फलस्वरूप बादशाह के निमित्त में उसका स्थान बनता गया और वह बादशाह (मुगल मोअलाय) का एक स्तम्भ माना जाने लगा। उसने अपनी सेवा से जोही ख़रबारी में जो स्थान बना लिया था वहाँ तक तब कोई दूसरा राजा नहीं पहुँच सका।

भगवन्तदास के बादशाह की सेवा में उपस्थित हान के समय बादशाह जवान था और जवानी के जोश में छोटी छाटी चण्डियों में भी वह स्वयं जाता था। उदाहरण स्वरूप हमारे ही वर्ष बादशाह परगना अठग<sup>३</sup> के

१ गुरुवार जनवरी २८ १५७४ ई०।

२ १५६२ ई०।

३ सही नाम पराख है। अ० ना० (अ० अ०) २ पृ० २५१ ५५

विद्रोही जमादारों को नवान के लिये बहुत कम सना के साथ खाना हो गया था। उस समय अत्यधिक गर्मी के कारण सिपाही घबराने लग गये तथा घूष म बचने के लिये जहाँ तहाँ बरसा की झाड़ लेने लगे। बादशाह स्वयं कुछ सनिवा के साथ उन विद्रोही जमींदारों से लड़ता रहा। उस समय भगवतदाम और नुवर मानसिंह ने युद्ध में बादशाह का सहयोग दिया। उन्होंने दुश्मनों को भी मारा और बादशाह को पानी भी पिलाया।

संवत् १६२४ वि० (१५६८ ई०) में बादशाह अकबर न जव चित्तौड़ पर चलाई का, उस समय भी राजा भगवतदाम बादशाह के साथ था। उसने अपने अनुभव और उचित मलाह देकर बादशाह की बहुमूल्य सहायता की। एक रात्रि में बादशाह अकबर न चित्तौड़ दुर्ग पर कबच पहिन हुए एक व्यक्ति का मशाल का रोशनी में काम करते हुए देखा। उसने तुरन्त हाँ अपनी निजी बंदूक से उस पर गानी चलाई। कुछ समय पश्चात् किले में बहुत मात्रा में उजाला दिखाई दिया। इसका कारण किसी का भी समझ में नहीं आया। अंत में राजा भगवतदाम ने अपनी बुद्धि से विचार करके बादशाह का सेवा में निवेदन किया कि संभवतः बादशाह की गोनी से कोई महत्वपूर्ण सेनानायक मारा गया है। फलतः दुर्ग में रहने वाले हमारे राजपूत हतात्माहित हाकिम जोहर घर रह है, अर्थात् वे अपना सम्पूर्ण माल भ्रमबाव, चाल बच्चा और मित्रों का जलमा हुई आग में जला रहे हैं। उसी आग से यह उजाला हो रहा है। अब यह घाणा हो गयी है कि जल्दी ही दुर्ग पर अधिकार हो जावेगा। वास्तव में ऐसा ही हुआ। हमारे दिन किने बान दुर्ग के दरवाजा को खोल कर बादशाही सना पर दूट पड़े और उन मंत्रों मार जान पर किले पर बादशाह का अधिकार हो गया। तथा बादशाह ने जिस व्यक्ति पर बंदूक से गाना चलाई थी वह जयमल राठोड़ था और जिसके मरणोपरांत ही चित्तौड़ में जोहर हुआ था।

हमारे वप बादशाह अकबर रणयम्भार का जात कर आगरा जान हुए आम्बर में भा ठहरा। इस समय राजा ने बादशाह का बहुत अच्छा स्वागत किया और वस्तुय वस्तुय भेंट का।

सं० १६२६ वि० (१५७० ई०) में बादशाह का जैमनमर में एक शक्तिमान सेनानायक भजन का आवश्यकता हुई। उस काय के लिये भी

राजा भगवन्तदास का ही चुनाव किया गया। राजा (भगवन्तदाम) जसलमेर गया और वहाँ के राजे हरराज को अधीनता स्वीकार करवा कर बादशाह के लिये एक डोला भी लाया।

सन् १६२९ वि० (१५७२ ई०) में बादशाह अकबर गुजरात विजय करने गया तो उस समय भी सदाब की तरह राजा भगवन्तदास उसके साथ था। इस समय खभात के निकट मिर्जा मुजफ्फर हुसैन से मुकाबला हुआ जिसके पाम करीब १००० घुड़मवार थे। बादशाह सम्पूर्ण सेना का छाड़ कर केवल २५० राजपूत मनिका सहित ही लड़ने के लिये आग गया। कुछ वर मानसिंह ने महदी नदी से पार उतर कर मिर्जा पर आक्रमण किया। इस समय बादशाह अकबर दो ऐसी तलवारें जगह पर शत्रुओं से घिर गया जहाँ पर दोनों आँखें काटी बाँध थी और सामने से तीन शत्रुओं ने उस पर आक्रमण कर दिया। राजा भगवन्तदास ने शीघ्रता के साथ अपना घोड़ा बादशाह अकबर की सहायता के लिये आग लाया। उसने एक शत्रु मर्क को वहीं से मार गिराया तथा दूसरे को घायल कर भगा दिया। इस वीरता को देख कर अकबर भी राजा की सहायता पहुँचाने आग गया। राजा के भाई भोपत से यह सब नहीं देखा गया। उसने अकबर ही शीघ्रता से आगे बढ़ कर शत्रुओं से ऐसा भयकर युद्ध किया कि उनके समक्ष प्रसिद्ध योद्धा रस्तम और असफदयार खाँ का लडाई भी नहीं कर पाएँ हुए। वह शत्रु पक्ष के अनेक मनिका का मार कर स्वयं भी मारा गया। बादशाह अकबर को उनके मरने का बहुत रज और अपमान हुआ। इस युद्ध में विजय के पश्चात् अकबर ने विशेष रूप से भापत का मातमपुरसी का।

सन् १६२० वि० (१५७३ ई०) में मिर्जा मुहम्मद हुसैन और गुजरातीयों ने गुजरात पर अधिकार कर लिया। अतः बादशाह अकबर ने वर्षों के मौम में ही २०० ऊँचे सवारों के साथ जिनमें कई हिंदू राजा भी थे और अधिकतर राजा भगवन्तदाम के भाई रहे ही थे उन पर चढ़ाई की। और तो जिन में ही अहमदाबाद के पास पहुँच गया। उस समय बादशाह स्वयं कवच पहन कर युद्ध के लिये तैयार हुआ। अपने साथियों का भी कवच और शस्त्र आदि युद्ध का सामान विनिरित करके लगा। राजा भगवन्तदाम का चाचा रूपसी का पुत्र जयमल उस समय एक बड़ा भारी कवच पहन रहा था। बादशाह ने उसको कम वजन वाला हथका कवच प्रदान किया और

उसका भारी कवच जोधपुर के राव मालदेव के पौत्र करण का भिना दिया । लेकिन रूपसी और राव मालदेव के खानदान में बमनस्य होने से वह बादशाह के इस काय पर नाराज हो गया । तथा उसी समय अपना अनुचर बादशाह के पास भेज कर वह कवच मगवाया । बादशाह अबचर ने हम कर उत्तर दिया कि मैं अपना निजी कवच जयमल को दिया है इसके बाद उत्त कवच का मागना उचित नहीं है । बादशाह का यह उत्तर सुन कर रूपसी ने अपना कवच भी खान दिया और कहा कि अगर वही कवच नहीं भिनाता मैं दूसरा कवच भी नहीं कवच पहनूँगा । यह सुन कर बादशाह ने भी अपना कवच व शस्त्र आदि छान लिये और कहा कि, इस युद्ध में हमारे मैनिंग अगर नग बढ़ाने जान देने के लिये तयार है, भा मरे लिये भी कवच पहनना और शस्त्र बाधना उचित नहीं है । राजा भगवन्तदास अपने चाचा के इस अशिष्टतापूर्ण व्यवहार के कारण बहुत नाराज हुआ । उसका नम-गम वाता म-ममका कर बादशाह के पास ल गया और निवेदन किया कि 'इस नादान जवान से भग के नष्टे में बहुत नार ऐसी हरकतें हो जाया करता है अतः आप इसको माफ करे ।' राजा के निवेदन पर बादशाह ने रूपसी का माफ कर दिया और युद्ध के लिये जागे खाना हुए । खाना खाने समय जब बादशाह ने चलन का आदेश दिया उसी समय तुरवेजा नामक घोड़ा सवारी का घोड़ा नीचे बैठ गया । राजा भगवन्तदास ने इसकी अच्छा शकुन देख कर बादशाह का गुजरात विजय के लिये सवाई देत हुए कहा कि हि दुस्तान के जानकारा ने तीन वाता से विजय की सुनिश्चित माना है ।

- १ प्रथम, सरणर का घोड़ा सवारी के समय इना तरह जमीन पर बैठ जावे ।
- २ द्वितीय सेना के पृष्ठ भाग से आग की तरफ हवा का रुख हो तो वह जात की हवा माना जाती है ।
- ३ चीन और कौवा का मना के माय जाना जैसा कि इस समय हमारे साथ है । इन पक्षियों से यह माय्य है कि वे शत्रुओं के रक्त के प्यास है ।

इस प्रकार से मजिलें लय करती बादशाह शत्रु तक पहुँचा और उससे युद्ध किया । इस समय राजा भगवन्तदास और कक्काहा रावन्तदास ने



बादशाह के माग (जलब म) रह कर घमासान युद्ध किया। राघवदाम इस समय निःशस्त्र था और वह मुक्का में युद्ध करता हुआ मारा गया। मिर्जा भी घमासान युद्ध करता हुआ घायल हाफर बंदा बना लिया गया। तथा उमको कीनानर व राव रायसिंह की देख-रेख में रखा गया जहां वह राजा भगवन्तदाम के प्रयत्न से मारा गया। इस प्रकार गुजरात हमारा द्वार अधिकार में आया।

बादशाह ने राजा भगवन्तदाम का आदेश दिया कि वह ईडर के माग से हाफर आकरा पहुँचे तथा माग में आने वाले राजाआ और रावा का भी अधीनता स्वीकार करने के लिये मजबूर करे। राजा भगवन्तदाम ने मग प्रथम बहनगर के पुत्र पर आक्रमण किया। उस पर रावलिया नामक एक गुप्तान् अधिपति जमाय बठा था। राजा के आगमन की सूचना मिलने पर किले के भीतर छिप गया। राजा भगवन्तदाम ने दुग को घेर लिया और जगह-जगह से रसद के रास्ता का पद कर लिया। रावलिया जागा के भेद में निला घासी कर निवलेन लगा लड़ने वह पकड़ा गया। राजा भगवन्तदाम ने किले में बादशाही धाना बठाया और स्वयं ईडर की तरफ रवाना हुआ। ईडर के राव नागयण्णाम ने भगवन्तदाम की अगवानी की तथा उमका महमान्तारी का। उमका कुछ दिना तक वहाँ रखा और बादशाह के लिये अच्छी पकावण दवर दिया किया।

राजा (भगवन्तदाम) ईडर से रवाना होकर उत्तपुर राज्य में पहुँचा। गांगुण्णाम राणा प्रतापसिंह उमकी अगवानी करके उसका अपन निवास स्थान पर ले गया और उमका जत्यधिर सम्मान किया। एक दिन बाता हा बाता में राजा भगवन्तदाम ने राणा का कहा कि आप बादशाह के पाम क्या नहीं चलते वहाँ प्रतिदिन आपका वार में खर्चा होती रहती है। राणा ने उत्तर दिया कि अभी मुझे बादशाह पर विश्वास नहीं हो रहा है। धीरे धीरे जब मुझे विश्वास हो जावगा तब मैं स्वयं चना आऊंगा। अभा ता आप मर पुत्र का ले जाव। राजा भगवन्तदाम उनका पुत्र का लेकर बादशाह के पाम गया। राजा के दन कार्यों से बादशाह अकबर बहुत प्रसन्न हुआ।

वश भास्कर<sup>१</sup> में लिखा है कि राजा भगवन्तदाम ने राणा का अपन माय घट कर भोजन करने को कहा। पहिले तो राणा ने हमका निय बहाना

वना कर टालना चाहता और फिर मजबूर होकर कहा कि अब आपने बादशाही खानदान से सम्बन्ध जोड़ लिया है अतः मेरा और आपका एक साथ बैठ कर भोजन करना संभव नहीं है।' राजा स्वभाव से न्याय प्रिय था। अतः उसने राणा की इस बात का कोई बुरा नहीं माना। राजा ने इसके बाद महाराणा का कहा कि मैं तो आपकी इस बात का बुरा नहीं मानता हूँ, लेकिन चार दिन बाद जब कभी मेरा पुत्र मानसिंह इधर आ जावेगा, तो उसके सामने आप इस बात को नहीं कहें। यह सब भी इस बात को सहन नहीं करेगा।' यह कह कर राजा वहाँ से चला गया। चार दिन पश्चात् बुधवार मानसिंह वहाँ आया तथा राणा के साथ भोजन करने का हठ करने लगा। उस समय राणा ने यही बात मानसिंह से भी कह दी। पत्नस्वरूप वह अत्यधिक क्रोधित हुआ और मूछा पड़ ताब दत्त हुए वहाँ से चला गया और कुछ समय बाद अकबर बादशाह के किसी ममकालीन इतिहास ग्रंथ में नहीं मिलती है। बुधवार मानसिंह ने राजा भगवतदास के भवाङ्ग जाने से चार वष बाद सन् १६२३ वि० (१५७६ ई०) में भवाङ्ग पर चढ़ाई की थी।

सन् १६३१ वि०<sup>३</sup> में बादशाह अकबर बिहार विजय करने के लिए गया। वहाँ पटना के पास युद्ध हुआ। इस युद्ध में राजा भगवतदास और बुधवार मानसिंह ने पठानों का चारों ओर घेर लिया और बादशाह से सम्मान प्राप्त किया।

सन् १६३३ वि० (सन् १५७६ ई०) में बुधवार मानसिंह के बादशाह के आदेश से एक बड़ी सेना लेकर भवाङ्ग पर चढ़ाई की। राणा प्रतापसिंह से भयकर युद्ध करके उसको हराया और भवाङ्ग के बहुत बड़े प्रदेश पर अधिकार कर लिया। लेकिन बुधवार मानसिंह के भवाङ्ग में पलायन के साथ ही राणा ने अपने प्रदेश पर पुनः अधिकार करना आरम्भ कर दिया। साथ ही राणा के आगे पर ईदर के राजा नारायणदास ने भी बादशाह से युद्ध करने का तयारी करनी आरम्भ कर दी। यह सुन कर बादशाह अकबर स्वयं अजमेर में बड़ी सेना का लेकर भागुदा के तरफ खाना हुआ। इस समय राजा

१ १५७४ ई०।

२ हल्दी घाटा का युद्ध जो सोमवार १८ जून १५७६ के दिन लड़ा गया था। (१०)।

भगवन्तदाम और कुवर मानमिह का राणा के पीछे पहाड़ी में भेजा मगर राणा का कोई सुराग नहीं मिल सका। अतः राजा भगवन्तदाम और कुवर मानमिह पुनः गागु दा में लौट आये। तब तब बादशाह अकबर गागु दा में मालवा की तरफ खाना हाँ चुका था। अतः कुवर मानमिह का गोगु दा में ही छोड़ कर राजा भगवन्तदाम स्वयं कुतुबुद्दीन खाँ के पास चला गया। लेकिन राजा भगवन्तदाम के इस प्रकार शाही आशान के बिना राणा का तलाश छाड़ कर भानस बागशाह अकबर उस पर नाराज हो गया। फलस्वरूप बहुत दिनों तक राजा को ह्वाड़ी पर उपस्थित हान की आज्ञा नहीं मिली। कुछ समय बाद राणा के पहाड़ी क्षेत्र से बाहर निकलने की सूचना मिली। तब अकबर बादशाह ने पुनः राजा भगवन्तदाम का कामिम खाँ और मिर्जा खाँ के साथ राणा के विरुद्ध भेजा। तथा मानमिह का भी इसी तरह का आदेश दिया गया। दोनों बाप बेटा ने पुनः मवाडा पर्वत-श्रृंखला में प्रवेश कर राणा का पीछा किया। एक अवसर ऐसा भी आया जिसमें राणा पकड़ा जा सकता था लेकिन राजा ने इस कृत्य में अपनी बदनामी के भय से भयभीत होकर इस अवसर को टाल दिया। इससे बाद राजा भगवन्तदाम ने राणा का ज्यादा पीछा नहीं किया। बादशाह अकबर का इन घटनाओं का पता चलने पर उमर एक नवीन सना मीर बख्शी महमूद खाँ के नेतृत्व में मवाड की तरफ खाना की। उसने गागु दा पहुँच कर राजा भगवन्तदाम और कुवर मानमिह को बागशाह के दरबार में भेज दिया। अतः ये दोनों पंजाब में रावी नदी के तट पर जहाँ बागशाह का इन दिनों पड़ाव था बागशाह के दरबार में उपस्थित हुए। बादशाह अकबर ने पठानों का दवान और पंजाब प्रदेश की व्यवस्था करने के नियम राजा भगवन्तदाम का राजा टाडरमन के साथ पंजाब में ही छाड़ कर स्वयं आगरा चला आया। कुछ समय पश्चात् ये दोनों राजा भी इस अभियान का मफतना पूरे निपट कर बागशाह के दरबार में उपस्थित हुए। बागशाह इस कृत्य में अति प्रसन्न हुआ तथा कुवर मानमिह का म्यालकोट का हाकिम नियुक्त किया। राजा भगवन्तदाम का खाता पाडा इनाम में दिया। और जगन्नाथ बख्शाहा राजा गोपाल और जगमाल पवार के साथ उनका भी पंजाब के मुदतार की महायत्ता के लिये भेजा। साथ ही उनसे खानदान का सम्पूर्ण वन भी उन्हीं मूँदों में शामिल कर दिया। लेकिन अकबर के मुदतार मन्त्रियों ने न बतलाया का जगन्नाथ में जा अकबर मुबारक खानदान में कुछ सम्भव किया।

फरत राजा भगवतदाम के भतीजे अचलदाम मूरदाम और तिलोकमी  
 आदि शाह आदश के बिना ही पंजाब से खाना होकर अजमेर प्रदेश में  
 गाव बानी जहा दस्तम खा की छावनी थी, पहुँच कर दस्तम खा से छेड़-  
 खाना करनी आरम्भ की। दस्तम खा ने इसका पूर्ण विवरण बादशाह को  
 लिखा। इस पर बादशाह ने आदेश दिया कि अगर ये समझने से नहीं मानें  
 तो उन्हें बल पूर्वक निकाल दो। इससे दोनों पक्षा में लड़ाई हो गई।  
 माहनदाम तिलावसी और मूरदाम ने घमासान युद्ध किया और मार गए।  
 तैबिन अचलदास ने दस्तम खा को बछे के चार से मभीर रूप में घायल कर  
 दिया। इस अवसर पर दस्तम खा ने भी अचलदास को तलवार से मार  
 गिराया और दूसरे दिन स्वयं भी मर गया। युद्ध में बचे हुए राजपूत वापस  
 पंजाब की तरफ चले गए।

मवत् १६३६ वि०<sup>१</sup> में काबुल में रहने वाले बालाशाह के भाई मिर्जा  
 मुहम्मद हकाम ने कुछ अमीरों के सहकावे में जाकर हिंदुस्तान पर चढ़ाई  
 कर दी। उसका शादमा नामक एक गुलाम ने नीलाब के दुर्ग को घेर लिया  
 और रावलपिंडी तक लूटमार करने लगा। इस समय सिंध प्रांत के हाकिम  
 मिर्जा युसुफ से मदद का प्रतिकार नहीं हो सका। तब बादशाह ने कुवर  
 मानसिंह का सिंध प्रांत का सूत्रांगी का खिलअत भेजा। अत मानसिंह  
 स्थलकार से खाना हुआ और नीलाब के पास पहुँच कर उसने शादमा से  
 युद्ध किया। युद्ध में शादमा मारा गया। इस घटना से मिर्जा अत्यधिक  
 उत्तेजित हुआ और उसने पंजाब पर चढ़ाई कर दी। बादशाह ने मिर्जा का  
 सामना करने का आग्रह नहीं दिया था। इस कारण पंजाब की रक्षा करने  
 वाले सभी बख्शियाह मरगाह नाहार के दुर्ग में एकत्रित हो गये और वहाँ  
 मिर्जा द्वारा घेर लिए गए। राजा भगवतदास ने शहर का अच्छा प्रबंध  
 किया। जब तक मिर्जा राहार धर रहा उस समय तक राजा ने किसी भी  
 मौनवा का एक दूसरे में नहीं मिलन दिया। क्योंकि मिर्जा ने आश्रमण भी  
 इहाँ मौनविद्या के बहकावे के कारण किया था। कुछ दिनों पश्चात् जब  
 बालाशाह अकबर के आगमन की खबर पचा, तो मिर्जा ने राहार का घेरा  
 उठा दिया और काबुल की तरफ भाग गया। बालाशाह ने लाहौर पहुँच कर  
 राजा भगवतदास को ता विज्ञान मना और शाही हरम की रक्षा के लिए

वही छाड़ कर कुंवर मानसिंह की मिर्जा के पीछे भेजा । उमन मिर्जा और उमकी सेना स घाटी में भयानक युद्ध किया । इसके पश्चात् बादशाह ने अपने भाई के गुनाहों को माफ कर लिया । कुंवर मानसिंह का लौट आने का आदेश दे दिया । अतः वह घाटी से लौट कर पुनः सिंध चला गया ।

सन् १६३९ वि०<sup>१</sup> में बादशाह अकबर ने पंजाब सूबे की मूकदारी और सिपहसालारी राजा भगवन्तसिंह को प्रदान की । ये दोनों पद अनि महत्व के थे । इस सामान्य प्राप्तिके कारण उनका उत्तरदायित्व भी बहुत था । अब तक इन पदों पर अलग-अलग दो बड़े उड़े अमीर नियुक्त किये जाते थे । लेकिन बादशाह ने राजा भगवन्तसिंह की योग्यता बहादुरी और काय कुशलता से प्रभावित होकर सोचा कि इन दोनों पदों का कार्य यह राजा अकेला ही सफलता पूर्वक निभा लेगा । इसी कारण तत्कालीन पंजाब के सूबेदार सैफ खाँ का पंजाब से हटा कर उमकी सम्मिलन में अलग जागीर दे दी और यहाँ के दोनों पदों राजा को सौंप दिये ।

सन् १६४१ वि०<sup>२</sup> में बादशाह का चाचा मिर्जा शाह रज्ज तूरान के बादशाह अबुल्ला खाँ से युद्ध हार कर बम्बशा से भाग कर हिन्दुस्तान में आया । सिंध में कुंवर मानसिंह ने और पंजाब में राजा भगवन्तसिंह ने उमकी प्रग्वानी कर आतिथ्य किया । भगवन्तसिंह उसको बादशाह के पास भी ले गया । बादशाह ने राजा की सेवाओं से प्रसन्न होकर उसका मनसब पाँच हजारों कर दिया जो उस समय बहुत बड़ा मनसब माना जाता था ।

सन् १६४२ वि०<sup>३</sup> में बादशाह का भाई मिर्जा मुहम्मद हकीम मर गया । फलतः काबुल में अव्यवस्था फैल गई । बादशाह ने कुंवर मानसिंह का काबुल का सूबेदार बना कर भेजा । वह शीघ्र ही काबुल में व्यवस्था स्थापित करके पुनः बादशाह के पास रावतपिंडी लौट आया । वहाँ से बादशाह ने कश्मीर विजय के लिये एक सेना भेजी जिसमें राजा भगवन्तसिंह और कुंवर माधोसिंह भी सम्मिलित थे ।

१ १५८३ ई० ।

२ १५८४ ई० ।

३ १५८५ ई० ।

इस समय पठानों का उपद्रव आरम्भ हो गया। एक तरफ जहाँ मानसिंह ने पठानों को पराजित कर दिया, तो दूसरी तरफ पठानों ने बादशाह को नष्ट कर बादशाह के प्रसिद्ध मुगल राजा बीरबल को मार डाला। बीरबल की मृत्यु का बादशाह को बहुत दुःख हुआ और उसने कुछ बर मानसिंह और राजा टाडमल बखीर को पठानों को मारने का आदेश दिया। आज़म गिलत पर दोनों ने जाकर सुरत पठानों को दोनों तरफ से घेर लिया। मई १६४३ ई० में उन्होंने हजारी पठानों को मार कर सुवात और बुनेर प्रान्त पर अधिकार कर लिया। जब पठानों में युद्ध चल रहा था, उस समय एक भिन्न बादशाह अकबर ने राजा भगवन्तदास को गजनी आदि की सुरक्षा हेतु भेजने की इच्छा प्रकट की। किन्तु राजा भगवन्तदास ने इस प्रस्ताव पर आपत्ति उठाई तो बादशाह ने राजा पर नाराज होकर अपने पुत्र सुलतान नानियाल को गजनी की सुरक्षा हेतु भेजने का आदेश दिया। इससे राजा भगवन्तदास अत्यधिक क्षोभित हुआ। उसने बादशाह से माफ़ी मागी और सिंधु नदी को पार कर मेवा की भरती करने के उद्देश्य से कुछ समय तक गुरादा की सहाय में अपना पड़ाव डाला। अभी पूरी सजा एकत्रित भी नहीं हो पायी थी कि राजा भगवन्तदास को ज़बुन (पागलपन) की बीमारी हाँ गई। तब उसके साथ उसको अटक बनारस ले गये। वहाँ पर सामान नामक एक लकीर उसका इलाज करने लगा। एक दिन जब हुकीम राजा की नज़र पड़ा था कि राजा ने उस हुकीम की कमर से जमघर निकाल कर अपने वस्त्र पर मार दिया।

बादशाह अकबर का जब राजा भगवन्तदास के इस प्रकार पागल हो जान का सूचना मिली तो उसने हुकाम हुसन और बहा महेदेव को भेजा, और कहा कि जिस व्यक्ति पर राजा के सजाह्वारा का विश्वास हो, उससे राजा का इलाज करावें। राजा के रोग ने बहा महेदेव का बुनाव किया। और उसके इलाज में कुछ ही दिनों में राजा ठीक हो गया। ऐसा कहा जाता है कि राजा भगवन्तदास के आश्रम में इस प्रकार पागल हो जान का बीमारी बहुत पहल में ही चला आ रही थी। राजा के भाई-बेटों का भी प्रायः पराजय हो जाया जाती थी। भगवन्तदास अपने बीमारी का एक बहाना बना रहा था और इसमें भी कोई चान थी। बहाकि

जाम्बेर के राजा बहुत चालाक और हाशियार होत थे। अतः क्या आश्चर्य है। जब राजा का इच्छा गजनी की तरफ जान की नहीं थी तो उमन यह बनावटी बीमारी का ढाग खड़ा कर दिया हो। लेकिन बादशाह भी चतुर था। उसने पिता के स्थान पर पुत्र स बाग्य करवाया और राजा के लौट आने पर कुवर मानसिंह को अफगानिस्तान से जाबुलिस्तान (गजनी बगरह) में भिजवाया और राजा के स्थान पर एक दूसरे सरदार इस्माईल मला खा को नियुक्त किया। लेकिन उसके पास कुवर माघासिंह और राजा भगवन्तनाम की सेना हा रही। सवत् १६४४ वि०<sup>१</sup> तब कुवर मानसिंह ने अनेक युद्धों में पठाना का परास्त किया, किन्तु वहाँ पर राजपूता द्वारा मत्स्याधार रिय जान पर इसी वर्ष कुवर मानसिंह का जाबुलिस्तान में हटा दिया गया।

अफगानिस्तान अभियान समाप्त हो जाने पर बादशाह अकबर ने कुवर मानसिंह को बिहार की सूबेदारी प्रदान की। मभी कछवाहा सरदारों का भी कुवर की सहायता के लिये बिहार में जागारें प्रदान कर उन्हें बिहार भेज दिया। बादशाह अकबर ने यह व्यवस्था इस उद्देश्य से की थी कि वह पंजाब के समान ही उस सूबे में भी राजपूता का शक्ति जमा कर उड़ीसा के क्षेत्र के पठानों को भा दबा दब और उन पर आधिपत्य स्थापित कर। साथ ही उन लोगों का अपने सामान और अमवाद की तरफ से निश्चित रहने के लिये राहताम का किता भी खाली करवा कर स० १६४५ वि० (मृ १५८८ ई०) में राजा भगवन्तनाम के कमचारियों को मीप दिया गया। राजा भगवन्तदास का भी इसी समय बादशाह के महला की देख रेख पर नियुक्त किया गया जो एक महत्वपूर्ण सेवा थी।

इस प्रकार सम्पूर्ण व्यवस्था हो जाने के बाद बादशाह अकबर वरमोर की यात्रा के लिये रवाना हुआ। राजा भगवन्तदास और राजा टोडरमल का लाहौर में ही ठहरने का आदेश दिया। देवनाग से कानिक सुदि १३ सवत् १६४६ वि०<sup>२</sup> के दिन राजा टोडरमल लाहौर में मर गया। राजा भगवन्तदास जब उसका अंतिम संस्कार करके पुन निवास स्थान पर

१ १५८७ ई०।

२ बुधवार, नवम्बर १० १५८९ ई०।

आया ता उमका भी एक नै हुइ जोर उमका मून बान हो गया, जिनसे केवल पाच दिन पश्चात् ही मार्गशीर्ष कृष्ण ३ १६६६ वि०<sup>१</sup> के दिन राजा भगवन्तनाम का भी स्वर्गवास हो गया ।

एन दोना बादशाही स्तम्भा के टूट जाने से अकबर बादशाह का अत्यधिक दुःख हुआ । उसन बादशाही दरबार मे राजा भगवन्तनाम के स्थान पर कुवर माधोनिह को नियुक्त किया तथा राजा का खिताब और फरमान बिहार मे कुवर भानसिंह के पास भेजा ।

राजा भगवन्तनाम बहादुर होन के साथ ही साथ बुद्धिमान और मेहनती भी था । इसी कारण से बादशाह अकबर ने उसका कई युद्धों का सचानन और सूबों के प्रशासन का काम सौंपा था । वह प्रत्येक काम को तन मन से करता था । फलन शाही दरबार मे उसकी इज्जत और मर्यादा बढ़ती रही । उसकी जाति के अथ सोना और उसकी सत्ता से बादशाह अकबर का अत्यधिक लाभ हुआ ।

शाही सेवा मे आन के बावजूद राजा भगवन्तनाम कभी भी निठूला नहीं बठा रहा । शाही दरबार का प्रत्येक महत्त्वपूर्ण कार्य राजा या उसके भाई देव के सहयोग के बिना नहीं होता था । इसी शाही कार्यों के कारण राजा ने अपनी जाति और अपने राज्य का नाम सम्पूर्ण हिन्दुस्तान मे प्रसिद्ध किया जिसका वर्णन एनिहामिक ग्रन्थ मे आत्र भा उपलब्ध है ।

बादशाह से वैवाहिक सम्बन्ध हो जान के कारण राजा भगवन्तनाम पद और धन-शैलत के क्षेत्र मे अथ राजाभा मे बहुत आग्रह रह गया था । लेकिन धन-शैलत की प्राप्ति अथवा बादशाह के साथ रहने से उसके धन-धन पर कोई भी प्रभाव नहीं पडा । शाही दरबार और एकान्त मे अथ राजाभा और अमारों की अपना राजा भगवन्तनाम बादशाह के साथ ज्यादा बैठता था । किन्तु राजा पर बादशाह की डाँवाडोल घामिक नीति का कोई असर नहीं हुआ । अकबर बादशाह ने नवान धर्म सम्प्रदाय (दान-इ-इन्तारी) चलाया तथा हिन्दू और मुसलमान दोनों का हम नवान सम्प्रदाय मे लाना चाहता था । एन दिन राजा बादशाह अपने मरणागो मे हम नवान सम्प्रदाय के



विषय में बातचीत करता रहता था। बादशाह ने एक दिन राजा भगवत-  
दास से भी इसी सम्बन्ध में चर्चा की। तब राजा ने स्पष्ट उत्तर दिया कि  
शाहशाह जब हिन्दू बुरे हैं और मुसलमानों को भी अच्छा नहीं बनाया है  
तब मुझे यह बताया जाय कि तीसरा धर्म कौन सा है। बादशाह राजा का  
यह स्पष्ट उत्तर सुन कर चुप हो गया और फिर कब भी इस सम्बन्ध में  
राजा से पुनः बातचीत नहीं की।

राजा भगवतदास को इमारतों बनवाने का बहुत शौक था। उसने  
अपने राज्य की सीमा में अनेक भगवतगढ़ नामक एक दुर्ग बनवाया जो  
आज भी इसी नाम से प्रसिद्ध है। इसके अनिरिक्त उसने आम्बर आगरा  
और फतहपुर सीकरी तथा लाहौर में भी भव्य महल आदि बनवाये। उन  
में से लाहौर के महल और अपने (राजा) भाई-बेटा और मुख्य सबका क  
रहने के लिये इतने मनाखे और विशाल महल बनवाये जिनमें बादशाह  
सबसे स्वयं यदा क्या ठहर जाता था।

राजा भगवतदास के १३ रानियाँ और ९ पुत्र थे। पुत्रों के नाम  
निम्न हैं—

१ मानमिह का पीप कृष्णा १३ सवत् १६०७ वि० का जन्म  
हुआ।

२ माधामिह आसाह सुदी ५ सवत् १६१० वि० को पैदा हुआ।  
बादशाह अनेक बार कुंवर माधामिह को अजमेर भूख में मानपुरा की जागीर  
प्रदान की। यह कुंवर एक समय तक शाही दरबार में सलाहकार बना रहा  
और इतने अनेक मुठों में भी भाग लिया। अन्त में वह आम्बर की एक पान  
में भराने में नीचे गिर कर मर गया।

- ३ सूरमिह बहुत बहादुर था।
- ४ कानमिह बहुत बहादुर था।
- ५ प्रतापमिह बहुत बहादुर था।
- ६ पृथ्वीमिह बहुत बहादुर था।
- ७ विशनमिह बहुत बहादुर था।
- ८ जेतसिह बहुत बहादुर था।
- ९ चन्द्रभान। बहुत बहादुर था।

१ अतिवार दिमम्बर ८ १५५० ई०।

२ शुक्रवार जून १६ १५५३ ई०।

भाम और हरदास दोनों राजा भगवन्तदास की उप पत्निया की सन्तान थे ।

इन राजकुमारों में प्रथम पाँच राजकुमार सगे भाई थे । तथा इनकी मा पचायन पत्नी का बेटी और राजा करमचंद की पौती थी । यह करमचंद जगार ब्रह्म और दानी सरदार था । करमचंद राणा संग्रामसिंह की तरफ से अजमेर का अधिपति नियुक्त किया गया था । यह द्वादशाब्द अवसर में पचास वर्ष पहले की घटना थी ।

अब हम (दबी प्रसाद) राजा भगवन्तदास के इस जीवन चरित्र को उनके छोटे पुत्र सूरसिंह के इतिहास पर समाप्त करते हैं—

**पुत्र सूरसिंह—**

'मिपाही स्वयं ही एक बिना है जो हर समय बादशाह की जान और माल आदि का रक्षा करता है और बादशाह उस सिपाही का हुता कर उसके स्थान पर रूट व पत्थर रखवाना है यह उचित नहीं है। इस पर बादशाह ने कहा कि दुग मिपाही की और मिपाही दुग की रक्षा करते हैं। अतः इन दोनों का रहना जरूरी है। इस कारण तुम अपना पड़ाव हटा कर दूसरे स्थान पर लगा दो। सूरसिंह ने फिर निवेदन किया कि अगर बादशाह की यही इच्छा है तो मेरा पड़ाव की हल्के तक काट की दीवार छोड़ दी जाय। इस तरफ की सुरक्षा का उत्तरदायित्व मैं ग्रहण करता हूँ। कुवर का ऐसा निर्भीक उत्तर सुन कर बादशाह का आश्चर्य हुआ तथा कहा कि इस राजपूत की इतनी हिम्मत कि उसने मेरा आदेशों की अवहेलना कर दी। और अगर इसने तीसरा आदेश भी नहीं माना तो उसे निश्चित ही सजा देना पड़ेगा। किन्तु ऐसा निडर और शूरवीर का कोई अहिंसक करना भी उचित नहीं है। अतः अभी वह कहता है बसा ही करा। यह सुन कर बादशाह ने सभी दरबारी अमीरा न निवेदन किया कि 'ऐसे विद्रोही प्रवृत्ति वाले व्यक्ति को तोप से उड़ा देना चाहिये जिन्होंने हमारे व्यक्ति भी शाही आदेशों की अवहेलना करने से डर जाय। इस पर बादशाह ने कहा कि ऐसे शूरवीर सैनिक का व्यर्थ ही मारना चाहिये। ऐसा सैनिक किसी कठिन समय में काम आवेगा। और बादशाह ने कुवर के पड़ाव को छाड़ कर ही दुग की चार दीवारों बनवाई। इससे यह बात प्रमिद हो गई कि शूरवीर सूरसिंह ने आगरा के दुग का टेढ़ा करा दिया।

इसी तरह से जब एक दिन कुवर सूरसिंह बादशाह का सेवा में जा रहा था तो भाग में एक मत्त हाथी राह रोके खड़ा था। ताग उससे भयभीत हो कर दूर-दूर भाग रहा था। सूरसिंह को भी उन लागों ने उधर जान से रोका। लेकिन कुवर सूरसिंह ने इसका परवाह न करत हुए अपना भाला हाथी के मिर में इतने जोर से मारा कि सारा भाला उसके मिर में समा गया। हाथी मर गया। अब महाबत सूरसिंह को बादशाह के पास ले गया। बादशाह का मत्त हाथिया को रखने का शौक था। अतः वह सूरसिंह से नाराज हो गया। इस पर सूरसिंह ने निवेदन किया कि भगवन् यह नियम है कि मैं बादशाह के दर्शन किये बिना खाना नहीं खाता हूँ। मैं बादशाह का नाम नहीं खाता हूँ और वह तुच्छ हाथी के वन घाम खाना है। अगर मैं इसमें भयभात होकर बादशाह के दर्शन करने छाड़ना तो मुझ में भी कौनसी बहादुरी

जिज्ञासु मक्ता था। जय बादशाह भव्य पाय करें। कुवर का यह तक  
 मुन कर बादशाह न कहा कि मैंने तुम्हारा कमर माफ कर दिया। तुम  
 वीर याददा हो। इसका साथ ही बादशाह न कुवर मूरमिह को सोन के  
 गाज सहित एक हाथी और बड़ा मनमव प्रदान किया।

इसी मूरमिह न मिर्जा हकाम का सना से युद्ध करत समय अपने  
 बड़े भाई मानमिह के साथ नीलाव नदी के पर तट उड़ी शूर वीरता दिखाई  
 और मिर्जा का विश्रुत गुनाम शान्मा भी इसकी तरवार में भाग गया था।

## (५) राजा मानसिंह कछवाहा, आम्बेर

महाराजा मानसिंह आम्बेर के राजाशा में बड़ा प्रतापी और साहसी नरेश हुआ था। वह राजा भगवतशम का पुत्र और राजा भारमल का पौत्र था। मानसिंह के जन्म के समय ज्योतिष शास्त्र के आधार पर ज्योतिषिया ने राजा भारमल से कहा महाराज आपका पोता शुभ घड़ी में पैदा हुआ है, इनका राज्य एवं यश सबत्र फलेगा लेकिन आप १२ वर्ष तक ईदु भलग रहें।

राजा भारमल ने यह सुन कर मानसिंह का साभर क्षेत्र के कमरा मुम्रज्जमावा में भेज दिया और १०० सड़क अपने खानदान के भी साथ दिये। और मानसिंह के पालन पोषण के लिये भा बड़ा सारी व्यवस्था कर ली।

महाराजा मानसिंह उसी जगह बड़ा हुआ और बहादुरी दातारगी और सिपाहगिरी में उगकी प्रशंसा होने लगी। उसके गुणों की प्रशंसा सुन कर अकबर बादशाह भी मानसिंह को देखने के लिये उत्सुक हुआ। उस समय किसी राजा ने दित्तगो से अज की कि, 'हा बेशक वह दख्खाने के ही लिये है'। सम्बत् १६१७ (१५६१ ई०) में बादशाह आगरा से अजमेर जाते हुए मार्ग में साभर में ठहरा वहाँ राजा भारमल उससे सलाम करने गया, तब मानसिंह भी उसके साथ था। बादशाह उसकी सुरत देख कर मुस्कराया क्योंकि उसका रंग श्याम बदन मोटा और बेडील सा था और हमी से पूछा कि मानसिंह जब लुदा के यहाँ गुरु बटता था तब क्या तुम हाज़िर नहीं हुए ?" मानसिंह ने अज की कि 'नूर बटा उस वक्त तो मैं लुदा की इबादत में था परन्तु जब दातारगा और बहादुरी बट रही थी तब मैं नूर के बंदे भी इन्हीं दोना बीजा का मार्ग लाया सो मार्गने वाले का जवाब और दुश्मन को पीठ कम्हा नहीं देता हूँ।'

बादशाह यह निर्भीक उत्तर सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ और कहा कि 'मानसिंह तुमको तो लुदा ने मेरे दुश्मना को मारने के लिये पदा किया है तुम मेरे साथ चला। यह कह कर मानसिंह को अपने साथ ले गया और उस बारह वर्ष तक अपने पास रख कर अच्छा प्रशिक्षण दिया।

सन्वत् १६२९ (१५७२ ई०) में बादशाह गुजरात पतल करने गया। उस समय मानसिंह भी साथ था। उसका वंश से भवाङ्ग की तरफ भेजा। वह हूँगरपुर में राखन (आसवरण) को आधीन करके गाव गोशु दाई में राणा प्रताप से मिला<sup>१</sup>। बाद में बादशाह ने उसको खीचीवाडा<sup>२</sup> का हाकिम बना कर वहाँ भेज दिया और ४ वर्ष तक वहाँ उस क्षेत्र में रहा।

१ जुलाई ४ १५७२ ई० का पतलपुर सीकरी से प्रस्थान किया (स०)।

२ अग्रेत १५७३ ई०।

३ 'उदयपुर होना चाहिये। (स०)।

४ मानसिंह के स्वागत में उदयपुर की पाल पर दोपहर में भाजन का आयोजन किया गया था। यही पर मानसिंह और प्रताप के मध्य मनमुटाव हुआ गया था। (म०)।

५ डा० राजाव नारायण प्रसाद (राजा मानसिंह आफ आम्बर पृ० ५४-५५) के अनुसार कुछ वर्ष मानसिंह का हदी घाटा मुहल के बाद ही खीचीवाडा भेजा गया था। (स०)।

सन् १६३३ (१५७६ ई०) में बालासाह न अजमेर में मानसिंह का बेट का खिताब देकर ५००० सवारों के साथ राणा प्रताप के विरुद्ध भेजा। मानसिंह ने उत्तरपुर के पास एक बड़ी भारी लड़ाई लड़ कर राणा को हरा दिया<sup>१</sup> और पतहमन के साथ आगरा में जाकर बालासाह से मुजरा किया। बालासाह ने प्रमथ हाकर स्यालवाट का हाकिम बना कर वहां भेज दिया और उसका पिता राजा भगवतदास का मंत्र बख्शवाहा राजपूतों के साथ पंजाब के सूबदार की मन्त के वास्ते भेजा। उस वक्त बहुत से मुसलमान अमीर बालासाह से नाराज हो रहे थे और उन्होंने बालासाह के भाई मिर्जा मुहम्मद हकीम को काबुल से बुला कर फसाद उठाया। बादशाह ने शीघ्र ही सिंध के सूबदार को दूर करके मानसिंह को उसका जगह नियुक्त किया। मानसिंह ने स्यालवाट में सिंध में जाकर मिर्जा को सिंध पंजाब से भगा दिया और काबुल तक उसका पीछा किया। अफगानिस्तान में काबुलिया और राजपूतों के बीच कई बार लड़ाइयां हुईं जिनमें राजपूतों की विजय हुई। अंत में बालासाह ने अपने भाई का अपराध क्षमा कर दिया और मानसिंह सिंध चला गया। बालासाह ने उसकी इस सेवा में कृण हाकर पंजाब का सूबदारी और सिंध मालारी उसका पिता राजा भगवतदास का इनायत की।

सन् १६४१ (१५८५ ई०) में मिर्जा मुहम्मद हकीम मर गया। उसकी बहुतसी पौज तौरान के बालासाह अदुल्ता खाँ उज्जबक से जा मिला जो काबुल पर हमला करने के दिव्य प्रयत्नशाल रहा करता था। बालासाह ने अबिलम्ब मानसिंह को काबुल की सूबदारी देकर वहां पञ्चन का जागै दिया।

मानसिंह सिंध में काबुल गया और पांच वर्ष तक वहां रहा। वहां के निवास काल में उसने युसुफजई महमूद के राजनाखेन बग रहे पठानों से बहुत मो लड़ाइयां लड़ीं जिनमें हमेशा उसकी फतह होती रही।

जब काबुल के सूबे में अच्छी तरह से अमन (आधिपत्य) जम गया तब बालासाह ने मानसिंह को बिहार की सूबेदारी पर इस उद्देश्य से भेजा

१ उक्त लड़ाई खमनार के पास हल्दीघाटी के उत्तरी तिर पर लग हुए घन मन्त में जून १८, १५७६ ई० को हुई थी जो इतिहास में हल्दीघाटी के युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है। (स०)।

२ १५८७ ई० में बिहार भेजा गया था। (स०)।

कि बगान और उड़ीसा मूरा के पठाना को पराजित करके उन्हें बादशाह का अमनदारी में शामिल करें।

मानसिंह का बिहार में पहुँचे अभी थोड़े ही दिन हुए थे, कि उसका पिता राजा भगवतदाम का लाहौर में देहांत हो गया। यह खबर सुन कर मानसिंह माघ वदि ५ १६४६ वि०<sup>१</sup> को पटना में बड़ी धूमधाम से बख्शवाहा का गद्दा पर बैठे। बादशाह ने उसको पाँच हजारी मनसब और राजा का खिताब प्रदान किया।

मानसिंह ने पाँच वर्ष तक पठाना से बड़ी बड़ी लड़ाइयाँ लड़ कर अगान और उड़ीसा के पठान मूरा पूर्णतया उन से छीन लिये। उसके बान भी पाँच वर्ष और बहादुर कर उनका लूटमार का समाप्त कर शांति की स्थापना का।

सम्बत् १६५८ (१६०० ई०) में राजा बलार को और सम्बत् १६६० (१६०३ ई०) में अहमद (माघ) के बादशाह (जमींदार) को जो पठाना के माघ मिल कर बगान के ऊपर चढ़ाई करना चाहते थे सीमा पर जाकर पराजित किया। इन विजयों से मानसिंह की धाक सम्पूर्ण क्षेत्र में जम गई। पठान सब भाग गये और उनका बिद्रोह समाप्त हो गया।

जब बादशाह को हिंदुस्तान के द्रतबाम से दिल जमई हुई तो तुरान के ऊपर सन्धि अभियान प्रारंभ करने का विचार करके मानसिंह का अपन पाम बुलाया। उसका मान हजारी जात और ६००० सवार का मनसब नेकर अपन पात खुमरा का अतानीर (मरदम) भी नियुक्त किया। इस समय मानसिंह मल्हनत में बहुत अधिक प्रभावशाली हो गया था और सभी कार्यों में उसकी राय ली जाती थी।

कार्तिक सुना १८ १६८० वि०<sup>२</sup> का अखबर बादशाह की मृत्यु हो गया। वह अपने पुत्र मन्तम में नाराज रहा करता था इसलिए मानसिंह और यान अतम मिर्जा काका ने चाहा कि उसके बड़े बेटे मन्तम का गद्दा

१ सुन्दार जनवरी १५ १५९० ई०।

२ मंगलवार अक्तूबर १५ १ १८००।



पर प्रठाव । परंतु खूमरो की नालायकी से उनका यह वरादा पूरा नहीं हुआ और शाहजहाँ सताम ने सिंहासन पर बैठ कर मानसिंह को उस समय तो ममलिकत देकर बगाल के सूबे पर भेज दिया । परंतु दूसरे ही वर्ष मर्त १६६४ (१६०७ ई०)<sup>१</sup> में बगाल कुतुबुद्दीन खा को प्रदान कर दिया गया ।

मानसिंह नये सूबदार का काय-भार सौंप कर कुछ समय तक राहतास के किले में रहा जहाँ उसका परिवार था । कुछ समय बाद आगरा छोड़कर बादशाह से मिला और वनन जान की सीख माँगी । बादशाह ने स्वावृत्ति देकर कहा कि जब बतन के कार्यों से अवकाश मिल जावे तो दक्षिण चले जाना ।

मानसिंह बड़ा धर्मधाम से आम्बर आया (१६०७ ई० में) और एक-एक वर्ष तक रहा रहा । फिर खानखाना का मन्त्र के लिये नक्षिण गया । परंतु बादशाह दिन से दिन दाना में ही नाराज था इसलिए फाई बड़ा नाम इनके हाथों से नहीं हो पाया ।

उस समय दिल्ली का राज्याधिकार दक्षिण में बराड से भाग नहीं था । उस वक्त उनसे बड़कर हिंदुस्तान और मुसलमानों में सीमरा कोई सरदार नहीं था, अतः अगर जहांगीर बादशाह इन दाना सरदारों को प्रमत्त रखता तो बहुत जल्दी उसका राज्याधिकार समुद्र के किनारे तक पहुँच जाता । लेकिन दाना ओर विश्वास नहीं होने के कारण नक्षिण की मुहिम का काम टलता ही गया और कोई लाभ नहीं मिला ।

राजा मानसिंह प्रायः खाल के साथ रहा करता था कि मैं ११ वर्ष की उम्र में ही प्रयत्न लड़ाई में आया हूँ और जिन मुकामों के नाम कभी सुन भी नहीं थे उनको जाकर मैंने फतह किया । और जगह जगह बादशाही अमल जमाया । परंतु बादशाह ऐसा नाबन्तरमान है कि इस पर भी उसका विश्वास नहीं है । आज एक के और बस दूसरे के आधान होकर काम करने की लिखत है सो हम किन्ना के आधीन होकर काम नहीं करेंगे ।

१ जहांगीर के गद्दी पर बैठने के महोत्सव बाद ही राजा मानसिंह का बगाल से दूर कर दिया गया था । (राजीव नारायण प्रसाद राजा मानसिंह आफ आम्बर पृ० १२१-१२२) । (स०) ।

उक्त बात का सदमा बढ़ाकम्पा के साथ तिन दिन उसके दिल और जिमाग के ऊपर बरपा गया और अंत में उसी के परिणाम स्वरूप एलिचपुर में उसका निधन हो गया, जिसकी सूचना जहागीर को आबग वदि ७, १६७१ वि० को मिली ।

मानसिंह का निधन ७० वर्ष की अवस्था में हुआ था । बगैर २४ वर्ष राज्य किया, और १५ वर्ष तक शाही सेवा की । इस काल में ईरान-तूगन की सीमा से लेकर ब्रह्मा की सीमा तक जो पूरब से पश्चिम तक २००० कोस की दूरी होगी वड़े जार शोर से तलवारें चलाई और प्रत्येक लड़ाई में विजय प्राप्त की । हिंदुस्तान के बड़े-बड़े प्रदेशों में अनेक वर्षों तक अपने इन्जियारों में हुकूमत की और यही कारण है कि आज तक हिंदुस्तान और बाबुन में हर जगह उसका नाम प्रसिद्ध है ।

राजा मानसिंह के २२ रानिया थीं । जो भारवाड मालवा हाडोती भारावा मिरोहा बगान, कूच-विहार, ऊभटवाडा, खीचीवाडा, बुदेनखड और बपेलखट के राजाओं की पुत्रियां थीं । जब ये सब एकत्रित होकर अपनी-अपनी रानिया होगी तो वही स्थिति होती होगी जो एक बाग में सभी तरह के जानवरों के बोलने से होती है ।

२२ रानिया में से ११ मन्तराजा मानसिंह के साथ और पांच आम्बर में मरी हुईं शेष अपना मोत से मरी ।

जाम्बेन और गेहताम बम रह में मानसिंह के बनाये हुए अच्छे अच्छे महल मकान और धाग अब तक विद्यमान हैं । उनकी दामनीलता की भाव्यजनक बात सुनने में आती है । उनका हाथ बचपन में ही लुला हुआ था । उनका पहला विवाह अजमेर के गौड़ राजा की बेटी से हुआ था । वह राजा भी बड़ा दाना था । एक दिन हमन किसी चारण की कविता से गुण हासिल बहुत पनाम किया जिसमें सम्पूर्ण गाथापूताने में उसका नाम हो गया ।

१ जुलाई १८ १६१४ ई० । चशावनी० के अनुमार राजा मानसिंह का दहान आपात सुनी १० १६७१ वि० (जुलाई ६, १६१४ ई०) को हुआ था । (म०) ।

। न यह खबर सुन कर अपन महल म बड़ी खुशी की और मानसिंह  
 र वह सब हाल बड़ी खेची से अज किया । मानसिंह ने कहा  
 बात है । राजा लाभ दान देत ही रहत हैं । रानी न अज का  
 एज कहने और दन म बड़ा फर है । महाराजा उम वक्त तो रुप  
 सुवह ही सात कवीश्वरा को बुला कर जितना इनाम उसके श्वसुर  
 एण को दिया था उतना उसन उन साता म स एक एक का  
 । ।

र कवीश्वर न किमी आदमी स १०००) रुपया लेकर महाराजा  
 डी लिख दा । जब वह उसको लेकर महाराजा क पास आया ता  
 न अविलम्ब उसका रुपया चुका लिया और हु डी का पाठ पर उस  
 ने निम्नलिखित दाहा लिख भजा—

### दोहा

इते हम महाराज हैं उत आप कविराज ॥  
 हु डी लिखत हजार की नक न भाई साज ॥१॥

सी तरह हरनाथ कवीश्वर न महाराजा का प्रशना म निम्न दाहा  
 नाया—

### दोहा

बल बाई कीरत लबा करण वरी द्वैपात ॥  
 सीधी मान महीप न जब देखी कुमिलात ॥२॥

मानसिंह ने उसको रु० १००००० इनामत किय और ऐसी एमा  
 हुत मी भेंटें दी, जिससे उसका नाम हिंदुस्तान क मुक्तहस्त दातार  
 । सूचा म सम्मिलित कर लिया गया ।



१ दद्रेवा<sup>१</sup> पर घढ़ाई—

स १००० वि० (९४३ ई०) के करीब इस सम्पूर्ण जागल प्रान्त में चौहान राज्य करत थे। गंगा चौहान जा बहादुरी के लिये प्रसिद्ध हो गया था इहा चौहाना में से था। फिर उनका राज्य कम होता गया और दद्रेवा कमवा, जो बीकानेर से ७० कोम उत्तर की तरफ है तब हा नोमित रह गया। सवत् १४०० वि० (१३४३ ई०) के प्रारम्भ में दद्रेवा का राजा माटीराय चौहान था। उनका पुत्र करमसौ था। वह १४४० वि० (१३८३ ई०) में सुलतान फिरोजशाह तुगलक के एक घमीर सयद नामिर के पास रह कर मुमलमान बन गया था। तब उसका नाम क्याम खा रखा गया था। वह बड़ा बहादुर और प्रतापी हुमा था और उमन हासा हिसार में बड़ा राज्य प्राप्त किया था। बाद में उनके बेटे पौन फतहपुर जुंझन चल गये थे और वहा बहुत दिना तब उनका राज्य रहा था। क्यामखानी जा भाज राजपूताना में एक प्रसिद्ध जाति है वह इसी क्याम खा चौहान के वंश से है। उसके भाई जा हिन्दू ही बन रहे थे दद्रेवा के स्वामी थे। जब उस प्रान्त पर बीका का अधिकार हुआ गया तो वे उसकी सेवा करने लगे। परन्तु लूणकरण ने उनका दण्ड देने का तयारी की और इसक लिये २० ००० सैनिक एकत्रित किये। उसके बाद आमाज मुदि १० १५६६ वि० का दद्रेवा के ऊपर कूच किया। बाद मेहता भललाला के पुत्र और अन्य व्यक्तियों को किले में रखा और तब निम्नलिखित सरदार राव के साथ थे—

- १ भाई घडसी ठिकाना गाग्वा,
- २ भाई राजसी,
- ३ भाई मेघराज
- ४ भाई केलण,
- ५ भाई देवसौ
- ६ विजयराज
- ७ अमरसौ,
- ८ भाई वेमा,
- ९ बीदाबत ससारचन पडिहारा का

१ दद्रेवा अब बीकानेर के परगना राजगढ़ में स्थित है। (नवा०)।

२ गिवार मितम्बर २३ १५०९ ई०।

- १० बौदावन उदयकरण द्राणपुर,
- ११ रावन राजमिह राजामर का,
- १२ ठाकुर बगीर बाघावत चाचाबाद का,
- १३ ठाकुर बरहवमल काघलात साहवा का
- १४ ठाकुर महेशदाम महनावत मारु डा का
- १५ राव हरा सखावत पूयल का,
- १६ सनिक का पुत्र जोहिमा तिहुनपाल, मिहान का,
- १७ ठाकुर बाघ सखावत रायमलवाली का
- १८ पहिहार गिरघर बेलावत बेनामर का और
- १९ बच्छावत नगराज बरमिहोत ।

राव (पूणकरण) ने दूबेवा पहुँच कर दुग का बेर लिया । चौहान मानमिह देपालान ने किले के द्वार बंद कर लिये । सात महिना तक गालियाँ<sup>१</sup> की लड़ाई चलता रही । राव की सेना ने किले में रमते पहुँचने नहीं दी । रम करण अतः मानमिह को किले के द्वार खोलने पड़े । अपने ५०० व्यक्तियों के साथ बाहर आकर मानमिह ने युद्ध किया और राव के भाइयों का हाथ में बह माग गया । इस युद्ध में ३०० चौहान और १३७ सनिक राव (पूणकरण) के काम आये । दूबेवा पर राव का अधिकार हो गया । राव ने वहाँ अपना धाना बैठा लिया और पुनः बीकानेर लौट गया ।

फतहपुर के मबाब पर कह—

उन जिन फतहपुर पर दोनन या बरामधानी का अधिकार था । उसका रंग था म जमान का भगडा था । राव ने इस अवसर का लाभ उठा कर बरमाग मुक्ति ७, १५६८ वि० का फतहपुर पर चढ़ाई कर दी । दोनन या और रंग का दोना मिल कर मुकाबला करने के लिये फतहपुर में एक पाम जाग आ गया । तलवारों की लड़ाई के समय य पुनः शहर में भाग गया । राव (पूणकरण) का सेना ने उनका पीछा किया । तब उन्होंने

१ उस समय तक उत्तरी भारत में बाहू और ताड़-बूझों का प्रयोग नहीं जाना जाता था । (म०) ।

२ गुरुवार अग्रेज २२ १५१२ २० ।

(मण्ड) चादर उठा कर समझौते के लिये अपने भले आदमी भेजे। रावन ने भी उनसे समझौता कर लिया। तदनुसार पतहपुर के १२० गांव राव भूग-वरण को दिये गये। राव ने उनमें अपने थाने बठा दिये और बीकानेर लौट आया।<sup>१</sup>

### चायलवाड़े की पतह—

राव भूगवरण ने चायलवाड़े के ऊपर कूच किया क्योंकि चायल विरोधी हो गया था। वहाँ के भूमियाँ न जब राव की सेना के आने के समाचार सुने तो भटनेर चला गया। चायलवाड़े के ४४० गांवों पर जो हिरदेतर साहवा और बागडयो के बीच था राव का अधिकार हो गया। राव ने वहाँ पर भी अपने थाने बठा दिये और बीकानेर चला गया।

### राव का चित्तौड़ में विवाह—

चित्तौड़ के राणा रायमन ने राव के लिये शादी का मारियत भेजा। राव फागुण बंदि १३ १५७० वि०<sup>२</sup> के जन्म पर बरात लेकर चित्तौड़ पहुँचा। माग में करणी जी से निबन्ध किया ता उहाँ अपने चार पोता<sup>३</sup> को उसमें साथ भेजा।

राव भूगवरण के चित्तौड़ पहुँचने पर राणा (रायमन) का कुवर मागा दो काम पर पेशवाई के लिये पहुँचा। राव ने चित्तौड़ में प्रवेश कर विवाह किया और बहुत सा त्याग दाटा। राणा ने बास हाथी और दो सौ घोड़े सहज में दिये। दोनों ओर से अच्छा स्नेहमय व्यवहार रहा। इस के बाद राव विदा होकर बाकानेर चला गया।

१ इस लड़ाई का वर्णन क्यामखानियों की त्तवारीख में नहीं है और नहीं उमम तौलत खा के किमी भाई का नाम रग खा लिखा है। (दवा०)।

२ बुधवार फरवरी २२ १५१४ ई०। सही तिथि फागुण बंदि ३ (रविवार फरवरी १२ १५१४ ई०) है। देवीप्रमाण से यहाँ भूल हो गयी एवं ३ के स्थान पर १३ लिखा गया। (म०)।

३ मावल पश्वर भोडर और काहड। (देवी०)।

जसलमेर पर चढ़ाई और फतह—

राव सूर्यकरण व समकालीन रावल देवीदास<sup>१</sup> था। खागी का चारण मेहडू लाला जेठावत उमके पाम मागने गया था। वह (रावल) उससे राठोडा का मज्जाक किया करता था। एक दिन लाला ने कहा 'आप चारणा से ऐसा मत कहो कि राठोड बहुत बुरे हैं।' इस पर रावल ने क्रोधित होकर कहा कि 'तुम्हारे राठोड मेरी जितनी जमीन में घोड़ा फिरा देंगे वह सब जमीन मैं ब्राह्मणा को दान में दे दूंगा।' लाला और रावल के बीच कई सवाल जवाब हुए। लाला के रवाना होने के समय रावल बिगाई में उस जी कुछ देना चाहता था उसे भी उम्ने स्वीकार नहीं किया। और वीकानर में आकर राव सूर्यकरण को उलाहना दिया और कहा कि 'उहाने (रावल) कहा है कि यदि राठोड मेरी जमीन पर पैर भी रख दें तो मैं वह सारी जमीन ब्राह्मणा को पुष्प कर दूँ।' आप काधल जी या बादाजी के बेटा को हुकम दो मो रावल जी के दस बीम गावा में फिर आवें।' राव ने कहा 'तुम निश्चित रहो। मैं स्वयं जाऊंगा।' इसके बाद राव ने सेना एकत्रित करने का आदेश दिया। बीदा का पाता ठाकुर भागा समारचदोत ३,००० सैनिक लेकर उपस्थित हुआ। इसी प्रकार बलीर बाघावत और राजमी वगरह भी आये। जब २० ००० सैनिक एकत्रित हो गये, तब राव न रावल के विरुद्ध कूष किया। कुछ ही दिनों में गाव राजोवाई डेरा हुआ। मझला का पुत्र (महाराज) ५०० घोड़े लेकर रवाना हुआ और जसलमेर की तलहट्टी को घडमासर तालाब तक लूट कर पुनः राव के पास लौट आया।

तब रावल जतसा ने अपने मरदारा को एकत्रित कर उनसे सलाह की और उमम रात्रि का राव के दर पर छापा मारने का निश्चय किया गया। रावल स्वयं ५००० सैनिक लेकर निल से उतरा और गाव राजोवाई में राव के ऊपर चला। परंतु राव तो स्वयं कमर बांधे तैयार था। अतः सामन जाकर उससे युद्ध किया। रावल युद्ध भंगन में ठहर नहीं सका और भाग गया। भागा ने उसका पीछा किया। तब रावल ने पुनः पीछे मुड़ कर भागा का मुकाबला किया और अंत में वह पकड़ा गया। इतने में राव भी वहां जा पड़ेवा था। सागा ने रावल को बांध कर राव के पाम उपस्थित

१ राव सूर्यकरण का समकालीन रावल अनमा था न कि रावल देवीदास। (स.०)।



किया। राव ने उसको उसी प्रकार हाथी पर बठा कर अपने साथ ले लिया और सुरक्षा के लिये भागा को साथ रखा। फिर राव की सत्ता जसलमर में पुस गयी। जमनमेर का लूटा गया जिनसे उहुन सा माल सत्ता के हाथ लगा।

राव ने लाला को रावल के डेर में भेजा। उसने जाकर झुंझरा किया। इससे रावल बहुत लज्जित हुआ। लाला ने रावल का एक गीत सुनाया और पूछा क्या 'रावल जी' भरे स्थायी गठोड़ कमे है?' परन्तु रावल ने तो प्रेम के मार्ग उसकी तरफ जाकर उठा कर भा नहीं दिया। तब लाला ने पुनः एक और गीत भागा समारच-दात की प्रशंसा का सुनाया और बाद में राव के पास चला गया। राव ने पूछा कि 'रावल जी में क्या रस हुआ?' लाला ने कहा कि 'व तो नाचे ही भावते रहे।

राव की भना का शिविर एक माह तक घड़मीसर तानाव के ऊपर रहा था। तब तब भाटी बिल से बाहर नहीं निकले और उमम बठे रहते हुए ही उन्होंने नमभीता कर लिया। तब राव ने रावल का खिलभत देकर दुग में भेज दिया। रावल ने भी राव के पुत्रों का विवाह अपने यहाँ करके दम घाटे दहज में गिरा और विदा किया।

**ढोसा<sup>१</sup> के नवाब पर चढ़ाई और राव का काम आना—**

बाद में राव ने ढोसा (नारनाल) के नवाब पर आक्रमण किया। नवाब भी सामना करने के लिये भाग पड़ा। आक्रमण के वक्त उदयकरण बीदावत और भाटी अपना ईमान बच कर भाग निकल। इन राव का सत्ता के पाव उखड़ गया। फिर भी राव और कुंवर प्रतापमी बरमा और नतमी ने थोड़े से सन्निव होने हुए भी भयकर युद्ध किया। इस युद्ध में दाना और के अनक सनिक मार गये। और राव के नीचे तीन घोड़े भी मार गये। अंत में राव पदल ही लड़ा और शत्रुओं के इक्कीस सनिका का मार कर स्वयं भी मारा गया। पुरोहित दवादान भी उसने साथ खत रखा था। उसने भागत

---

१ ढोसा तो वह स्थान है जहाँ नारनाल के जेध अवा मीरा के साथ युद्ध हुआ था। आभा बीकानेर० भाग १ पृ० ११८। (म०)।

हुए वीदावता से कहा था कि 'अरे रावजी दवाव मे जा गय हैं तो उहान कहा कि 'हम ता हमार रावजी को लिये जात हैं।' और जितन आदमी राव के गाय थे व सभी राव के साथ काम आये।<sup>१</sup> उक्त घटना श्रावण वदि ९, १५८३ वि०<sup>२</sup> को गाव डोमी<sup>३</sup> म हुई थी।

राव खूणकरण के निम्नलिखित १२ पुत्र थे—

- १ जेतसी
- २ प्रतापमी जिनके प्रतापसिंहोत बीका हैं
- ३ वरसी—इसके पुत्र नारायण के नारायणोत बीका हैं
- ४ रतनमा—इसके पुत्र जतसी के रतनसिंहोत बीका हैं जिनका ठिकाना महाजन है।
- ५ नतसी
- ६ करमसी—उसका बसबा रिणी परगना सहित मिसा था। चारण आशा भादा न निम्न दोहा लिखा था—

१ क्यामखानिया की तवारीख क्याम (खा) रामा म लिखा है कि बीका व हाग कर आने के कुछ समय पश्चात् उसके पुत्र राव खूणकरण ने डोमी पर आक्रमण करने के लिये बहुत सी सना लेकर कूच किया और गाय पटादी जा फतहपुर स १२ कोस दूर है बेरा किया। वहा से एक खास बक्का नवाब दौलत खा क्यामखानी का भेंट देने के लिये लिखा। मगर उमकी लिखावट बहुत थोड़ी थी। इस कारण नवाब दौलत खा ने बैसा ही जबाब देकर बकीस को वहा से निकलवा दिया। जब राव खूणकरण ने यह समाचार सुना ता उसने कहा कि डोमी को फतह करने के बाद फतहपुर का भा फतह करूंगा और वह डोमी की तरफ चला। वहा पठाना न ऐसा मुवाबला किया कि वह बहुत स मन्िका के साथ मारा गया और उमका माल ग्रमबाब भी मुसलमाना न लूट लिया। (दरी०)। क्याम खा रामा पृ० ८२-४३।

२ भगलवार जुलाई ३ १५८६ ई०। राव के स्मारक तख के धनुमार उसका मृत्यु वशाख वदि २ १५८३ वि० (माच ३१ १५८६ ई०) को हुई था। आभा० बीवानर० १ पृ० ११९। (स०)।

३ गामी गाव का नाम नहीं पहाड़ी का नाम है जा नारनीन क पश्चिम म तीन कास पर स्थित है और अनक गाँव उमके नीचे बस हुए हैं। (गमी०)।

निया । राव ने उसका उमी प्रकार हाथी पर बठा कर अपने साथ ल लिया और सुरक्षा के लिये मागा को साथ रखा । फिर राव की मना जमलमेर में घुम गयी । जमलमेर का नुटा गया जिसमें बहुत सा माल मना के हाथ लगा ।

राव ने लाला को रावल के घर में भेजा । उसने जाकर मुजरा किया । इससे रावल बहुत लज्जित हुआ । लाला ने रावल का एक गीत सुनाया और पूछा क्या रावल जो ' मेरे स्वामी गठाइ कैसे हैं ? परन्तु रावल ने ता शर्म के मार उसको तरफ आग्र उठा कर भी नहीं रखा । तब लाला ने पुन एक और गीत मागा समारचदात की प्रशंसा का सुनाया और वाप में राव के पास चला गया । राव ने पूछा कि रावल को से क्या रग हुआ ? लाला ने कहा कि 'व सो नीचे हा भावत रह ।'

राव की मना का शिविर एक माह तक घडमीसर तालाब के ऊपर रहा था । तब तक भाटी किन स बाहर नहा निक्के और उमम बठे रहत हुए ही उहाने समभीता कर लिया । तब राव ने रावल का खिलमत देकर दुग में भज लिया । रावल ने भी राव के पुत्रा का विवाह अपने महा करके दम घाडे दहेज में दिये और बिग्न किया ।

**होसी<sup>१</sup> के नशाब पर चढ़ाई और राव का काम आना—**

बाद में राव ने लोसा (नारनाल) के नवाब पर आक्रमण किया । नवाब भी मामना करने के लिये आग्र बना । आक्रमण के वक्त उत्पकरण कीदावत और भाटी अपना ईमान बेच कर भाग निमल । अत राव का मना के पाव उखड गय । फिर भा राव और कुवर प्रतापमी बरभी और मतसा ने थाडे से सनिक हान हुए भी भयकर युद्ध किया । इस युद्ध में दोनों आर के अनक सनिक मार गय । और राव के नीचे तीन घाटे भी मार गय । अत में राव पदल ही नडा और शत्रुघ्रा के इक्वाम सनिका को मार कर स्वय भी मारा गया । पुरोहित देवीनाम भा उमके साथ बेत रहा था । उसने भागने

१ लोमी तो वह स्थान है जहा नारनाल के शेख अवा मीरा के साथ युद्ध हुआ था । आभा बीकानेर० भाग १ पृ० ११८ । (स०) ।

नूँ बीदावता से कहा था कि अगर रावजी दबाव में आ गए हैं तो उन्होंने कहा कि हम तो हमारे रावजी को लिये जात हैं। और जितने आदमी राव के साथ थे व मभी राव के साथ काम आये।<sup>१</sup> उक्त घटना श्रावण वदि ९ १५८३ वि०<sup>२</sup> को गाव डोसी<sup>३</sup> में हुई थी।

राव भूणकरण के निम्नलिखित १२ पुत्र थे—

- १ जतसी
- २ प्रतापसी—जिनके प्रतापसिंहोत्त बीका हैं
- ३ वैरमा—इसके पुत्र नारायण के नारायणात्त बीका हैं,
- ४ रतनसी—इसके पुत्र जतसी के रतनसिंहोत्त बीका हैं जिनका ठिकाना महाजन है।
- ५ नत्तमा
- ६ करमसी—उसका बम्बा रिणी परगना सहित मिला था। चारण आशा भादा न निम्न दोहा लिखा था—

१ क्यामखानिया की तबारीख क्याम (खा) रामा में लिखा है कि बीका के हार के आने के कुछ समय पश्चात् उससे पुत्र राव भूणकरण ने ढासी पर आक्रमण करने के लिये बहुत सी सेना लेकर कूच किया और गाव पटानी जा फतहपुर से १० कोस दूर है डेरा किया। वहाँ से एक खाम रक्का नवाब दौलत खा क्यामखानी को भेंट देने के लिये लिखा। मगर उसकी निज्वाबट बहुत आछी थी। इस कारण नवाब दौलत खा ने यमा ही जबाब देकर बकाल को वहाँ से निकलवा दिया। अतः राव भूणकरण ने यह समाचार सुना तो उसने कहा कि डोसी को फतह करने के बाद फतहपुर का भी फतह करूँगा और यह ढासी की तरफ चला। वहाँ पठाना ने ऐसा मुकाबला किया कि वह बहुत से मनुको के साथ मारा गया और उसका मान-धनबाव भी भुलसमाना न लूट लिया। (पृ०)। क्याम खा रामा पृ० ४०-४३।

२ मंगलवार जुलाई २, १५०६ ई०। राव के म्मारक संग्र के अनुसार उसका मृत्यु वैशाख वदि २ १५८३ वि० (माघ ३१ १५०६ ई०) को हुई था। भाभा० बीकानेर० १ पृ० ११९। (म०)।

३ ढासा गाव का नाम नहा पहाडा का नाम है जो नाग्नोन के पश्चिम में तीन काम पर स्थित है और अनेक गाव उमक नीचे बसे हुए हैं। (दबी०)।

## दोहा

मादू जो ससार भाटी मू घडिया महण ।

तो घडिया करतार, काया हुता करममी ॥

भादा क' उक्त दोहे पर करममी न उसको बरोड पमाव देना निश्चिन करव  
उसके लिय अपन कु बर कीरतमिह क। साथ लिया । उसका मिराही क गाव  
कालिद्रा क ठाकुर की पुत्री स विवाह हुआ था । इस करण वह अपन  
श्वसुराल म हो रहा । उसक बशज कीरतमिहान बीरा मिराही के श्रेष्ठ  
म रहते है ।

७ निशान

॥ राममी,

९ सूरजमल

१० कुशल,

११ रुपसी ।

राव मूलवरण क बारहवें क बाल जतमी गद्दी पर बैठा था ।

---



(अर्थात् मातम पुरसी) को आया हूँ।' राव ने कहला भेजा अच्छा मालूम हुआ। अब तुम तयार रहना, मैं आता हूँ।' उदयकरण यह सुन कर द्रोणपुर की तरफ चला गया। उमके इस काय से उमकी बहुत बदनामी हुई थी कि मुह काला कर के आ खड़ा हुआ।'

तदनन्तर श्रावण बदि १५ १५८३ वि०<sup>१</sup> को राव जेतसी गद्दा पर बठा। आश्विन सुदि १४ को दमनाक गया और करणी जो के दशन कर कार्तिक बदि २<sup>३</sup> को वापस लौटा।

**द्रोणपुर और सिहानकोट की कतह—**

राव ने आश्विन सुदि १०, १५८६ वि०<sup>६</sup> को सेना के साथ द्रोणपुर पर आक्रमण के लिये कूच किया। सेना द्रोणपुर के पास जा पहुँची। तब बीदावत उदयकरण ने वहाँ से भाग कर नागौर के खान के यहाँ शरण ली। राव जेतसी ने परगना सहित द्रोणपुर बीदावत सागा ससारचदोत का दे दिया।

तब सना वहाँ से रवाना होकर सिहानकोट पहुँची। जोहिया तिहुन-पाल वहाँ से भाग कर मतलज और लाहौर का तरफ चला गया। राव ने सिहानकोट का उजाड़ दिया और दुग का नष्ट कर दिया। तदनन्तर सना बीकानेर लौट आयी। इस सना का सेनापति सागा ससारचदोत था।

**सागा की मरव—**

राव झूलकरण की पुत्री बालाबाई<sup>५</sup> का विवाह अम्बर के राजा

१ सोमवार जुलाई ९ १५२६ ई०। राव झूलकरण की मृत्यु मात्र ३१ १५२६ ई० को हुई थी। अतः अप्रैल १५२६ ई० में जेतसी निश्चित रूप से गद्दी पर बैठ गया होगा। (स०)।

२ बुधवार सितम्बर १९ १५२६ ई०।

३ शनिवार सितम्बर २२ १५२६ ई०।

४ सोमवार सितम्बर १३ १५२९ ई०। मुन्शी दवाप्रभाद से यहाँ मन्वत् म भूल हो गयी है। वस्तुतः सवत् १५८४ वि० (अक्तूबर ४ १५२७ ई०) होना चाहिये। ओभा० बीकानेर० १ पृ० १२३। (स०)।

५ बालाबाई वडा भगवत् भक्त थी। इसी कारण वह मयुराल म भी बार् कहलाता था।

पृथ्वीराज के साथ हुआ था। उसने बारह पुत्रों के वंश में बारह बांट दिया।  
 ग्राम्बर के जागीरदारों में प्रसिद्ध हैं। पृथ्वीराज का उत्तराधिकारी पुत्र भीम  
 था। वह अपने पिता (पृथ्वीराज) के मरणोपरान्त शासन बना था। वह  
 केवल दो माह राज्य करने के बाद ही मर गया था। तब उसका छोटा भाई  
 रतनसी (ग्राम्बर की राज्य) गद्दी पर बैठा। रतनमी और बालाबाई के  
 पुत्र मागा के बीच वैमनस्य हो गया। धीकानेर आकर मागा ने रतनमी के  
 विरुद्ध जब जेतमी से सहायता मांगी। राव ने १५०० सैनिक उसकी  
 सहायता के भेजे, उनमें निम्नलिखित सरदार थे—

- १ चाचाबाद का बणार बाघावत
- २ महाजन का ठाकुर रतन सुणवरणावत
- ३ राजासर का रावत निगनसिंह बाघावत,
- ४ माहव का खेतमी भरदकमलोत,
- ५ भल्लू का भोजराज
- ६ घड्डीसर का बीका देवीदास,
- ७ रावत बैरमी
- ८ बीटणोव का भाटी घनराज पूवय क राव सखा का पौत्र,
- ९ खारबाडे का भाटी निगनसिंह बाघावन
- १० सिहोन क मलिक का पुत्र जाहिया हामो
- ११ वेद मेहता अमरा
- १२ बच्छावत भागा और
- १३ पुरोहित लक्ष्मीदास देवीदासोत।

मागा ने ग्राम्बर के राज्याधिकार क्षेत्र में जाकर अमरसर से पागी  
 मोजावात तक अधिकार कर लिया, और ग्राम्बर के अनेक सरदार उसमें  
 आ मिले। परन्तु मागा ने रतनमा को पाटवा समझ कर ग्राम्बर में  
 प्रवेश नहीं किया और उसके पास अपने नाम से मागानर नामक

१ यह वही मागानर है जहाँ का रणा और छपा प्रसिद्ध है। (नवी)।



न जेतसी स कहा कि जोधपुर जापकी सहायता स ही मेर अधिार म रहा है । और राव जेतसी का एक हाथी और श्याम रंग के दो घोड़े मान की माज के साथ दिये । तदनन्तर राव जेतसी विदाई कर करणी जी के दशन करत हुए बीकानेर गया और गागा जाधपुर गया ।

**करणीजी का इत्तकाल—**

घत सुदि ९, १५९३ वि० को करणी जी का स्वर्गवास हुआ गया । राव न देसनोक म उनका मन्दिर बनवाया और उनकी प्रतिमा जो खाती बना कर लाया था वह उस मन्दिर म स्थापित करके प्रतिष्ठा की ।<sup>१</sup>

**बीकानेर पर शाह कामरा का आमा और हार कर भाग जाना—**

कामरा बाबर बादशाह का बेटा और हुमायूँ बादशाह का भाई था । उसका एक जमी पंडित भावनेव मूरि गिरसी जाकर भटनर पर चला

१. गुरुवार माच २८ १५३९ ई० ।

२. करणी जी सवत् १५९४ वि० म जसतमेर गयी थी क्योंकि रावल जेतसी का बदन बिगड़ गया था और वह देसनोक म आना चाहता था । परन्तु करणी जी उसका भाव देख कर स्वयं ही वहा पहुँच गई । रावल न एक मजिल सामन जाकर दशन किये । करणी जी न हाथ फेर कर उसका बदन अच्छा कर दिया । तदनन्तर वह एक खाती के मकान पर गयी जा ९० वर्ष का वृद्ध और अधा हो गया था । करणी न उसकी आँखे अच्छी कर दी और उससे कहा कि भरी प्रतिमा बना द । वहा से वह खाढ़े डे हाकर गाव बेंगटी गई । वहा हरभूजी साखला न जो कि मारवाड के पारो म स एक था खान की मनुहार की । करणी जी न कहा कि भाई साखला ! कुछ समय तक धीरज रख (जरा सन्न कर) । तब वह गाव घडियाला म सासाब के ऊपर गाडी स उत्तरी और ध्यान करने लगी । कुछ समय बाद उसका बदन से आग का लपटें निकली और आनमान म जाकर मूय स मिल गया । जब राव जेतमा न उनका मन्दिर बनाया तब वह खाता उनकी प्रतिमा लेकर दसनोक गया और वह प्रतिमा और चादी का तोरण भा राव न चढ़ाया था जो अब तक विद्यमान है । (दवी०) ।

लाया।<sup>१</sup> उक्त विना कुछ समय पूव राव जेतगी के आदेश से साहव के ठाकुर अग्द्वमल बाघनोत और पूरगमल वमरह ने सिधु चायल से पतह किया था। शाह न उसको भेरा। विवेदार सतमी बहुत दिना तक लडा परन्तु जब वह मारा गया तो दुग पर कामरा का अधिकार हा गया। उसने वहा से बीकानेर पहुँच कर घडसीसर तालाब पर शिविर लगाया। और किले को घेर कर युद्ध प्रारम्भ कर दिया। राव ने तुकों को शक्तिशाली समझ कर अपने सब भार्द-बटा और भरदारा से सनाह की। उन्होंने कहा कि शत्रु है ना शक्तिशाली परन्तु हम लड कर उसका पराजित करेंगे। राव ने कहा कि इस राज्य की सुरक्षा का भार करणी जो पर है वह ही हम सब की इस कठिनाई का दूर करेगी। यह कह कर राव ने मिले की सुरक्षा की व्यवस्था का बीर दमनोक गया। वहा दशन करक मन्दिर में बठ गया और पतह नौ अज करत गया। अतः में उसको दवी का एक हाथ नजर आया आदेश दिया कि 'रात्रि को अचानक छापा मार तुम्हारी विजय हागी। राव ने पुन बीकानेर आकर आश्विन सुदि ५, १५९५ वि०<sup>२</sup> को २००० सैनिका के साथ छापा मारा। और करणी जो की मन्द से कामरा को भगा कर विजय प्राप्त की।<sup>३</sup>

१ भटनर को अब हनुमानगढ कहत है। वह प्राचीन शहर है। कहत है कि राजा दशरथ के पुत्र भरत ने उसका बसाया था और इसका वास्तविक नाम भरतनेर रखा था। वह कई बार उजडा और पुन बसा। अन्त में १००० वर्ष पूव जोहिया ने उसका बसाया। परन्तु पुन आपस के भगडे के कारण उजडा दिया और वे स्वयं वहा से २५ कास दूर मिहानकाट में जा बसे। चणम खा लोदी ने भटनर को पुन बसाया। उसमें फुलहे के भाटी बरमी ने लकर भटनर नाम रख दिया। उससे राजलदन जाहिया ने ल लिया। बहुत वर्षों तक वह जोहिया के पाम रहा। फिर सिधु चायल ने उस पर अधिकार कर लिया। उसमें राठोडो ने लकर उसका आबाद किया। (देवी०)।

शनिवार सितम्बर २८ १८३८ ई०।

निम्ना है कि उस समय कामरा क्या देखता है कि हजारों चारंगिया चरु चला रहा है। तब उसने कहा कि पीरा की इस जगत् क्या था पडे भाई? और फिर उसने अपना घोडा भगाया। राव गच्छनी में जाकर उसका किरनिया (एक प्रकार का छत्र) गिर गया जहा उसका दशन हात है। राव ने वह गाव एक चारण को द दिया। कामरा का सना १०० कास जाकर एकत्रित हुई। (देवी०)।

जोधपुर के राव मालदेव की चढ़ाई और राव जेतसी का काम आना—

सन्वत् १५९८ वि० म जोधपुर के राव मालदेव ने अपने सरदारों को पा महाराजों, पचायण करमसिंहों और २० ००० सेना के साथ बीकानेर पर आक्रमण करने के लिये कूच किया। राव जेतसी भी उससे मुकाबला करने के लिये अपनी सुमज्जित सेना लेकर गांव साहूरे गया। नगर और दुग की सुरक्षा के लिये भेखू व चाखू के ठाकुर रूपावत भोजराज सादावत के नेतृत्व में १५०० सैनिक रखे गये। विवेकदार साखला महेशदास था।

राव ने पठाना से रु० २० ००० के छोटे लिये थे। परन्तु कामदारा ने उनके रुपये नहीं दिये थे। इस कारण उत्त पठान भी राव के साथ ही गांव साहूरे जा पहुँचे। जब राव शिविर में प्रविष्ट होन लगा, उस समय उसने उन पठानों को देखा तो उनको बुला कर कहा कि तुम यहाँ क्यों आये ? हम तो कल लड़ाई करेंगे। पठाना ने निवेदन किया कि अन्नदाता हम भी सरकार के नौकर हैं और हमारे रुपये अब तक प्राप्त नहीं हुए हैं। यह सुन कर राव कामदारा पर बहुत नाराज हुआ। और कहा कि हरामखोरा ने रुपये नहीं दिये। मैंने कह दिया था कि रुपये दे देना और अब मैं लड़ने के लिये आया हूँ। फिर किसी का कज क्यों रखूँ ? यह कह कर साहूरी रामा से दो घोड़े तयार करवाये और दरवागी माधवदास भारमलाल से कहा कि यदि कोई सरदार या भाई मलाम करने आये तो मत आन देना। इतने में हम भी आ जावेंगे। यह कह कर राव पठाना को साथ लेकर बीकानेर के लिये रवाना हुआ। पहर रात्रि होने के समय बहा जा पहुँचा। रूपावत भोजराज और साखला महेशदास ने प्रवेश द्वार खोला। अन्दर जाकर राव ने मालू और धन्ना से कहा कि ला अपने रुपये ल लो। उन्होंने अज की कि अन्नदाता अभी तो आपने ऊपर लड़ाई का वक्त आ गया है। हमारे रुपये कहा जात हैं ? हमारा गांव साहूरे में यह खयाल नहीं हुआ और अपना यहाँ आना उचित नहीं था। इस पर राव ने ज़िद की परन्तु उन्होंने तो रुपये नहीं लिये और कहा कि आपकी फतह होगी तब सब लेवेंगे। इन बातों में एक पहर व्यतीत हो गया। फिर उन लोगों को बहा दुग में रख कर राव पुनः अपने शिविर के लिये रवाना हुआ। भोजराज ने पन्चम मवार राव के साथ भेजे। परन्तु उधर सेना में राव के पाल्ल चल आन से पहिने ही यह खबर फैल गयी थी कि राव निकल गये। यह सुन कर निम्नलिखित मरणांग राव के शिविर पर पहुँच—

- १ महाजन का धनु नसिह रतनमिहान
- २ द्राणपुर का राव सागा का बटा
- ३ चाचाबाद का बणीर
- ४ साहज का खेतसी का पुत्र साईनाम
- ५ सिकराली का भारमन भाटणात
- ६ रूपसी सुगवरगोत
- ७ गरव का हू गरमी
- ८ बाठनाक का भाटी धनराज
- ९ छारबाडे का भाटी किशनमिह
- १० माहू के का चन्द्रसेन
- ११ बीदावत सूरमिह प्रतापमिह
- १२ घडमीसर का देवोदाम
- १३ जमलसर का भाटी करणमिह और
- १४ पू गल का राव बेरसी ।

उपरोक्त सरदारा न भाघवदास से पूछा कि क्या रावजी से मिलन का मौका है ? उसने कहा— नहीं ! मीय हुए हैं । यह सुन कर उहान तक्रार का और कहा कि हमारा उनसे मिलना अत्यावश्यक है । तुम पाव पर हाथ लगा कर उनका जगा दो । तब उसने राचार होकर वह स्त्रियां कि रावजी मौदागरा का रुपय दन बांकाकर गये हैं सो अभी आ जावेंगे । इस पर सरदारा ने समझा कि राव अब नहीं आवगा । वह यह भगडा हमारे सिर पर छाड गया है । उसने तडाई करन की मामध्य नहीं रही । यह माच कर सब सरदार वहां से चले गये । केवन राव के डेरे के लगभग १०० सेवन रह गये थे ।

राव सूर्योत्थ के दो घण्टे बाद अपने मत्ताइम मबारा के साथ अपना सना में जा पहुँचा । उमा रात्रि को राव मालदव की मना भी उसी गांव में जा पहुँची । राव उम अपनी ही सना ममझ कर शिविर पर आया । भाघवदाम और अन्य नौकरों ने आगे जाकर राव का सनाम किया । और राव का मभी हानाते में अवगत कराया । राव ने कहा— तब तो यह राव मालदव की मना दीखता है । मानदव के मुखर भी लग हुए थे । उन्होंने जाकर मानदव को सूचना दी कि राव जतमा अपने शिविर में आ गया है । राव

मालदेव ने तत्काल राव जेतमी पर आक्रमण कर दिया। राव जेतसा न भा अपन मत्तार्म धुडमवारा और १०० पन्त राजपूता के साथ उमसा मामना किया। राव न मालदेव को देख कर घोड़ की बाग ली, और पास जाकर तलवार मारा। मालदेव ने तनवार के प्रहार को ढान पर रोका परन्तु ढाल बट गई और तलवार घाड़े की बनीमी (काना) पर लगी जिससे घाई का खोपड़ी उड़ गयी। इतने में ता राव जेतसी को बड़ सनिका १ घेर लिया। राव अकेला उन सब का मुकाबला करता रहा। अन्त में १७ व्यक्तियों का मार कर चत्र बदि ११ १५०८ बि०<sup>१</sup> को वह स्वयं भी काम आया। राव जेतमी के १२७ व्यक्ति भी मार गये। उनमें निम्नलिखित सरदार थे—

- १ सोनगरा साग्यदव जयमलात चाप का
- २ माहणी रामा बेलामर का
- ३ दरबारी माधो भारमनोत जनमालोत राठाड
- ४ पुराहित लक्ष्मीदाम देवीनमोत।

राव मालदेव का घाटा जेतसी के हाथ से मारा गया था। अतः शकुन शास्त्रिया ने कहा कि यह ठिकाना राव जेतमी के वंशज के अधिकार में रहेगा और उन घाटे का भिर कटा है इसलिये राव मालदेव की राजधानी पर हम कर म जेतसी के वंशजा का अधिकार हो जाना चाहिये।

राव मालदेव साहूवे से कुछ रुपये बीकानेर गया। किलेदार भाजराज ने कुछ कर कायागमल और भीमराज को सपरिवार गहर निकाल दिया। वे तीसरे दिन सरस में प्रविष्ट हुए। यहां रूपावत भोजराज और साखला महेशदाम तीन दिन तक किले में सं सड़े। चौथे दिन अफीम खाया और नाना न सभी राजपूता को पिलाया। फिर किले के हाथ देकर १५०० राजपूता न बसरिया पहना और किले के द्वार खोल कर बाहर निकले। इनके साथ घना और सालू भी थे। उन सब ने राव मालदेव की सना पर आक्रमण कर दिया। इस लड़ाई में राव मालदेव के २००० सनिक और वे सभी (जेतसी की सना) भी काम आये। घना और सालू भी पांच व्यक्तियों का मार कर मार गये। रूपावत भाजराज के हाथों राव मालदेव का सरदार जगमाल दुजनदानोत माण्डणोन राठाड मारा गया था।

राव मालदेव ने बीकानेर पर अधिकार कर लिया। कूपा महाराजात और पचायण वरममिहात को थाणेदार रखा। तदनंतर राव पुन जोधपुर चोट गया। बीकानेर के लगभग आधे राज्य पर राव का अधिकार हो गया था और शेष भाग पर कल्याणसिंह का ही अधिकार रहा।<sup>१</sup>

राव जतसी व निम्नलिखित पुत्र थे—

सोढी राणी वरमोरी के पट से—

१ कल्याणसिंह

२ भीमराज—दमक भीमराजोन बीका कहलात हैं

३ ठाकुरमी इसन जतपुर बसाया

४ मालदेव

५ काहा।

१ जोधपुर की न्याय म लिखा है कि राव मानदेव व सरदार कूपा और जता के शिखि सवत् १५९९ बि० म डीहवाणा की तरफ थे। वे एक दिन दरबार म बैठे हुए कह रहे थे कि राव न सम्पूर्ण क्षेत्र पर अधिकार कर लिया है। आज कोई नहीं है जो उसका सामना कर सके। यह बात एक चारण ने बीकानेर जाकर राव जतमी से कही। राव के मुह से निकल गया कि अभी कोई वाका का जाया नहीं मिला। यदि मिलता तो मालूम पड़ जाता। यह सुन कर एक राठोड न कहा राव जा ऐसा मत कहो। कोई सुनगा ता अच्छा नहीं है।' जत म उसी चारण न कूपा और जता के पास जाकर कहा कि राव जतमी ऐसा ऐसा कह रहा था। उस समय तो उन्होने कोई प्रतिश्रिया व्यक्त नहीं की और कुछ दिन बाद नागौर मे ५०० साव १०००० परवालें और २०० शवदया मगवा कर बीकानेर के विरुद्ध कूच किया। राव जतसी न भी सान फान आग वर कर गाव माहव म युद्ध किया और काम आया। राव (मालदेव) की विजय हुई। साथ ही राव मालदेव का बघाई भेजी गई कि राठोड जता और कूपा न बीकानेर जीत लिया ह। आप यहा आवें। अन राव बीकानेर गया और बीकानेर व किल म एक महल व दरवाजे पर हाथ रख कर वाला नि जाग राव जत और वहा म क्यामखानिया व अधिकार क्षेत्र शेखावाटा पर अधिकार करन र लिय कूच किया। पनहपुर मु भू पर अधिकार कर लिया और गठाड कूपा को भेंट म ले लिया। (बी०)।

मानगरी राणी रामकु वर के पेट मे—

- १ शृ ग जिसके शृ गीत बीका है
- २ सुजन जिसन सुजनसर गाव बसाया
- ३ कमसेन
- ४ पूणमल
- ५ अचलदाम
- ६ मान
- ७ भोजराज,
- ८ तिलोकसी ।

निम्नलिखित पाच राणिया राव के साथ मनी हुई थी—

- १ सोढा कश्मीर दे सोढा जतमाल देवकरणात की पुत्रा । उनन कश्मीरसर गाव बसाया ।
  - २ सोढी लाडकु वर जैतमाल दासावत की पुत्री ।
  - ३ सोढी भहाकु वर साग तजमाल जतसिहात का पुत्रा ।
  - ४ कछवाही ठाठम द बछवाहा नाथा जगमालीत की पुत्री ।
  - ५ भाली जमकु वर राम नगावत की पुत्री ।
-

## मारवाड

### राव मालदेव

राव मालदेव मारवाड व राजाघा म बड़ा बहादुर और भाग्यशाली हुआ। वह सन् १५८८ (१५३१ ई०) में जोधपुर की गद्दी पर बैठा था और उमा वप में उसने चलाई प्रारम्भ करके सम्पूर्ण मारवाड के क्षेत्रों में जहाँ पर राजपूत सरदारों और नाभोर और जालोर पर मुसलमानों का अधिकार था उनका पराजित किया। फिर इधर जब उज्जैन के महाराणा और गुजरात व सुतान बहादुरशाह के और बादशाह हुमायूँ और शेरशाह पठान के आपस में लड़ाई का मौना देखा तो उसने सेना भेज कर अरावली पहाड़ों से जयपुर के पास तक का सम्पूर्ण क्षेत्र अपने अधिकार में कर लिया। तब अनिष्ट आघा-आघा राय आम्बर (जयपुर) उज्जैन और जयपुर का और राजानों का सम्पूर्ण क्षेत्र तब नियुक्त



तब ता बीकानेर बगैरह के राजा और भामिया शेरशाह के पाम शिकायत लेकर गये। उधर जब हुमायू बादशाह शेरशाह से हार कर राव मालदेव से मदद लेने के लिये सिध हाकर मारवाड में आया उस समय हुमायू के भ्रादमिया न कई जगह गाय मारा। अत मारवाड के राजपूत नाराज हो गये और बादशाह हुमायू को बिना सहायता हो पुन सिध की तरफ लौटना पडा। यह समाचार सुन कर शेरशाह ने आगरा से राव के ऊपर घढाई की। शेरशाह का सामना करने के लिये राव मालदेव ८० ००० सवार लेकर अजमेर गया। राव मालदेव की विशाल सेना देख कर शेरशाह भयभीत हो गया और पीछा जाने लगा था। परंतु मेडता के राव बीरम ने कहा कि आप कुछ समय के लिये ठहर। मैं रावजी को बातों (कूटनीति) में मगा दूंगा। फिर उसने शाही मुशी से १०० हुकम राव के सरदारों के नाम लिखवा कर ढाला की गदियों में मिलावा लिये और एक एक एक एक व्यापारी के साथ उस सरदार के पास जिसके नाम का हुकम उममें बंद था भेज कर कहा कि जिम किसी भी मूल्य पर वह खरीदे देकर आना। और फिर १०० ००० मुहर बादशाह के सिक्के की राव के बाजार में भेज कर जिस मूल्य में बिक सकी बिकवा ली।

जब इस तरह के ढांठे और मुहरों राव की सेना में पहुंच गई तब एक दिन रात के वक्त बीरम ने राव के पाम जाकर कहा कि हम ता आपसे उन्न कर बादशाह के पास चले गये उमका कारण ता यह है कि आपने हमारी राटी छीन ली है परंतु आपका मरतार क्या बदल हुए है? राव ने कहा मैं नहीं जानता। बीरम ने कहा आप उनकी ढाला का गदिया चीर कर देख तो मासूम हो जावगा। वह उतना कह कर वापस लौट गया और बादशाह से कहा कि कल परसों आप देख लना कि रावजी कहा जाकर ठहरत है।

इधर बीरम की बात का सुन कर राव बहुत भयभीत हुआ और रात बड़ा बचेनी में निकली प्रात हो जब सरदार सलाम करन आय और उनसे पाम नई ढालें जो उहान पिछले राज दिल्ली के व्यापारियों में खरीनी थी, देखा तब ता राव को और भी शक हुआ। वे सब ढालें देखने के यहाँ में लेकर रख नी और उनका मोख देकर ढाला का गदिया उधड़वाइ। उन ढाला में एक एक हुकम फारसी में लिखा हुआ हम आशय का निबन्दा था कि

१००० मुहरों तुम्हारे पास भेजी जा रही हैं। अब तुम अनन मममीन के अनुमार राव को पकड़ कर हजरि करो।' यह मजमून सुनत ही राव के कान खड़े हो गये। उसने अविलम्ब बाजार में आदमी भेज कर जाच कराई ता मालूम हुआ कि बादशाह के नाम की बहुत सी मुहरें सर्राफों (व्यापारियों) के पास हैं।

इन बातों से राव ने यही नतीजा निकाला कि मरदार अवश्य ही बादशाह में मिले गये हैं और लड़ाई के समय उसके साथ विश्वासघात करेंगे। यह सोच कर राव ने राज को मारवाड़ की तरफ प्रस्थान कर दिया। मरदार ने मालदह का बारबार निवेदन किया कि वे बादशाह से नहीं मिले हैं और न कोई रिश्तत ही उहाने ली है। साथ ही डालों में जो कागज निकले उनके बारे में उनको कुछ भी बात नहीं है। 'जाप हम पर विश्वास करें और बल ही देख लें कि हम बादशाह से कैसे लड़ते हैं।' राव ने उनकी बातों पर विश्वास नहीं किया और सीवाना की तरफ चला गया। तब जेना और कूपा वगैरह बड़े-बड़े सरदारों ने १०००० राजपूतों के साथ शेरशाह पर आक्रमण करने के लिये कूच कर दिया। लेकिन रात्रि में माग भूत कर निनि निकले एक नगी के तीर पर जा पहुँच। वहाँ खूब अमल पाना उनके फिर रहाना हुए और शेरशाह की सेना पर जो मारवाड़ क्षत्र के परगना जेतारण के गाव मुमेल और गिरों में थी तलवारों खेंच कर दिन नहाड़े जा पड़े। एसी बहादुरी से लड़े कि बादशाह घबरा गया। यदि उस वक्त पीछे से आने वाली दूसरी सेना वहाँ नहीं पहुँचता तो बादशाह और उसके ५०-६० हजार सैनिकों का काम तमाम हो जाता। परन्तु दूसरी सेना के समय पर पहुँच जाने से बादशाह का बचाव हो गया। राव के सब मरदार मारे गये। शेरशाह की विजय हुई। लेकिन वह बाइ ज्यादा लुभ नहीं हुआ और जाना मुद्री भर बाज़र के वास्तु हिन्दुस्तान की बादशाही शोर्ह हाती। और जाधपुर पहुँच कर बीरम को मडना और राव कल्याण का धीकान्त दिया दिया। यह बात सन् १६०० (१५४३ ई०) की है।

तब से तामर चप में शेरशाह के मरने की खबर सुन कर राव ने उसका मूरेगार से जाधपुर छोड़ दिया। और तत्पश्चात् उस चप तक पुन मय व्यवस्था और विस्तार कर फिर से मारवाड़ में अपना आधिपत्य जमाया। उनसे अजमेर पर आधिपत्य करने पर मालिक की उत्पत्ति के गंगा

उदयसिंह से कई सडाइया हुई। संवत् १८१० (१५५५ ई०) में धनवर बादशाह गद्दी पर बठा। और उसने पिछली बात को याद करके मारवाड़ पर सेना भेजी। उसने अजमेर, मेड़ता नागौर डीडवाणा जैतारण और जालोर बगरह परगने राव के हाकिमा से पतह कर लिये। राव ने उसका सामना करने क लिये नागौर का तरफ सेना भेजी। वह सेना पराजित हा गई और नागौर पर मालदेव का अधिकार नहीं हो पाया।

यातिक मुदि १२, १६१९ वि०<sup>१</sup> को राव की जोधपुर में मृत्यु हो गयी। उसके साथ सतीस स्त्रिया सती हुई थी।

मालदेव ने ३१ वर्ष राज्य किया। वह बहा बहादुर और प्रतापी हुआ। उस वक्त हिन्दुस्तान में उसके बराबर और कोई शक्तिशाली राजा नहीं था। फारसी में भी उसकी प्रशंसा की गई है।

---

# परिशिष्ट

## हल्दीघाटी के युद्ध की सही तिथि-तारीख

लेखक

मनोहरसिंह राजावत

१६ वीं शताब्दी से भारतीय इतिहास में एक नये युग का प्रारंभ होता है। उस शताब्दी के पूर्वार्द्ध में बाबर ने दिल्ली पर आक्रमण किया और इब्राहिम लोदी का पराजित कर मुगल साम्राज्य की नींव रखी। उसमें लाल उठा कर सन् १५१६ ई० में मुगल सनावा न दिल्ली की अफगान सल्तनत के सनावाको का पानापत के द्वितीय युद्ध में पराजित कर भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना की।

अबचर न राजस्थान के राजपूत शासकों के प्रति एक नई नीति अपनाई थी, क्योंकि आचार्य यदनाथ मरकार के अनुसार

कि यदि राजपूता व हूँदा पर वह विजय पा सका तो य हा राजपूत इस नवनिर्मित साम्राज्य व विरोधपूर्ण धनाच्छांति भाग्यावाश में उम साम्राज्य की भावी आशाओं तथा उमकी स्वायी मत्ता व उत्थम का एक मात्र अन्त गितारा बन कर चमकेंगे। अतः ही इस नई नीति की धाम्नेर व कछावा तथा राजस्था के कई अय राजपूत शामको न स्वायत्त कर तन्नुमार मुगल साम्राज्य का आधिपत्य स्वीकार कर लिया। हूँदपुर मिरोही रूँडर आदि राज्या के शामको की मुगल सनाभा से पराजित हान व बाँ विवश हाकर मुगल आधिपत्य स्वाकार करना पडा था।

परन्तु अकबर मवाड व महाराणा उत्थमिह व उत्तराधिकारी महाराणा प्रताप से भी मुगल आधीनता स्वाकार करान का समुत्सुक था और उता उद्दश्य से उसने कई प्रतिनिधि भी महाराणा प्रताप व पास भेज परन्तु उमन किमी की नहा मुना। तत्र अन्त में आम्बर व हुँवर मानसिह का मवाड पर पडाई करन का समय अग्रस २ १५७६ ई० व तिन अजमेर से खाना दिया। मुगल मवाड सना का मामना खमनौर व पास बनाम नगा व बाँ म हुमा। तब वहा जा भीषण युड हुमा वह इतिहास में हल्मीघाटी व युड व नाम से मुजात है।

महाराणा प्रताप ने अपने मार शामन-काल में यही एक युड लन मवान में जम कर लडा था। महाराणा, प्रताप का विषम मनोरथ ही वापस लौटना पडा था। मुगल भी उससे कोई उत्तेखनीय लाभ नहीं उठा सके थे। परन्तु भारताय इतिहास में उमका अपना विशेष महत्त्व है और कालांतर में हल्मीघाटी व इस युड का राजस्थान की धर्मापत्ती की सना दी गई थी। यह तब का विषय है कि इस युड की मही तारीख निधि के बारे में अब तक आतिमा यथावत् बनी हुई हैं। अतः इस छाँ मे लेख में इस एतिहासिक युड की सहा तिधि तारीख निश्चित करन का प्रयत्न किया गया है कि इस तबध में जाग काई शका-समाधान का स्थान ही नहीं रह जाव।

पश्चात्कालीन अनेक इतिहासकारा न जो विभिन्न तिथि-ताराख दा है व इतिहासकारा व काल क्रमानुसार इस प्रकार है—

- (१) कवि रणछोड भट्ट के एतिहासिक काव्य अमर काव्य (ईसा की १७ वी मनी का उज्जराड) में श्लोक सं० ६५ के अनुसार "अण्ड

शुक्ला ७, १६३२ वि० (श्रावणादि) को यह युद्ध हुआ था। इस वष में दो ज्येष्ठ मास हुए थे, यदि उक्त तिथि द्वितीय ज्येष्ठ मास की मान ली जावे तो उस दिन जून ३ १५७६ ई० तारीख थी। (महाराणा प्रताप स्मृति-ग्रंथ, द्वितीय खण्ड, पृ० ३५)।

(२) राजस्थान के इतिहासकार टाट न (राजस्थान०, माक्सफड स०, १ पृ० ३९६) इस युद्ध की तिथि श्रावण शुक्ला ७ १६३२ वि० (तदनुसार बुधवार, अगस्त १ १५७६ ई०) दी है।

(३) बाकीदास न भी इस युद्ध की तिथि श्रावण वदि ७, १६३२ वि० ला है जिसके अनुसार उस दिन जुलाई १८, १५७६ ई० होती है। (बाकीदास की ट्यात पृ० ९२ क्र० १०२६)।

(४) श्यामलदास ने बीर बिनाद (२ पृ० १४१) में द्वितीय ज्येष्ठ सुदि २ १६३३ वि० (मई ३० १५७६ ई०) को यह युद्ध होना लिखा है। जिस आधार पर यह तिथि दी है इसका कोई संकेत श्यामलदास न नहीं किया है।

(५) डा० गोपीनाथ शर्मा ने अपने ग्रंथ 'मवाह एण्ड मुगल एम्परा' (पृ० ९७) में अलग ही तारीख जून २१ १५७६ ई० दी है। जिस प्रमाण के आधार पर उन्होंने यह तारीख मान्य की है इसका संकेत भी नहीं दिया है। यही तारीख आराम शर्मा ने अपनी पुस्तक 'महाराणा प्रताप (पृ० ६८) में भी दी है। किन्तु उसमें भी आधार का कोई उल्लेख नहीं है।

उधर सभकालीन फारसी इतिहासकारों में निजामुद्दीन ने अपने ग्रंथ 'सबकनामा' में इस युद्ध की तारीख या माह तक का कोई उल्लेख नहीं किया है। मुल्ला बदायूनी ने स्वयं इस युद्ध में भाग लिया, परन्तु अपने इतिहास ग्रंथ में उसमें भी इस युद्ध की कोई निश्चित तारीख नहीं देकर बड़े-छोटे से केवल सन् ९८४ हि० व. गिरी उल्लेख के पूर्वादि में उसका हान का उल्लेख किया है। (मुत्तबुत-तवारिख अ० अ २ पृ० २३६) बदायूनी के इसी उल्लेख के आधार पर ही डा० गोरीअकर हागवर्क

उदयपुर राज्य के इतिहास' (१, पृ० ४३३) में इस युद्ध का काल मोटे तौर पर केवल द्वितीय ज्येष्ठ सुदि १६३३ वि० (जून, १५७६ ई०) दिया है ।

परंतु राजकीय कागज-पत्रों तथा समकालीन घटनाओं के व्योरोधादि के आधार पर समकालीन इतिहासकार अबुल फजल ने अपने राजकीय इतिहास ग्रंथ 'अकबरनामा' (अ० अ० ३ पृ० २४५) में इस युद्ध की तारीख अमरदाद ७, इलाही माह तीर इलाही सन् २१, (तदनुसार रवि उल्ल-अब्बल २०, १८४ हि०=आषाढ बदि ७ १६३३ ई०=सामवार जून १८, १५७६ ई०) दी है । अपने इस इतिहास ग्रंथ में उसने मेवाड़ पर इस मुगल आक्रमण सबंधी जो व्योरेवार विवरण दिया है उसमें अन्यत्र भी स्थान-स्थान पर और भी निश्चित तारीखें दी हैं जिनसे उम घटनाक्रम में ही दी गई इस तारीख की उपेक्षा नहीं की जा सकती है । हल्दीघाटी के युद्ध में मुगल सेना की विजय सूचना ता० माह १२ इलाही महीना तीर इलाही सन् २१ (तदनुसार शनिवार जून २३, १५७६ ई०) को अकबर के पाम फतेहपुर सीकरी में मिल गई थी ।

आधुनिक काल के गणमान्य इतिहासकार सर यदुनाथ सरकार (मिलिट्री हिस्ट्री आफ इण्डिया पृ० ७७) ने अबुल फजल द्वारा दी गई इसी तारीख को मान्य किया है । उसी प्रकार डॉ० रघुबीरसिंह (महाराणा प्रताप पृ० २२, २६) डा० आशीषादीलाल श्रीवास्तव (अकबर की फ्रेट, १ पृ० २०६ ७) डा० राजीव नयन प्रसाद (राजा भानसिंह ऑफ आम्बेर पृ० ४५) आदि अन्य प्रमुख इतिहासकारों ने भी अबुल फजल द्वारा दी गई तारीख को ही मान्य किया है ।

अतः इस सन्दर्भ में यह उल्लेख भी कर देना अव्यावश्यक है कि ईसाई कैथेड्रल के संशोधन का निणय मार्च १५८२ ई० में ही लिया गया था और उस अक्टूबर ५ १५८२ ई० से ही क्रियावित्त किया गया था जब उस दिन का मनोदित कैथेड्रल के अनुसार अक्टूबर १५, १५८२ ई० घोषित किया गया । या हल्दीघाटी के युद्ध की सहा र्गमयी तारीख निर्धारित करने के

सदम म बाद म सशोधित किये गय ईसाई कैलेण्डर की कोई बात उठाई भा नही जा सकती है ।

ऐसी स्थिति मे समकालीन प्रामाणिक इतिहासकार अबुल फजल द्वारा दी गई इस तारीख को ही स्वीकार कर सोमवार, जून १८ १५७६ ई० (भाषाढ कृष्ण ७, १६३३ वि०) ही इस युद्ध की सही-तिथि तारीख मान्य की जानी चाहिये ।

---



## विशिष्ट आधार ग्रंथ और सकेत परिचय

- १ अ० ना० (अ० अ०)—अबुल फजल कृत 'अकबरनामा' का बेवरिज-कृत अंग्रेजी अनुवाद भाग १ - ३ (बिंद० इण्टिका) ।
- २ ओभा० उदयपुर०—गौरीशंकर हीराचंद ओभा कृत उदयपुर राज्य का इतिहास भाग १ २ ।
- ३ ओभा० प्रताप०—गौरीशंकर हीराचंद ओभा कृत महाराणा प्रतापसिंह ।
- ४ ओभा० बीकानर०—गौरीशंकर हीराचंद ओभा कृत बीकानर का राज्य इतिहास भाग १ - २ ।
- ५ क्याम खा रासा—मुस्लिम कवि जान रचित क्याम खा रामा डा० दशरथ शर्मा अजरुज्जद नाहटा और भवग्लाल नाहटा द्वारा संपादित राजस्थान पुरातत्व मंदिर १९५३ ।

- ६ खजाइनुल फतूह—अमर खुमरू कृत 'खजाइनुल-फतूह' का मुहम्मद हवीज कृत अंग्रेजी अनुवाद ।
- ७ जाधपुर राज्य का ख्यात०—जोधपुर राज्य की ख्यात, भाग १ - ४ ।  
(हस्तलिखित प्रति श्री रघुवीर लायव्हेरी सीतामऊ) ।
- ८ गड राजस्थान०—जेम्स टाड कृत "एनल्ज एण्ड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान भाग १ - ३ आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ।
- ९ तबक़ात० (अ० ५०)—निजामुद्दीन कृत 'तबक़ान-इ-अक़बरी का डे कृत अंग्रेजी अनुवाद, भाग २ ।
- १० दरी०—मुंशी देवीप्रसाद ।
- ११ नगसी०—मुहणत नगसी की ख्यात भाग १ - २ नागरी प्रचारणी सभा वाराणसी ।
- १२ नगसी० (प्रतिष्ठान)—मुहना नगसी की ख्यात भाग १ - ४ ।  
राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान प्रकाशन ।
- १३ परगना०—मारवाड रा परगना की विगत' भाग १ - ३ । राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान प्रकाशन ।
- १४ बदायूनी० (अ० अ०)—अल-बदायूनी कृत मुस्तुबुसुत तवारीख का नौ कृत अंग्रेजी अनुवाद भाग २ (बि० इण्डिका) ।
- १५ बाबरनामा—बाबरनामा बबरिज कृत अंग्रेजी अनुवाद भाग १ - २ ।
- १६ बाकादाम की ख्यात—प० नरसिंहनाथ स्वामी द्वारा मपादित बांसी-नाम की ख्यात राजस्थान पुगतत्वावेपण मंदिर १०५६ ।
- १७ महाराणा—ग० रघुवीरसिंह कृत महाराणा प्रताप ।
- १८ महाराणा प्रताप स्मृति ग्रंथ—डॉ० लवीराम पालीवाल द्वारा मम्पादिह महाराणा प्रताप स्मृति ग्रंथ जेदपुर, म० १९६९ ।
- १९ मारात न मिकन्गी—मोगल इ मिकन्गी रा फज्जु-नाह बुत्तु-नाह फरीन कृत अंग्रेजी अनुवाद ।

- २० राज प्रशस्ति—रणछाड भट्ट कृत “राज प्रशस्ति महाकाव्य” ।  
 २१ वश भास्कर—‘वश भास्कर’ मूलमल मिश्रण कृत, भाग १ - ४ ।  
 २२ वशावली—जयपुर रिवाडस (हिन्दी) भाग ७ । (श्री रघुबीर लायनरी सीतामऊ प्रतिलिपि) ।  
 २३ वीर०—शिवराजा श्यामलदास कृत ‘वीर विनाद’ १—२ ।  
 २४ स०—सम्पादक ।
-

## शुद्धि पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	८	आर	और
७	१०	अप्रसन्नता	अप्रसन्नता
१३ पा० टि०	२	बदशाह	बादशाह
१५	१३	बात की	बात को
१६	१	आगे जा	आगे जो
२०	२५	भूपतराय का	भूपतराय को
२२	८	जब ता	जब तो
२८	४	हमला के	हमला को
३२	१३	सानगरो	सोनगरो
३५	१४	जब वह	जब वह
३७	२२	सिकदरी	सिकदरी
४५	१४	बदी १०१	बदी १० <sup>१</sup>
५१	२०	लेकर	लेकर
६२	५	अमरसिंह का	अमरसिंह का
६७	११	माघासिंह	माघोसिंह
६७ पा० टि०	१	हाथी	हाथो
६९	१७	खूब	खूब
८१ पा० टि०	२	दस्तमखा १२	दस्तमखा
		१५७७ ई०	सूत्र १२, १५७७ ई०
८५	१६	का रण	कारण
८९	८	मैदान म)	मैदान म
९१	१२	हाने	हान
९४	१२	का	का
११०	२४	मौमम	मौमम

१६४

११३		११-१२	'कुछ समय बाद अकबर बादशाह	कुछ समय बाद अकबर की सेना की महाराणा पर चढ़ा लाया लेकिन उपयुक्त घटना अकबर बादशाह
११३		२३	पुल	पुन
१२६	पा० टि०	२	हल्दीघाटा	हल्दीघाटी
१२९		१५	बोलिया	बालिया बालती

## नगोहरसिंह राणावत

(जन्म १९४९ ई०) सापने उदयपुर विष्णुविद्यालय उदयपुर में १०७१ ई० में १००० प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। तबमान में धारा श्रान्तनागर जाघ मस्थान, मोनामऊ में वायरा है। आपकी मुगलखानीन भान्न गीर रावस्थान इतिहास में पति विनाम मति है।

आ माहर्गमिह न १०७१ ई० में 'जाघपुर' स्मृत की बनी' मृत पति के सम्मान में महाराज कुमार गी० गुरुगमिह का नाम बटाया था। इससे अतिरिक्त अभियन्त राउमिन आप हिन्दुस्तान निज, नई दिल्ली के प्रोजेक्ट में 'जाघपुर' राज्य का गया, भाग १ (प्रारम्भ से १९७८ ई०) का सम्मान भी दिया था। आपका प्रमुख प्रशासित प्र ४ है —

- १ मन्तपुर महाराजा गवाहगमिह गार
- २ गान्धहा के हिन्दू मनमन्तर
- मृ गी श्रीप्रसाद का 'गान्धहा गामा'